ओं नमो विघ्नहर्त्रे गणेशाय

भूमिका।

यह यंत्रकोष नामक ग्रंथ प्रकाशित हुवा है इसमें
प्राचीन और इस समय मों वर्तमान भारतवर्ष के इसी
तरहसे और और देशों के संगीतयंत्र समूह का विवर
ण लिखा गया है। सो यह ग्रंथ प्रधानसे मूल और [का पुरातन और अर्वाचीन के]
परिशिष्ट, इन दोनो भागों कर विभक्त भया है।
मूलमे केवल भारतवर्षीय [भारत खंडकी] यंत्रावलीका विस्तारित [विस्तारपूर्वक]
इतिहास है और परिशिष्टमे और और देशोके
यंत्रोंका विवरण संक्षेपसे कियागया है, तिनकेम
ध्यमे भारतवर्षका भी किसी किसी यंत्रका उल्लेख है। सो भारत [भी]
वर्षके सहित और और देशोके यंत्रकी उत्पत्ति उसका अवय
व, और नाम इत्यादि अनेक प्रकारके संस्कृत फारसी
और अंगरेजी ग्रंथकी सहायतासें परस्पर मिलायके उन्ह
समका संक्षिप्त इतिहास अर्थात् पूर्ववृत्तांत उन्ह समका इसमें
संग्रह किया है किन्तु यह बात मे कहजाते कि यह कोषह [अतिहिकीया]
मारे भाग्यवशासें यथार्थ यंत्र रूप जो महाधन है तिसकर्के
परिपूरित है अथवा केवल यंत्रकोश यह वृथा नाममात्र
हि लोकोंमे प्रसिद्ध भया है, तिसकों पढ़ने वाले महात्मा
विचारकर देखेंगे। पूर्वकमे विज्ञ प्रिकर्ताओं से [किंकारक]
सो परिशेषमे कृतज्ञताके सहित स्वीकार करेंगे कि
क्यों जो मेरे पूज्यपाद संगीताचार्य्य श्रीक्षेत्रमोह
न गोस्वामी महाशय इसग्रंथके अध्ययनसमयमो [जिन्होने]
हमारी यथेष्ट सहायता किया था।

(१) ततानद्धं च सुषिरं घन मिति चतुर्विधम्। ततं वीणादिकं वाद्य मानद्धं मुरजादिकं वंश्यादिकंतु सुषिरं कांस्यतालादिकं घनं इति दामोदरे ६ यंत्रकोष।

एहि यंत्रकोष विस्तीर्ण भारतवर्षमे पूर्वकालसें लेकर नाना विधवाद्य-यंत्रका प्रचलन थीं, अपर कतक गुणि अर्थात फेर कितना कविर पीछें, संगीत कुतूहली महात्मापुरु षोंकेउत्साहसें अन प्रर्यंत स्पष्ट कियेहैं। सोहि इस्थानके लोकोंने एहि यंत्र समूहकों प्रधान चारभागों विभक्त कियेहैं (१) यथा- तत अर्थात जेढे संपूर्णयंत्र तन्त वा तारसंयोगसें बजदेहैं, जिसप्रकार वीणा, सितार, रवाव, सरोद, देतेड़ा (२) सारङ्गी, रंजनी, सारिन्दा, तम्बूरा, मीनसारङ्गी, कानून, सुरशृङ्गार, मोचङ्ग, एकतारा, अलाबूसारंगी, आनन्दलहरी, स्वरवीणा, गोपीयंत्र, एसराज इत्यादि यंत्रहैं। सुषिर अर्थात

जाई जोएसे यंत्र वायुद्वारा बजतेहैं, यथा पोरव, वंशी वेणु वा वंशरी, डुक्का, अलगोजा, गोमुख अर्थात नारसिंगा, लय- बाँसी, रोसन चौकी, सानेयी वा स रनाई शृंग, रणशृंग, तुरि, कलस तवुडि इत्यादिहैं पहिलें भारतवर्षमे नागवद्ध नामक एक प्रकारका

नामकका पीछेंसे किया होयाथा। सुषिर यंत्रथा, स्कटीस व्यागपाईपं तिसका अनुक = व्या उक्तवदेले था तथा आनद्ध अथवा वितत अर्थात जोएसे संपू र्णयंत्र चर्माच्छादित अर्थात चर्मके साथ मढाइक केंबजाई देहैं, जिसतरह मृदंग, खोल, तवला, ढोलक, ढोल, मर्दल, खंजनी, घुड्डुक, डम्फ, डमरू

८ डुडका, ढक्का, जगझम्प, चर्चरी, दारा, कोड़ा, नागरा, (१) टिकारा, धामसा, खोरदक इत्यादि हैं। जौला घन अर्थात लोह वा कांस्य इत्यादिधातुनिर्मित

(२) इसीयंत्रको आशामी भाषामे खटीताली कहितेहैं। ८।

यंत्रसमूह है जैसें घंटा, झाँझर, काँसर, काँसि
करताली, खरताल, मन्दिरा, सप्तशराव वा इन्हकेविना
जलतरङ्ग, घड़ी, रामखरताल प्रभृति, एतद्व्य
तीत भारतवर्षमे औरभी बहुत प्रकारके यंत्रथे
सो संपूर्ण, इससमयमी उन्हका बड़ा प्रचलतनहीं है का ५

कथनकिये औरउससे चार प्रकारके यंत्रहै,
तिन्हकेमध्यमे ततयंत्र दोभागककै विभक्तहैं

यथा-क्याजैसें सभ्य, और ग्राम्य, औरतिससेभि
न्न तिन्न प्रकारकेयंत्र है सोउन्हमेभी एकएकके ति
न्नातिन्न भागविभक्तकियेगयेहैं, यथा- सभ्य
यंत्र (२) बाहिर्द्वारिकंयंत्र (३) इसीतरह ग्राम्य
यंत्र (४) सभामे जो एसे संपूर्ण यंत्र बाजते हैं सर्वदा
सो उन्हसभका नाम सभ्ययंत्रहै। सभ्ययंत्र और
दोभागोंककै विभक्तहैं यथा-स्वतःसिद्ध (५) और
[illegible] अनुगतसिद्ध, (६) जो सकलयंत्र गीत
अथवा [illegible] न्यकोई यंत्रके अनुगत होकर बाजे, न स्वरा
[illegible] स्वतःसिद्धयंत्र, यथा- बीणा, त्रितंत्री वालि तिस्कानाम
तार, रबाब, सरोद, रंजनी, कानून, सुरतगङ्ग,

---

(१) नगरमे जो बाजा बजाते हैं उस्का नाम नागरा है

(२)

(३)

(४)

(५)

(६)

स्वरवीणा, सुरसृङ्गार, एहि सबदाये (सभ) तार यंत्रके हि स्वतःसिद्ध सभ्य यंत्रके मध्यमे परिगणना किये गये हैं। शुषिर यंत्रके मध्यमे एतद्देशमे (इस देशमे) वंशी के विना और किसी प्रकारका [illegible] स्वतःसिद्ध सभ्य यंत्रका [illegible] वडा व्यवहार नहीं है। कहे हुए यंत्र समूहके मध्यमे जो जो लेय यंत्रका बहुत प्रचार है सोई क्रमसें विवरण किया जावेगा।

卐

प्रथम अध्याय।

महती वीणा (१)।

एहयंत्र अति प्राचीन और सभ्य यंत्रोमै प्रधान, महर्षि नारद जीका किया हुया [illegible] एहि प्रथम स्रष्ट हुये। संस्कृत शास्त्रका [कारोंने किया है] एहि यंत्र मनुष्य देहके अनुक (सभवीणोंके)

---

(१) प्राचीन-संगीत-शास्त्र-कारणवालोंने तार यंत्रमात्रका हि नाम निर्माण किया सामान्यसें "वीणा" (वीणा) एहि व्यापक अर्थ में निर्देश करके पीछेंसे विशेष विशेष आकार और प्रकृतिके अनुसार महती वीणा, रुद्रवीणा, सारस्वत वीणा, रंजनी वीणा, कच्छपी वीणा, और स्वर वीणा प्रभृति विशेष विशेष व्यापक नाम और और किया गया है। किन्तु संप्रति अर्थात अब हमलोक महती वीणाका विषय विवृत्त (वर्णन) करनेमे प्रवृत्त भये हैं, सो सुतरां इस स्थलमे वीणा-संबंधमें जो कुछ है सो बो [illegible] जायगा सो कुछ हलि पाठकगण उसके समर्थ्यकों महती वीणा संबंधीय संबंधवाला।

सभवीणोंसे वडी वीणा २ महती है

इत्यादि

क्या छोटी छोटी ५

तहै; मनुष्य देहमे जैसें एकमेरुदंड होताहै, इसमैभी एक
मेरुदंडके परिवर्त्तनमे अर्थात् उसके बदले एक बाँसका दं
ड होताहै। मनुष्य देहमे तीन स्वर स्थानके मध्यमे ना
भी और मस्तक एहदोनोंही जिसतरह प्रधान स्वरस्थान
हैं; इसमें भी तदनुयायी वंशदंडके दोनो पार्श्वोंमे दोनो — तिसके सदृश
अलाबू अर्थात् तूँबे जोडेहुए होते हैं। सो देहके परिमाण
अनुरूपमे नाभिस्थानसे लेकर तार स्थान पर्य्यंत नवगुणि
त परिमित स्वरस्थान रखऐके वास्ते संचराचर विधि है। — सामान्यविधिहै
जो वीणाहै
सो नारद निर्मित, इसी जातीकी वीणाकों महती वीणा
बोलाजाताहै। सो इसी वीणामें सचराचर तीन लोहकी — सामान्य
और चार पित्तलकियाँ सब सात तारों बाँधियाँ होतियाँ हैं। — बजाऊनेवाले

जाणतेहैं — जाने। एहि यंत्र [illegible] भारतवर्षके सब प्रकारके वाद्य यंत्रकी अपेक्षाकरकें
अधिकतर प्राधान्य लाभ करलेऊ क्योंकि इस यंत्रके बजावनेवा
लाकोई विरलाही मिलताहै, इसमें एह जानीदाहै कि इसके बजाव
नेकी क्रिया कठिन है सो इसमे अति परिश्रम साध्य रही कारणहै;
विलक्षण — तज्जन्यही संगीत कुतूहली योंके मध्यमे अग्रसर अर्थात् आगे
चलने कों कोई नहीं समर्थ होसकता। सो विशेषकरकें उक्तयंत्र — वीणा
बजानेके अभ्यासमे जिसप्रकार परिश्रम करनेकी आवश्य
कताहै, तिसकी अपेक्षाकरकें थोड़े परिश्रमसें कच्छपीवीणा
बजानेमे बडी चतुराई आजातीहै और कच्छपी वीणासेंभी प्रायः
सब प्रकारकि ये वीणाके बाजनेकी विधि प्रतीत होजातीहै
सो वीणा वादन इतना दुरूह व्यापारहै जो, एह विस्तीर्ण भारत
भूमिमे संगीतकी इतनी अधिक चर्चा होनेभी हमारी नि
म्नलिखित कितनेक व्यक्ति मात्र वीणा बजाउनेवालेंका
जाते — नाम अवगत अर्थात् जानेगयेहैं, यथा- जीवन सा,
निर्मल सा, महम्मद आलि, नसिर आहम्मद, सज्जू खाँ,
गोलाप खाँ, गोलाम रसूल, करिम खाँ उस्तादजी

३

(१) एहि सात ही तार तरजसें बुझाइवे के वास्ते एक से करके सात पर्य्यन्त चिह्नसें चिह्नितकिया होयाहे, यथा—

3

लक्ष्मीप्रसादमिश्र, फिरजखाँ, न्हवतखाँ, प्रभृति (इहसभ वर्त्तमान नहीहे) गोलामहुसेन खाँ, मेहदिहुसेनखाँ, ओयादिसखाँ इत्यादि एहि कितनेक व्यक्ति मात्र इससमयमेंभी वर्त्तमानहें।) परिशेषमे वक्तव्य जो, पूर्वमे अर्थात् पहिलें कहिचुके हें उस्तादजी लक्ष्मीप्रसादमिश्र महाशयके निकट वीणाके अनेक विषयजाने हुएहें, सो अब बाबू अभयाचरण मल्लिकके निकटभीउसी वीणाके संबंधी कोई कोई विषय अवगत भयाहे, मत्तीका लक्षण एहहे; यथा—

दंडं वंशामयं कान्तं कर्तुलं तुम्बयुग्मकं। नवखण्डस्य स्थानं चात्रयत्नेनकारयेत्॥ तस्मिन्दण्डे सप्तसंख्या मोटनी सन्निवेशयेत्। दक्षिणे विन्यसेदन्यत् तन्त्रीद्वयं क्रमात्॥
दैर्घ्ये वज्रमयी कार्य्या मोटनी दंडरंजिका।
तावच्च भ्रामयेत् पूर्वं मोटनीं च शनैः शनैः॥
अस्यास्त्वष्टादशा प्रोक्ताः सारिकाः पूर्वसूरिभिः। एतास्तु तारवादिन्यास्तिष्ठन्ति पादिकोपरि॥ मदनस्य च सिक्थस्य योगेन दृढीकृताः। महत्या नाम वीणाया एतल्लक्षणमुच्यते॥ इति कोहलीये॥

(१) एसियाटिक् रिसार्चेस् प्रथम वालम पंचमप्रकरणके २९६ पृष्ठामे सार् उइ-लियम् जोन्स महोदय जोहैं तिसकी वीणा विषयक प्रस्ताव मे किहाहै कि जो ज्ञा प्रसिद्ध मुसलमान वैणिक हुए पियार खाँ और जीवनसाह उन्होंकी वीणामें दो लोहेकीयाँ और पाँच पित्तलकियों तारोंका व्यवहार करते थे परन्तु अबके लोक वीणाके बजावने वाले तीन लोहेकी और चारपित्तलकियों तारों व्यवहार कर्ते हें।

अर्थात वीणाके बजाने वाले दोनों ४

ऊपर लिखाहुआ एकचिह्नविशिष्ट लोहकी तार ३
दारा सप्तकके मध्यम करके बाँधाजाताहै, और इसी
कोंही नायकी तारबोलतेहैं। साइउइलियम्
जोन्समहोदय इसी तारकों पित्तल तार दिखाइ
केबांधाहै। बरंच सो अच्छा कुतूहलीपाठक
एसियाटिक् रिसार्चेस् प्रथमवाल्युम २२६ की
पृष्टमें "और" चिह्नविशिष्ट तारकेप्रति दे
खलेवें इसीकों हमारेलोक इससमयकेव्यवह
रगत नायकीतारकहतेहैं तिसनेभी इसीकों नायकीतार
किहाहै सो अच्छा, किन्तु हमलोकोंइससमयकीप्रचलि
तरीतिके सहित धातुगतभेद देखाजाताहै। वास्तवविचा
रकरकेदेखनेसें मूर्च्छनाऔर गमकादि पित्तल तारमें
भलीप्रकार निःसारण कियागयाहै, क्रमसें एहितार
वृद्धिप्राप्तहोके स्वरभ्रष्ट कर्तीहै और छिन्नहोजातीहै।
हमलोक इसीतारकों मध्यम करके बाहूतेहैं, और तिसने
स्वरग्रामविभिन्नताकरके उसीकों अन्यविधि नियमसें
बाँधनेके समय विधि कियाथा, सो इसका और होरहोर तारबं
धनके विषयका विशेषविवरण पीछेसें लिखित होवेगा।

वोलके
निर्दिष्ट
कियाहै

कों

एहि चिह्न विशिष्ट पित्तलकी तार३ दाराका षड्ज
करके बाँधनाही प्रसिद्धहै, काप्तिनमहोदयके कहीहु
ईपुस्तकमें एहि दूसरी तारहै "एस्" चिह्नसें चिह्नि
त कियागयाहै, हमलोकोंके सहित इसीतारका
धातुगत भेद कछुभी नहीहै, परन्तु ग्राम भेदकल्पनाज

उक्त पुस्त
कके

धैवतसुरबंधनगतभेदलक्षित होताहै। भीनविद्र
विशिष्ट तारभी चिन्हलक्षाहोहै, एहितार अवलंबित नेका ३
उदाराका निम्नसप्तकको पंचमकर बाँधके व्यवहार
निमित्त ४ होताहै और उसी तारजन्य उसका स्वरलिपि अतिरिक्त रे
खामे अर्थात् (उदारा सप्तककी अपेक्षाकके और भी
निम्नसप्तक स्वर लिपि कियागयाहै, हमलोकोंके सं
गीतमे अतिशयकके प्रयोजनवाली उदारा, मुदारा औरतारा
निमित्त
एहि तीनही सप्तकके स्वरलिपिजन्य जोऐसी तीन स
के विना
रलरेखा निर्दिष्ट है एही तीन रेखाव्यतीत अर्थात् छो
डकर और एक अतिरिक्तरेखा व्यवहार करतेहै, जैसे
उपरमे जिसका उदाहरण लिखित होगयाहै) और निम्नसप्त
कोनिमित्त कस्थापनजन्य एहि सुरके मस्तकमे (नि) दियाहोताहै।
फलतो हिन्दु संगीतमे उदारा, मुदारा और तारा एहीतीन
सप्तक व्यतीत निम्न क्या-नीचे सप्तक केवलस्वरके सह केविना
योग व्यतीत क्या विना अन्य विषयमे प्राय व्यवहृत होतेकहीं
नहिं देखा। साइउइलियम् जोन्स महोदय एहि चिन्हलकी
तारमेहि ("टी") चिन्हसे चिन्हित कियागयाहै और ("ए")
(१) अर्थात् धैवतको षड्ज शब्दके समान अर्थबोधककर्के
उक्ता तारको उसका धैवतग्रामको उदारा सप्तकके पंचममे
बाँधाहुवाहै, सो सुमरो तिसके सहित इसमेभी ग्राम भेद
जनितसुरभेद लक्षित होताहै;) हमलोकोका उदारास
प्तकसे निम्न लिखितसप्तकको पंचमकर्के बाँधारहिताहै। के
सोभी उसके सानतारका उदारा सप्तकके पंचममे बाँधाहु

---

(१) "ए" के षड्जके समान अर्थबोधक समझातहि
जाता, धैवत और "ए" एहदोताहि अर्थबोधकहै सो अच्छा,
सो इसकाकारण पीछेसे विवरण होवेगा, इसीकारणवश
में महोदय साइउइलियम् जोन्सके कथित ग्राम भेदक
त्पनाजनित तारबंधनगतसुर भेद लक्षित होताहै।

आहै, कोईक इसी तार बंधनसंबंधमे जिसके सहित हम लोकोंकी इस समयकी प्रचलित रीतिकों सप्तक गत भेद भी रहितहोताहै। चार और पाँच चिन्ह विशिष्ट पित्तल की दोनो तार उदाराका निम्नसप्तकको षड्जकके बंधनके समयकी रीति है। छे इसीतरह सात चिन्ह वि
ने शिष्ट तारदो लोहेकी बनाईहुई, उक्त दोनोंका मध्यमे पहिली तारा का मुदारा सप्तकके षड्ज और परली तारा [illegible] सप्तककों षड्जकके बांधनेका नियमहै।
सार् उइलियम जोन्स महोदय चार चिन्ह विशिष्ट पित्तलकी तारकों «इउ» और चार चिन्ह विशिष्ट पित्तल की तारको «भि» एहि दोनेके चिन्हसें चिन्हित कियाहै। सो कहेकुए कारण वशातें एहि दोनो तारबंधनकोंभी इस देशकी प्रचलित बंधनरीतिके सहित तिसके मतका अनैक्य है अर्थात् एकमत नहिभया। ७ एवं सात चिन्ह विशिष्ट दोनो तारोंकों जिसने लोहतार वैलकर निर्दिष्ट करिके पहिलीतारकों «पि» एवं दूसरीमे «किउ» एहि दोई चिन्हसें चिन्हित कियागयाहै, परन्तु उक्त महोदय ग्राम भेद बंधन कल्पना करनेसेंही उक्त तारद्वय अन्य विपरीतिसे वो भी होई रहिती है। ८ एवं सात चिन्ह विशिष्ट लोहेकी दोनो तारकों संस्कृत संगीत ग्रंथकार जो हैं
तथा स्पा न्यलोक सो दुजतंत्रिका कहितेहैं, सचराचरें जो पारस्य भाषामे चिकारी करके प्रसिद्ध है बोलतेहैं। फलतः एकचिन्ह वि
और २२ शिष्ट लोह निर्मित एवं दो चिन्ह विशिष्ट पित्तल निर्मित तार के विना अतीत अर्थात् तारके विना अपर क्या और पाँच तार रकही यों बजाउले मात्रही जैसी कभी समय समयमे व्यवहृत हो तिसकं रहितीयां हैं।

वंशदंडके ऊपरमे स्वरस्थानमो ऊनविंशति सेलेकर
त्रयोविंशति पर्य्यंत हस्तपातादिया निर्म्मित सारिका नु
मोम करके जमाई होई रहतीहैं। इसी यंत्रकी सारिका-
विन्यास विकृत स्वरग्रामानुयायिक, सचराचर सामान्य लोक
जिस प्रकार स्वरग्रामप्रणाली को हिंदिभाषामे अचल
ठाट बोलतेहै इसीप्रकार इउरूप देशके जिसको
क्रोमेटिक स्केल कहितेहैं। सारिका विन्यास संबंधसें
सार्उइलीयम् जोन्स महोदयके सहित हमलोकके म
तका ऐक्यहै। वीणायंत्र स्कंधमे राखकर इसीप्रकार वंदवंद के ऊपर
वामहाथकी तर्ज्जनी ओर मध्यमांगुली सारिका सारि
कामे संचालन करतीयां दक्षिण हस्तकी तर्जनी ओर
मध्यमांगुलीद्वारा वजाउतेहै, एहि दोनो अंगुलीहि
अंगुलीत्र अर्थात् "मिजराप" द्वारा वजाउनके
समयमे आवरण राखनेकी रीतिहै, दक्षिण हस्त
की कनिष्ठांगुली स्वरयोग देनेके वास्ते व्यवहृत हो
तीहै। ओर पाँच चिह्न विशिष्ट तारभी सुरयोग देनेके
वास्ते वामहस्तकी कनिष्ठिकांगुलीयोगसें कभी कभी के
ध्वनित होतीहै। एही यंत्रमे अनामिका अंगुलीका
प्रयोजन प्राय देखा नहिं जाताहे। निम्नलिखित प्रथम
नियममे सार्द्धद्विसप्तक मात्र वीणासे प्रतिपन्न सिद्ध
होताहे। यथा—

उन्नीस

सार् उइलियम् जोन्स महोदय ऊनविंशति थान सारिका निर्द्दिष्ट कियाहै, तिसके मतानुयायी वीणामे उदारा सप्तकके स्वरग्राम वारांहैं विकृतस्वरोत्पादि का सारिकाद्वारा मंडितहै। इस्के सहित हमलोकौंके इस समय प्रस्तावित वीणाकाभी उदारा-ग्रामका ऐक्य देखाजाताहै; उदारा सप्तकमे कोमल निषाद परित्यागमे उक्तजो महात्मा तिसने एकादश सारिका दियाहैं, किन्तु हमलोकोंकी कल्पित वीणाके स्वरग्राममे उदाराग्रामका कोमल निषाद अपरित्यक्तरूपसे अर्थात् उस्के त्यागने के विना वारां १२ सारिका दीयाँहै, सो सुतरां एहि सप्तक का एक सारिका हमलोकोंकी अपेक्षाकर्के तिन्हकी वीणामे न्यूनहै, तिसने तारा सप्तक के षड्ज और प्रकृत ऋषभ मात्र उल्लेखकर्के शांतहोगया है, कोई तिसकी वीणामे सार्द्ध द्विसप्तक पर्यन्त पाया नहि जाता। हमारे लोकोंकी अपुनातनेप्र और ५

इससमेकी

चलित वीणामे तारासप्तकके स्वरग्राममे कोमल
ऋषभ, कोमलगांधार ओर प्रकृतगांधार एही
तीन सारिका ज्योन्समहोदयके वीणाकी सारिका
की अपेक्षा करके अधिकहे, सोई हेतु तात्कालिक
वीणामे मुदारा सप्तकका एक ओर तारासप्तकका तीन
सभमिलाकर चार सारिका एह होथ्या सो इससमय
के वीणाकी अपेक्षाकरके न्यून प्रतिपन्न हुया, फलतः
इसमे कोई कार्य्यगत विशेष हानि होइ नहिं सक
ती। ऊनविंशति थान सारिकावाली वीणामे मूर्छना
द्वारा होर अतिरिक्त सारिकाका आरोपनका कार्य्य
परिश्रम सेंविना अनायास सें, होसकताहे, सार् उइलियम् जोन्स संपादित
महोदयभी एह प्रतिपन्न कियाहे।
कप्तिन हईल सार् उइलियम् जोन्स महोदय सोपहिलें कहिचुके है
एसियाटिक् रिसार्चेस्के प्रथम वालममे जिसप्रका
र वीणा यंत्रकी तारबंधन प्रणाली लिपिबद्ध कियाहे
उसी प्रणालीके सहित हमारे मतकी अनेक विभिन्न
ता देखनेमे आउताहे, तिस्का कारण एहहे कि उक्त
महोदय स्वरग्रामके प्रथम स्वर षड्जको इटालीदेशके
"ला" अथवा इंराजि "ए" बोलकर निर्द्दिष्ट
कियागयाहे। वस्तुतः ग्राम आरम्भक षड्जके
सहित स्वरग्राम आरंभक इटालीय देशके "उट" अथवा
अंगरेजी "सि"र साद्दश्य लिखनेसें उक्तिसकेसहित
बोधहोताहे, हिन्दुसंगीत के विषयका अन्यतर ग्र
थकर्त्ता उइलार्ड साहित सार् उइलियम् जोन्स महो
दयका मत विरुद्धतासें हमलोकों के मतकेसहित
बरंबार विशेष ऐक्य देखाजाताहे, सो अंब्बा संगीत कुत्
हली महात्मालोक उइलार्ड साहिबके द्विटिज्
अन्द दि हिन्दु मिउजिक् ग्रेथमे २७ पृष्ठामे

देखें। और भी षड्ज के सहित "एर" ऐक्य करने
से, हिन्दुसंगीत-शास्त्र के अनुयायी श्रुतिगत विशेष
दोष स्पर्श मे। "ला" अथवा "(२)" यद्यपि चार
श्रुति विशिष्ट पूर्ण षड्ज होता है। (१) सुतरां
"ला" र परस्पर "थि" अर्थात् इंगरेजी "बि"
हमलोकों का ऋषभ होता है, और तिसका अव्य
वहित व्या-व्यवधान रहित पर स्वर "आट"
अर्थात् अंगरेजी "सि" और हमलोक का गांधार
होता है, संस्कृत संगीत ग्रंथकार [illegible] ऋषभ और जो है सो
गांधार के मध्यमे तीन श्रुति विशिष्ट पूर्ण स्वरस्थान
निर्णय करते हैं; किन्तु इटालीय "बि" और "चाट" देशका
अर्थात् इंगरेजी "बि" और "सि" इनके मध्यमे
जो परिमाण में स्थान है, सो इउरोपीय संस्कृत ग्रंथ देशके
कार [illegible] उसी को अर्द्ध स्वरस्थान बोलकर के प्रति
सिद्ध पन्न करते हैं तैसे होएसे चार श्रुति विशिष्ट षड्
ज को "ला" अर्थात् अंगरेजी "एर" सहित
एकार्थ बोधक करने से इटालीय "बि" अथवा देशके
इंगरेजी "बि" अर्थात् सार् उइलियम् जोन्स
महोदय (जिसको हमलोक के ऋषभ बोलकर
के स्थिर किया है), और "आट" अर्थात् इंग
जेठा रेजी "सि" एहि उक्त महोदय के मतमे हमलो
क का गांधार बोलकर के प्रतिपन्न भया है और और
इटालीय "बि" अथवा अर्द्ध स्वर स्थान विशि
ष्ट इंगरेजी "बि" के सारा [illegible] सार् उइलियम्
जोन्स महोदय के मतमे पूर्ण स्वरस्थान विशिष्ट
ऋषभ को एकार्थ प्रतिपादक करने से जे कितने
हर श्रुति दुष्ट होता है, तिसमे उइलार्ड साहिब के २९
पृष्ठामे श्रुति विवेक प्रणाली कुतूहली जो पाठ करो

(१) चार श्रुति विशिष्ट षड्ज का विषय उइलार्ड साहि
ब के ट्रिटिज अबाउट हिन्दु मिउजिक ग्रंथमो २९ पृष्ठामे

देखनेसें अनायाससें जाए सक्ते हैं। फलतः "अट्" अर्थात् अंगरेजी "सि" सें लेकर षड्जादिके आरंभ करनेसें हमलोकके मतमे श्रुतिगत और युक्तिगत कोई दोष स्पर्श नहिं होता, उड्लाई साहिबभी इसी विषयकी पोषकता कियाहै।

	पूर्णस्वर	पूर्णस्वर	अर्द्धस्वर	पूर्णस्वर	पूर्णस्वर	पूर्णस्वर	अर्द्धस्वर
	षड्ज	ऋषभ	गान्धार	मध्यम	पंचम	धैवत	निषाद
हि	षड्ज	ऋषभ	गान्धार	मध्यम	पंचम	धैवत	निषाद
इ	अट्	रि	मि	फा	सो	ला	षि
इं	सि	डि	इ	एफ	जि	ए	वि

इउरूपियों ने योयो स्वरमध्यस्थानकी पूर्णता और अर्द्धता नुसारसें वर्णना कियाहै जिसतरह ( ) डायटनिक स्केल सिद्धान्त कर्तेहैं, हमलोकके देशमेभी श्रुतिगत तद्रुपाधिक स्वरस्थानकी पूर्णता और अर्द्धता नुसारमे भी प्रकृतस्वरग्राम स्थापित कियागयाहै। और भी इसके प्रमाणस्वरूप कहिते हैं जो, पियानो यंत्रमे सन्निहित दोनो हि कृष्णसारिकाका व्यवधान रहित पूर्वमे जो श्वेतसारिका है, उसी श्वेतसारिकासें लेकर सि, डि, इ, एफ, जि, ए, वि, अथवा इटालीय अट्, रि, मि, फा, सो, ला, षि, इत्यादि सातही स्वरका क्रमान्वयसें नाम उल्लेख करिके अविच्छेदसें परसप्तकका "सि" अथवा "अट्" पर्य्यन्त गणना करजानेसें एकभी कृष्णसारिकाका आश्रय ना लेनेपर जिसतरह एकही अंगरेजी ( ) डायटनिक स्केल सुसंपादित कियाहै, तिसीतरह एह कथन कियागयाहै "सि" अथवा "अट्" नामक श्वेतसारिकासें लेकर यद्यपि क्या जेकर और हमलोकके षड्ज इत्यादि सात स्वर कथित सारिका सारिकामे नाम उच्चारण करताथा यथाक्रमसें परसप्तकको "सि" पर्य्यन्त गणना किया जाताहै, तैसें गणनेसें हमारेकोंभी प्रकृत स्वरग्राम

8

कुरमसारिकाके आश्रय व्यतीत विना श्रुतिउत्पत्ताभै
सुंदरतरह निष्पन्न होवेगा, किन्तु अन्यतर श्वेत
सारिका "ए" अथवा "अट्" सलेकर षड्जा
दिका नाम उल्लेखमै कुरमसारिकाके आश्रये
विना कथितजो परसप्तक तिस्को एपर्य्यंत गरण
नाकरलेसें संगीतकुन्तहली महोदय श्रवणकरें
हि जो प्रकृत स्वरग्राम श्रुतिका न्यूनाधिक्यजनित
श्रावणउत्ष अवश्यहि होवेगा। इटालीय "अट्"
अंगरेजी "सि" इसतरह हमलोकका षड्ज एहि
तीनहि एकार्थप्रतिपादक है तिस्का संशय नहीहे,
वस्तुतः इटालीय "ला" इंगरेजी "ए" और
हमलोकका धैवत कदाचित भी षड्जकाबोधक
नहीं।

साथ

और वीणाका स्वर अतीव मधुर और निरंतर सुण
नेयोग्य है, पियानो प्रभृति इउरोपीय यंत्रमे जो
सकलकार्य्य संपन्न होताहे, तिस्का आपिकभागहि
वीणामै निष्पादित होसकताहै, बरंच मूर्च्छना,
कुन्तन प्रभृति जितनेक संगीतोपयोगि उत्कट आकर
कार्य्य जो हैं सो एहि यंत्रमै अनायासतरह सहजमें
हि प्रतिपन्न होताहे, सोई समुदाय कार्य्य इउरोपी
य यंत्रमै अतीव दुःसाध्य है। वीणाका बाह्य पारि
पाट्य मधुरता और उत्कृष्टता संबंधमे उइलार्ड एवं सार्
उइलियम् जोन्स प्रभृति हिन्दु संगीततत्त्व महोदयगण अत्यु
त्कृष्ट पियानोके सहित तुल्यता स्थापन कर्ते हैं। इंगरे
जी संस्कृत अभिधानकर्त्ता मन्यिवर् उइलियमस साहिब
इउरोपीय "लायार यंत्र और वीणा एहि दोनो यंत्रको
एकजातीय बोलकर्के स्थिर सिद्धान्त कियागयाहे।
हमलोककी वीणामे जिसतरह सात तार बांधी होती
है प्राचीनग्रीक जातीय लायारयंत्रमे भी उसीतरहसा

देखाके।

तही तार बाँधी रहितीहै, ग्रीक और रुम देशका
पुरावृत्त कर्त्ता उइलियम् स्मिथ साहिब के कहेहुए
ग्रंथमै लिखाहै जो एसे, ग्रीकजातीहैं सो जिसवक्त देशीहैं ३
ए "लायार" एवं तिसजातीके और और यंत्रका विष
य किछुभी जानते नहिथे, तिनके पहिलेंभी आसिया
स्थ नाना देशमे और मिसर देशमे लायारजातीय
यंत्रका बहुतप्रचलनथा, किछ कालपीछेमे ग्री
क जातीयलोकी जोहैं सो लायारकी उत्पत्तिदर्श
नमे ग्रीसदेशमे प्रथम उसीका आनयन किया।
इसविषयकी पोषकता हकिन्स साहिब, बार्णिसाहिब
और काइलेबुजेल साहिबकृत संगीत ग्रंथमे बहुत
प्रमाण देखनेसे पायाजाताहै। फलतः यह वीणा इसका
अति प्राचीन और भारतवर्ष जोहै सो प्रथम
स्थान तिसमे और किछ संदेह नहीहै, परंतु
देशभेद अवयवभेद और नामभेद करके वह्नमा
न है इतना मात्र विशेष है। संस्कृत संगीत ग्रंथ
कार जोहैं सो नाना जातिके वीणाका नाम
लिपिबद्ध करतेहैं, तिन्हकेमध्यमे वल्लकी नामाए
क जातिका वीणा पहिले भारतवर्षमै प्रचलितथा,
मलियद उइलियम् साहिब तिस्को "हार्प"
बोलकरके निर्देशकियाथा। हार्प यंत्र ब्रह्मदे
शमे "घान्" और चीन देशमे "कीन" बोलके
व्यवहृतहै इजिप्ट देशमे वीणाको "बेन" बो
लकर व्यवहारकरतेहै। "वीणा" और "बेण" इन
दोनोंनमेंसे कितनेक अंशमे शब्दका ऐक्य देखा
जाताहै। "वल्लकी" और "हार्प" एक एक विपक्ष इसके बदले
यंत्र नहीहोता, वस्तुतः "हार्प" वल्लकीका अनुकृतयंत्र
है सोजाले इसविषयमें और कोई संदेह नहिं करसकते।

संख्या २।

कच्छपी वा
कछुया सेतार।

" हमलोकोंके देशमे कच्छपी नामक अपर एक विध वीणका वादन प्रचलन था, अव केजो लोक हैं सो तिसकों "कछुआ सेतार" बोल के व्यवहार कर्ते हिं। "सेतार" एहि शब्द पारसिक भाषा; खी: १२ शताब्दीमे पाठाण वंशमे राजा गयेसउद्दिन बुल्बानके राजत्वकालमे आमीर खसरु नामसे जो विख्यात कविप्रधान राजसभासदोंके मध्यमे पण्डित था तिसने कच्छपी, त्रितंत्री इत्यादि वीणकों सामान्यतः करके "सेतार" एहि आख्या प्रदान किया अर्थात् सितारनामकिया। वस्तुतः त्रितंत्री नामके सहित "सेतार" एहि संज्ञाकों अर्थगत कोई वैलक्षण्य लक्षित नाहिं होता, जिस कारण पारस्य भाषामे "से" शब्दसें तीनें जाणी जाती हैं, सुतरां "से-तार" और "त्रि-तंत्री" एह दो नाहि एकार्थ वाचक हैं अर्थात् तीन तार विशिष्ट यंत्र है। त्रितंत्री वीणका आकार भी प्राय कच्छपी वीणके मत है। तब विशेषके मध्यमे एहि जो कच्छपी वीणका खोल अलाबू निर्मित और तिसमे पांचसें लेकर सात तार बांधते हैं किंतु त्रितंत्रीका खोल प्रायाहि काष्ट निर्मित होता है (१) और तिसमे तीनके अधिक तार यदि गोचर नाहिं है। सो इहावें इस दशामे कच्छपीजातीय त्रितंत्री प्रभृति यंत्रमात्र हि प्राय "सेतार" एहि नाम से

पादशाह के ? संख्या पर्यंत

(१) इसका विशेष विवरण तृतीय संख्यक ग्रंथमे देखिये। दि

ककें प्रचलित होईहै। कच्छपी वीणका खोल
कच्छपकी पृष्ठकीन्याईं चेपटा अर्थात् चौडा
किहाहै इस्कों कच्छपी वा कूर्मी वीणा कहीहै।
कच्छपी की दीर्घता सचराचर प्राय चार फुट सामान्यसे
ही होती है। तब बादकगण अर्थात् बजाबनेवा
ले लोक आपनी इच्छा केअनुसार इस्को न्यूना
धिकता भी करते हैन, किन्तु राग बजाउनेकेसमें
कच्छपी आकारसै आपनी इच्छा कर्के किंचित् हल
जतन करनी चाहिये जेकरना करिये तब आला
पके समय मूर्च्छना को शाल भलीप्रकार करवाउ कच्छ
लेंको नहिं समर्थ होसक्ता। क्योंकि [illegible]पीकी
लंबाई चारफुट होनेसें तिसकी पच्चीसें पांच
इंच ऊर्द्धमें तंत्रासन और तीनफुट पांच इंच ऊर्द्ध
मे आडि सन्निवेशित करना चाहिये। परिमाणमें
चारफुटकी न्यूनाधिकता होनेसें इस्केही समानुपात
अनुसारसें तंत्रासनभी आडि स्थापित करनाहो
वेगा। शास्त्रकारभी कच्छपी वीणकोंहि वाग्देवी
सरस्वतीके हाथकायंत्र बोलके व्याख्या कर्तेहैं
और हमलोकका वर्त्तमान कच्छपी वीणसेंही
जो सात तार आकइहै तिन्हुके मध्यमे चारलोहेकी
और तीन पित्तलकीहैं। यथा।

यंत्रकोष।

एकचिह्न विशिष्ट लोहेकी तारको नायकी अथवा
प्रधान तार बोलते हैं। नायकी तार लोहेकी निर्मि
त होती है सो सुतरां ध्वनि दृढ होती है सो गजाउनेके
समयमे इसीकाही विशेष प्रयोजन होता है। एही
[सामान्यलोक] तार सचराचर उदारा सप्तकके मध्यम करिके
बांधाजाता है। दूसरीभि तीन चिह्न विशिष्ट पि
त्तलकी दोनो तारों उदारा सप्तककी षड्ज चार
चिह्न विशिष्ट और लोह तार उदाराका पंचम, पांच
चिह्न विशिष्ट पित्तल तार निम्न सप्तकके षड्ज,
छः चिह्न विशिष्ट लोहेकी तार मुदाराका षड्ज और
सात चिह्न विशिष्ट लोहेकी तार मुदाराका
पंचम करके बांधनेकी रीति है। छे और सात
चिह्न विशिष्ट जुड़ तारद्वय कच्छपी यंत्रके
पार्श्वमे पांभी रहिती है, एही दोनो तारको
सचराचर "जुड़तंत्रिका" वा "चिकारी" कहते हैं।
नायकी और दो चिह्न विशिष्ट तारके बिना अपराकित
नीका तार केवल सुरयोग देनेकेबिना व्यवहृत हो
ती है। न बहिजहस्त निपुण कच्छपिको बजाउने
[मि] वाले जुड़तंत्रिका मित्र व विशिष्ट तारसे नायके ता
पकी अंगुली सारिका सारिकामे संचालन करिके सं
[स्वर] योगादि नानाविध कौशल दरशाउते हैं। इसीकारण
सें कच्छपी वीणाने भी इउरोप देशके गिटार यंत्रकी
न्याई दोतीन सुर एकत्र ध्वनित कर सकते हैं।
[भारतवर्षके] किंतु भारतीय संगीतमे इस प्रकार रीतिका बड़ा एक
व्यवहार नहीं है। कच्छपी वीणाको काष्ठदंड के
ऊपरमे सतारा पान लोहादि धातुनिर्मित सारिका
तंतु करके बांधी रहिती है और तिससे सार्ध द्विसप्तक
मात्र स्वर प्रतिपन्न किया जाता है। कच्छपी इसके सं
बंधसे महती वीणाके सहित प्रायहि तुल्य है। नव

जिसका सारिका विन्यास विकृत स्वरग्रामानुया
यिक, अथवा इसकी सारिका केवल व्यवहारगत
तीव्र मध्यम और कोमल निषाद [illegible] योगसें प्रकृ
तस्वर ग्रामानुसारें इतना मात्र विशेष है। यथा — से विन्यस्त है

कच्छपी यंत्र बजाउनेके समयमें तिसका पिछला
भाग वादकके सन्मुखमें स्थापनपूर्वक अलाबूके
पाससे दहने हाथके साथ पकडके, दबाइकर और उसका
डंडा बामे हाथसे जैसे लेउगे नहि तैसें पकडनी होवेगी।
पीछें स्वरस्थानमें स्थित जो सारिका तिसके प्रति बामे हा
थकी तर्ज्जनी और मध्यमांगुलिको तारके ऊपर संचालित
कर्त्ता दहिने हस्तकी मिजापाहृत अर्थात् सितारके
मै बजाउनेवाली अंगुलीमें लगाउ बाजो है तिसकर के प्रकृत तर्ज
नीकरके सारिकाशून्य प्रदेशमें उसी तारके ऊपर आघात
देनेसें उल्लिखित साधिष्ठसप्तक उत्तमरूपे अर्थात्
भलीप्रकार प्रकाश पाता है। कच्छपी वीणाको ध्वनि
विषयमें महती वीणाके साथ अनेकांशमें समता देख
ते है; महती वीणामें जो संपूर्ण उत्कट तथा कठिनतर
कार्य्य है सो अधिक परिश्रमकर संपादित होता है,
सो कच्छपी वीणासें सब कार्य्य अति सहजमें, अल्प
परिश्रमसें अच्छी तरहसें सिद्ध हो सकता है। ग्रीक
और रोमान जातीयोंका पुरावृत विषयक ग्रंथकार उइलि देशियों का
यम स्मिथ साहिबके मतमें लायार, टेस्टीडो और कच्छ
पी एहि तीनोंहि एक हि जातीके यंत्र हैं। इस समयमें
इउरोपका गीटार यंत्रकोभी सहित कच्छपीके अ
नेक प्रकारकी सदृशता प्रतीत होती है। एनसाइक्लो
पिडिया ब्रीटेनिका रिज साहिब काहिते हैं कच्छपीसेंहि गीट
रकी उत्पत्ति है। स्कुल अव् इउनिभर्सल मिउजिक

ग्रंथकार डाक्तार एड लफ मार्कस् साहिवके मतमै गीटार कच्छपी को अवयव भेदमात्र है, जर्म्मान् जातीय जो हैं सो तिसको जितार कहिके व्यवहार कर्त्ते हैं। वस्तुतः कच्छपीवीणा सामान्यका नाम "सेतार" एहि नाम भारतवर्षमे अमीर खसरूके देशके अनेक पहिले औरऔर देशमेभी उक्तविषयेंहि एहि नामहि प्रचलित था। बूटानिका कर्त्ता कहिताहै जो, आरवदेश विषेंभी कच्छपी अवयव भेदसेभी गीटार नाम करके विख्यात है। अति प्राचीनकालसें जिसवास्ते पारसिक देशके सहित भारतवर्ष के वाणिज्यादि घटित विशेष संस्रवथा अर्थात् जाना आना था, तिससमयमो पारसिक देशके लोक भारतवर्षसें हि कच्छपीको आपनेदेशमें लेगया और "सेतार" नाम प्रदान किया अर्थात् सितार नाम रखा। परन्तु विख्यात पारसदेशका कवि अमीर खसरू जितना कालपर्य्यन्त भारतवर्षमें नाहि आये थे तितने पर्य्यन्त इसदेशमे कच्छपी नामहि अविचलित भावसे अर्थात् कुछकप्रचलित था। पीछे उक्त यंत्र अर्थात् कच्छपी यंत्र पारस्य देशसें आरवमे गिया सो किंचित् अवयव भेदसें गीटार, एसिरिया देशमे एसोर, प्राचीन ग्रीशमे खिताय, यिहूदियोंके देशमे किमोर, निउवियायमे किशोर और अपरापर देशमे भिन्नभिन्न नामसे प्रसिद्ध है। सो आरव्य देशसें हि जो, गीटार नाम की उत्पत्ति, डाक्तार वार्लिसाहिवभी एहि वात स्पष्टाक्षरसें स्वीकार करके गये थे। और रिज् साहिवकृत एनसाइक्लोपिडियामे लिखित है जो, ख्रीः नवम शताब्दीमे अरवदेशके जो है जिसवास्ते स्पेन देशमे आपने पास्से आधिपत्य स्थापन किया उसी समयमे तिन्हके द्वाराहि गीटार यंत्र उक्त देशमे लेगये और स्थापित भया। अनन्तर कालसहकारसें एहि गीटार

होतामया २

यंत्र इउरोपके सभ देशमे अवयव भेद करके भिन्न भिन्न नामसे व्यवहृत होती भई; फलतः भारतवर्षमे कच्छपी वा कूर्म्मी वीणाही बोध होती है सो सभ यंत्र सम्प्रदायका मूल है।

संख्या ३।

त्रितंत्री वीणा।

कच्छपी वीणाके प्रस्तावमे कथन किया गया है जो, त्रितंत्री वीणाके अवयव प्राय कच्छपीके हि मत, अर्थात् सदृश होते है; केवल इसका खोल काष्ठ निर्मित होता है और इसमे तीनही तार बांधी रहती है, इतना मात्रही भेद है। कच्छपीतें जो जो कार्य्य संपादित होता है, सो इससेंभी कोई कोई कार्य्य अनेकांशसें संपन्न होसकता है, केवल अवयवकी किंचित् न्यूनता निबंधन रागरागिणीके आलापका उपयोगी जो मूर्च्छनादि कार्य्य है सो निष्पन्न करना किछ कष्टसाध्य होता है। कच्छपीकी लोहेकी तारही नायकी तार होती है, जिसतरह उदाराके मध्यमे बांधे, इसकी नायकी तारभी अविकल तिसी तरह बांधी रहती है, केवल तिसकी पित्तल निर्मित दूसरी तार जिसतरह उदाराके सुरमे बांधनेके समय रीति है, सो इसका दूसरी तारभी ठीक उसीतरह है, केवल तीसरी तारसेंही किंचित् विलक्षणता लक्षित होती है। और कच्छपीका तीसरी तार दूसरी तारके समसुरमे बांधनेके

समय एह रीति प्राय सर्वत्रही प्रचलित है, किन्तु
त्रितंत्रीकी तीसरी तार दूसरी तारके समसुरमे अर्था
त् उदाराके षड्जमे नाबांधनेकर तिसके निम्नस
प्तकके पंचम करके बांधनेका व्यवहार देखनेमे आ
उता है, इतना मात्रही विशेष है यदिच अर्थात् जेक
र कच्छपीके तीसरी तारके साथ त्रितंत्रीकी तीसरी
तारका बंधनगत भेद होवे तदवी धातुगत भेद किछभी
लक्षित नहि होता। यथा—

सारिका संबंधसे कच्छपीके साथ त्रितंत्रीका कि
छमात्र इसका विशेष नही है, और तिसमें सार्द्ध द्विस
प्तक स्वर जो नियममे प्रतिपन्न होता है, इससे
भी सोई प्रणालीसे सार्द्ध द्विसप्तक संपन्न होता है।
त्रितंत्रीके बजाउनेइत्यादिकोंका नियम अविक केवल
ल कच्छपीके सदृश है। प्राचीन ग्रीक देशके
पासेका हार्मिसेर लाइयर यंत्रकी तारके साथ
त्रितंत्रीकी तारका संख्यागत कोई वैलक्षण्य देखा
नहि जाता, केवल बंधनविषयमे किंचित् अनेक प्राय
वा होता है अर्थात् एकता नहि देखीती।

संख्या ४।

किन्नरी वीणा।

किन्नरी नामे अपर एक जातीकी वीणा इ
सदेशमे बहुतकालसें प्रचलितहै। कोईकोई
ग्रंथकारके मतमे इसयंत्रका खोल अलाबू
वा काष्ठद्वारा निर्म्मित नहींथा पहिलेसमयमे ना
रकेलके खोलद्वारा तियार होताथा, अबइस सम
यके लोक संगीत कुतूहली जोहैं उन्होके मध्यमे को
ईके वृहत् पक्षी विशेषका अंड और बडे पनवाले लो
क रजतादि उत्कृष्ट धातुद्वारा प्रस्तुत कराउतेहैं; फ
लतः नारिकेल खोल निर्म्मित किन्नरी की ध्वनिके साथ
अंडादि निर्म्मित किन्नरीकी ध्वनिका किछमात्र इ
तर विशेष अनुभूत नहिं होता। इसी जातीकी वीणामे
सचराचर पांच हीतार बांधीरहितीहै, और कच्छपी वी
णाके सात तारके मध्यमे पार्श्वोमे स्थित दोनो क्षुद्र
तंत्रिका अर्थात् चिकारीके विना अवशिष्ट पांच ही
जोजो धातुनिर्मित और जोजो सुरमे आबद्ध है, इसकी
पांच ही तार और उसी उसी धातुनिर्मित और उसी उसी नियु
मसें बांधीहोई रहितीहै। इसका अवयव कच्छपीसें अने
क क्षुद्र, सुतरां तज्जन्य ध्वनि भी औरकी अपेक्षाकर्के
मृदु है। एडओयार्ड एफ रिम्बाल एल एल डि साहि
बकृत पियानोफोर्टी यंत्रके इतिहासविषयक

सामान्य

तिसनिमित्र

वाला १

ग्रंथमे स्पष्टाक्षरमै लिखित है जो, किन्नरी जाती
य वीणा है। इहूदियोंके देशमे किन्नर और ग्रीसर
देशमै धाम्बूका नामसे विख्यात थी। किन्तु देश
भेदसेंभी नामके भेद होय्यां किन्नरी का अ
वयवभेद असंभव नही है। एहि उभय विपनाम प्र
सिद्ध यंत्र तत्तद्देशमै कोमलकंठी स्त्रीजाति कर्तृक
नीथी। अधिक व्यवहृत होइहैं।

संख्या ५।

रंजनी वीणा।

रंजनी वीणा देखनेमै कितनेक अंशमे मह
ती वीणाकीन्यांई है किन्तु विशेष एहि जो मह
ती वीणा का दंड बांसका और इसका दंड कच्छ
पी प्रभृतिकी न्यांई काठका होताहै। और भी
महतीवीणाकी रंजनीवीणा उक्त यंत्रकी अपेक्षा करके परिमाण
मेभी किंचित् न्यून है। अर्थात् छोटी है।
इसका सारिका विन्यास कच्छपी जातीकी औ
र और वीणाकी न्यांई और तारोंकी संख्या सातही
इसको कच्छपी वीणाके अन्तर्भूत करके बांधाजा
ताहै। तब महती के साथ रंजनीकी समता इत

नामात्रही भेद है जो महती वीणाकी न्याई इसकोंभी दंडके दोनो पार्श्वोंमे दो तूंबे जोडे होते हैं।

—

संख्या ६।

—

रुद्रवीणा वा रबाब।

भारत खंडमै यवनाधिकारसैं पहिलैं एहि यंत्र रुद्र वीणा करकें प्रसिद्ध था, तदनंतर। विजयी यवनराजग णकरकै रबाब नामसें विख्यात हुवा सो रबाब यं त्रभी। सेतारकी न्याई एकही खोल ओर दंड द्वारा प्रस्तुत होता है; विशेषके मध्यमे एहि जो, एह खोल ओर दंड एहु दोनोहिं एक थान अखंड काष्ट द्वारा निर्मित ओर खोल गोधाचर्म अथवा छागादि (बकरे इत्यादिके) के [illegible] पतले चर्मके द्वारा आच्छादित। महती प्र भृति वीणाकी न्याई इसमे भी एक थान हस्तिद तका तंत्रासन है। रबाबयंत्रमे छ ही कीलकमे अर्थात कोलके साथि तन्त्र अर्थात तांत आबद्ध होती है। इसी यंत्रमे लोहादि धातु निर्मित तार व्यवहृत नहि होती इसी तन्त्र निम्नलिखित नियममे एहि छे साथि तंत्र बांधा जाता है। दिकोंथ डोरेसें

यथा।

	१	२	३	४	५	६
अनु ३						
	प	ऋ	सा	प	ग	सा

[illegible]

रुद्रवीणा।

रवावयंत्रमे सारि का विन्यास नहि होता, सोउस यंत्रको मांढेमे स्थापन पूर्वक अर्थात् रखकर वामे हाथकी केवल तर्जनीमे मच्छ का एक मोटा शल्क अर्थात् छिलका एक गांठि सूत्र द्वारा बंधन करिके तिसके सहकारसे तारके ऊपर ऊपर स्वरस्थानमे घसे और दहिने हाथकी तर्ज्जनी और वृद्धांगुल अर्थात् बडी अंगुलि के दीपयोगसे अर्थात् चोट लगानेसे चंदन काष्ठका वा वंशनिर्मित एक कोलम (अर्थात् त्रिभुजाकृति एक खंड तुजफलक अर्थात् एक प्रोत, पारस्य भाषामे इसको जओया बोलते हैं) आगले के तिसके आघातयोगसे बजाते हैं इसका आघात कोलके सदृश ना होकर उसके विपरीत ही होता है, अर्थात् केवल उलटा आघात द्वारा ही इसके बजाउनेकी क्रिया निष्पन्न करते हैं। रवाव यंत्रका एक ही विशेष नियम है। कि वीणा जातिके और और हिन्दुस्थानकी न्याई रवावमे भी ताई द्विसप्तक स्वर भली प्रकार प्रतिपन्न होते है। रवावकी जिस जिस तंतुसे जो जो स्वर निर्गत होता है, सो नीचे दरशाया जाता है। यथा—

तंत्र | अंगुष्ठके | उसको ॥



रवावकी सभी तंत नियमित रूपसें बांधी रहती है पश्चिम हिंदुस्थानके रामपुर प्रभृति अंचलमे इसका बहुत प्रचार देखते है, अफगानस्थान पारस्य प्रभृति देशमे भी एहि यंत्र रवाव नामसे प्रसिद्ध है। अरब देशके इसीको "रुबेव् बोलके व्यवहार करते हैं। प्रसिद्ध अरबी के शब्द शास्त्र जानने वाले फिरोजाबादी मजद् अल दीन् । तिसीको विख्यात

देशमें

अभिधानग्रंथमें (कामरुस्) लिखाहै ये, प्राय सत सहस्र वत्सर व्यतीत होनेसें बसद ग्राम-निवासी संगीतकुशली आबू इस्ला इसीयंत्रको पहिले निर्माण करिके "रुबेब" एहि नामकरण किया उइलार्ड साहिब कहितेहैं, कि स्पेनिस् गीटारके अवयवके साथ अनेकांशमें समता हय। इउरोपीय म्यान्डलिन् प्रभृति प्राचीन यंत्रसमुदायके साथ ऐक्यकर्के देखनेसें इस्के अवयवका अनेकप्रकारका सादृश्य देखाजाताहै प्रतीत होताहै कि रुद्रवीणाही स्पेनिस् गीटार और म्यान्डलिन् प्रभृति यंत्रका आदर्श है, जिसहेतु रुद्रवीणा इओरप [?] देशके उक्त यंत्र समूहकी अपेक्षा कर्के अनेक प्राचीन है।

का इसीको देखके और निर्माण किया गया है [?]

कहे हुए जो यंत्र हैं उन्हके [?]

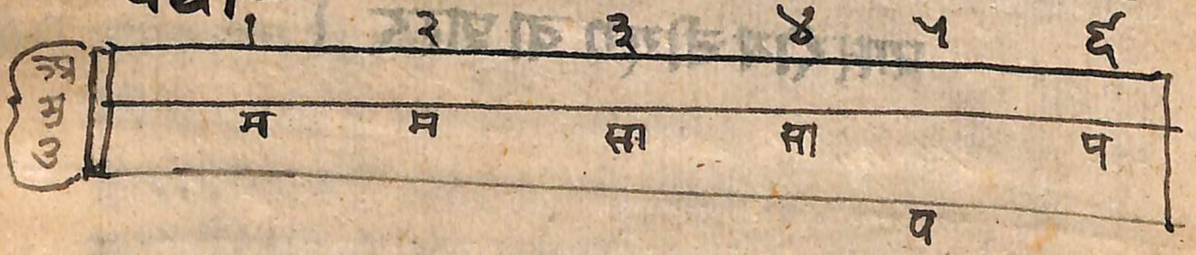
संख्या ९।

शारदीय वीणा वा शरद।

शारदीय-वीणाके दंडसें लेकर खोल पर्यन्त प्राय समुदाय अवयव एकही अखंड काष्ठद्वारा (निर्मित) प्रस्तुत होताहै, खोलका आवार रबाबके सदृश गोधादिके चर्मद्वारा मढायाजाताहै। इस यंत्रमेभी रुद्र-वीणाकीन्याँई सारिका विन्यास नहीहै इसीतरह इसमें छकील कमेंका काले छे तंत्री किये तंत्र यथारीति

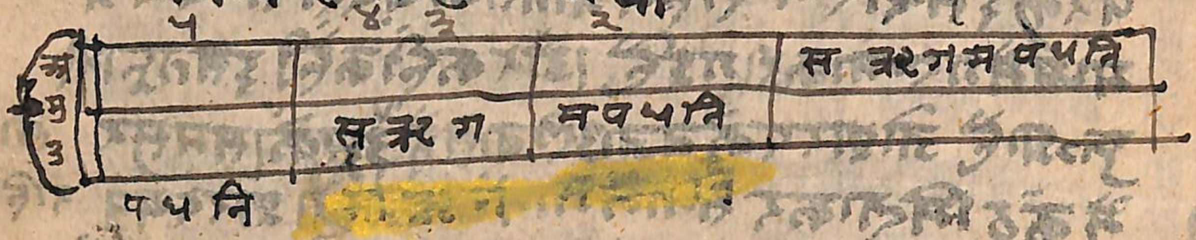
सावत

वाँधी रहिती हैं। सो वजाउले वाले लोक आपनी इच्छानुसार इसमें तंतुके परिवर्त्तमें लोहादि धातुनिर्म्मित तार भी समयसमयमें योजना कर्त्ते हैं, किन्तु सर्व्वदा चर अर्थात् परंपरासे इसी तरह पद्धतिका वश एक व्यवहार नहीं है। यंत्र दंडके पार्श्वों मे सात सें लेकर एकादश पर्य्यन्त इच्छाधीन अपर कितनेक अतिरिक्त अर्थात् वः स्वरे की लक संयोजना कर्त्ते हैं इसी तरह प्रत्येक धातुनिर्म्मित तार वाँधी रहिती है, उसी तारको पारस्य भाषामे "तरफ्" और संस्कृत भाषामे "पार्श्वतंत्रिका" कहिते हैं। एह पार्श्वतंत्रिका नियमित आघातद्वारा वाजतीयो नहीं, केवल पूर्व्वोक्त प्रधान छे ही तारों वजाउलेके समय तिन्होंके कंपने से ही एहि अतिरिक्त तार झंकारित वा प्रतिध्वनित होती है। शारदकी प्रधान तार छेही है। निम्नलिखित नियममे तिन्हके वाँधनेकी रीति दखी जाती है। यथा—



शारदयंत्र क्रोडमे अर्थात् आपना गोदमे स्थापन कर्ते हि सेतारादि यंत्रकी न्याँई वामहस्थमे पकडकर डिगले नहिं दते सारिका रहित दंडस्य काष्ठ पट्टको (पारस्य भाषामे इसीको पटरि कहिते हैं) स्वरस्थानमे तारके ऊपर ऊपर वामहस्थकी अंगुलि घर्षण इसी तरह दहिने हस्थकी तर्जनी और वडी अंगुलीके टीप सहकारसे रवावादिमे व्यवहृत जओया की न्याँई अस्थिकी का अथवा वंशद्वारा निर्म्मित एक जओया धारण

कारिके मिस्त्रके आघातसें एह वजताहै। शारद के
वजाउनेके समयमे वामें हाथकी अंगुलिके विना
अपर अर्थात और चार अंगुलियों काही व्यवहा
र होताहै। परंतु तर्जनी और मध्यमा इन्हु दोनोही
अंगुलियोंका व्यवहार अधिक देखाजाताहै।
शारदमे निम्नलिखित नियमसे साई हिसप्रकस्वर
प्रतिपन्न होताहै। यथा—



और और यंत्रोंकी अपेक्षाकरके शारद यंत्रकी
तारयोजनामे कुछक विशेषहै। इसकी एक और
दो चिन्ह विशिष्ट दोतार इसी तरह तीन और चार
चिन्ह विशिष्ट दोतार इन्हुका परस्पर सन्निकटमेभी सम
स्वरमे आवद्धहै। समसुरमे आवद्ध एहि दोई दोई तार
एकजगा अंगुलि घर्षणमें व्यवहृत होतीहै। पाँच
और छ चिन्ह विशिष्ट दोनोतार एथग्भावसे योजित और
वादित होतीहै। सो सुतरां इसमे छ ही तार रहोतभी एक
और दो चिन्ह विशिष्ट तार दोनोही समसुरमे वद्ध इसी
तरह एकत्र ध्वनित होतीहै तो लगतेहै कि एककीहि न्याइं
कार्य्यकारी होतीहै इसी तरह तीन और चार चिन्ह वि
शिष्ट तार दोनोही इसी तरहहैं। सुतरां एहि चार तार
मे दोनोहि तारका कार्य्य संपन्न करतेहिं। वस्तुगतीक
के इसका चारही मात्र तार कार्य्योपयोगी हैं। सो प्रयोजनी
य एहि तारके मध्यमे और वा छ चिन्ह विशिष्ट तार केव
ल सुरयोग देनेके निमित्त व्यवहृत होतीहै। ऊपरमे
इसीप्रकार रीतिसेही स्वरलिपि प्रदर्शित हुइयाछे अर्थात
दरवाई गईहै। वेगदेशमे सितारादिकी न्याई शारद-यंत्र
का वडा व्यापिक व्यवहार देखनेमे नहिं आउता,

बकुत २

भारतवर्षके उत्तर-पश्चिम प्रदेशमेंही इसका
सांपिक अाडंबर है। यवनराजाओंके राजत्वकालमे
एहियंत्र [illegible] विक यंत्र बोलकरके प्रसिद्ध था, जिस
कालमे राजगण अर्थात ओहराजे वायु सेवन वा
और कोई कार्य्यके वास्ते बाहर चले [illegible] जातेथे
उस समयमे हाथी वा ऊंठकी पृष्ठमें शारद यंत्र
स्थापित करके उन्ह राजाओंके आगे आगे बजाउतेथे
परन्तु इसकालमे एहियंत्र तिसके बदले सन्ध्य यंत्र
मध्यमे गल्लाकरी गई है। और कहीं कहीं इसतफाभी
फ़ंमाहै जो शारदके बजाउले वाले हैं उनकों समसुर	सो
भी	मे कंठ मिलाकर सभामे गान करते [illegible] शारद यंत्र	रहितेथे
कि स्वतःसिद्ध कि अनुगत सिद्ध एह दो नाभावसे हीं	एक प्रकार
वश माडा नहि लगता। तब मरती, कच्छपी वा रुद्रवी
णाके सदृश नहिं है, शारदकी ध्वनिकी अपेक्षा कर्क	कृत
[illegible]। किछ नीरस और कर्कश प्रतीत होता है। आफ़
गानस्थान और आरब प्रभृति आसिया देशके रहिले
वाले अनेक देशमे शारद प्रचलित है, किन्तु आरबी	आरब देशकी
य शारद भारतवर्ष देशकी शारदकी अपेक्षा करिके
छोटी	आकारमे किंचित लघु और दोनो पासोंमे अवयवगत
भी तारतम्य है अर्थात उत्कृष्टता है, संगीतगत कोई वि	नाममे
लक्षणता नहीं। शारद यंत्र किंचिन्मात्र अवयवभेद
कर मिशर देशमे राम्या नामकर्के प्रचलित है।

संख्या ८।

स्वरशृंगार वा सुरशृंगार।

इस यंत्रका खोल शारद वा रबावकी न्याईं
एकही अभिन्नकाष्ठद्वारा अर्थात एकही काष्ठक
के तैयार नहीं होता सितारादि और और यंत्रोंकी
न्याईं अलाबु निर्मित अर्थात तूंबेकर निर्मित है।
होना।

इसी यंत्रकी चार तार अपरमें लिखित स्वरलिपि बाधी होइहैं
के अनुयायी जो जो सुरमें आंकद्ध हैं। तिन्हसें भि
न्न अन्य कोई सुरभी इसमें दराया नहिं सकतो तब
गायकगण रागविशेष गानकरनेके समय कभी
कभी एकाधिक विशिष्ट तारको उदाराके पंचमके
बदलमें परिवर्त्तमें उदारा कोमल मध्यमकरि कभी बांधराखतेहैं,
किन्तु अपर तीनहीं तारको किसीके बदलेमें नहिं
करते। भारतवर्षकी तुम्बुरुवीणामें सारिकाविन्यास
नहिं होता। बजाउनेवाले लोक इसी यंत्रके द्वारा ही
दक्षिणहस्तकी अनामिका और वृद्धांगुष्ठ सहकारसें
निजनिज अभ्यस्त आपनी २ बुद्धिके अनुसार स्वर मूर्छनै
लभावसें वा स्कंधमें स्थापनकर पालनकरिके तर्ज
नीद्वारा क्रमान्वयसें एक एक तार आघात करिके बजा
उते रहते हैं। किसी किसी बजाउनेवालेकों एकाधिक
विशिष्ट तारकों मध्यम अंगुलि द्वाराभी बजाउते देखजा
ते हैं। तुम्बुरुवीणामें कोणसारि किसीभी प्रयोजन पडु का
ता नहीं। शुद्ध अंगुलिके आघातसेंही तारध्वनि नहोतिहै।
और जितनी कवी लगे हैं उहुसमें केवल बजाउनेकी अ जांती
पेक्षा करिके तुम्बुरुवीणाका बजाउना अति सहज और
अल्प आयाससाध्य है। पारस्य देशमेंभी तुम्बुरुवीणाका
विशेष प्रचलन है, तिस देशके इसीमें छ तार और पंचविंश
ति वा पंजी सारिका व्यवहार करते हैं। तुरुष्क देशके कोई
कोई तुम्बुरुवीणामें आठ तार और पैंतीस सारिका कोई
कोई नहीं में चौथी तार, और बीयाली सारिका और कोई २
नौ ही वा दशही तार और सत्तातली सारिका योजनाक
रिके देखजाते हैं। तुरुष्क देशमें प्रचलित जो तुम्बुरुवी
णा है तिसकी सारिका हैं सो लोहादि धातु निर्मित
नहीं हैं प्रायहि चर्तुगुल विना इत तन्तु निर्मित हो
तियो हैं और सोई सारिका आरबदेशके स्वरग्राम अनु

अनुसार। स्थापित।

याथिक विन्यस्त है। और अरब देशमें एशियामें

किंचित् अवयवभेदसे "ऊउड" नामसे प्रचलि

त है। स्यार् गार्ड्नर् उइल्किन्शन् बोलते है

ख्ृ: जन्मके १५७५ वर्ष पहिले मिसरदेशमें भी इसी

यंत्रका प्रचार था, हाइरोग्लिफिक् लिखन प्रणा

लीके चित्रमय प्रतिकृति दृष्टमें एह स्पष्ट प्रतीत हुए । मूर्त्ति देख लेसे ध

थे। किन्तु आधुनिक आदिम मिसरदेशके लोक इसी

यंत्रका बडा एक व्यवहार करते नहीं। तब ग्रीक, इट्रुरी

यामें निवान्, तुर्की प्रभृति जो सभ देशोंके भिन्न

भिन्न लोक तथा [illegible] किम्पाथा तिरुके +

मध्यमें इसका बहुत व्यवहार देखा गया। मिशरदेश

मियोलमें है एसिरिया देशमें भी पहिले तम्बुरुवीणा

प्रचलित थी, किन्तु हमारे देशमें चलित तम्बुरु

वीणामें व्यवहृत कीलकके परिवर्तनमें दोई आल बदलेमे

बक अर्थात् खोखना रुओ या [illegible] किन +

और एहि दो खोखनाके सहित हि तार संयोजित होते हैं। जोड़ी जाती थी

एसिरियाके लोक मिज्राप द्वारा इसको बजाउते थे।

इस काल पर्य्यन्त भी तुर्क देशके अन्तर्गत टाइग्रीस

और इउफ्रेटिस नदी तीरस्थ एसिरिया देशके मध्यमें

तम्बूरा यंत्रका प्रचलन देखा जाता है। दक्षिण इटा

लीय देशके रहनेवाले भी इसी यंत्रको किंचित् अवय

वभेदसे "कोलेसियान्" नामसे व्यवहार करते है।

तम्बुरु जातीके "कोलेसियान्" यंत्रमें

दोईमात्र तन्तुनिर्म्मित तार जोडी होई होती है
सुविख्यात संगीत ग्रंथकार डाक्तर वार्ग्ली
जा: इसीअति के यंत्र को विषय तिसको आपने किय
हुए ग्रंथके प्रथम खंडमें १९८ पृष्ठमें यथोचि
त निर्द्देश करा गयाहै। एहि तम्बुरु यंत्र ही
किंचित् अवयव भेदसें चीनदेशमें "सान्सीन"
मै और जापानमें "सामसीन" नामसें विख्यात।
एहि दोनो देशके तम्बुरुकी ध्वनिपट्टक भी
तिसतिस देशके सर्प विशेषके चर्म द्वारा
आच्छादित अर्थात् मढयाहुआ और तिसमे
तीन ही मात्र तार योजित होती है। सोतहांके
लोकोंको उक्त यंत्रको कोणेसद्वारा बजाउते हैं। +
मिशरुहाभेयार डि हेरु साहिव बोलते हैं तातार
देशमे कास्पियान् ह्रदके तीरवासी कात्मक
जातियोंके मध्यमें भी तम्बुरु वीणा सदृश यंत्र
अप्रचलित नहीं। रूषिया देशमेंभी एहि प्रकार
यंत्र "व्यालालाइका" नामसें प्रसिद्ध या है।
"व्यालालाइका" यंत्र पूर्व ... तेहि तपाय ... य
या आनया होहै हमलोकभी एहबात अयोक्तिक
बोधनहिं कर्ती। पहिलें भारतवर्षमे "वल्लकि"
नामसें ये एकविध वीणा प्रचलित थी, सोयती
तहोती है कि "वल्लकिाहि" नामके अपभ्रं
शसें तैसें "व्यालालाइका" नाम प्राप्त होया
एहस्थिति है। होवेगा।

२१

संख्या १८।

—o o—

कानून।

कानून एक प्रकार का तंत्र विशिष्ट ततयंत्र है।
इस यंत्र का उत्पत्ति स्थान लेके संगीत ग्रंथकारों ने
नानाविध मत प्रकाश किये गये हैं। फाराबी याने
अल् फाराबी नामक एक जन पारसिक संगीत ग्रंथ
कार कहिते हैं थे, आरब देश में ही इस यंत्र का आदि
उत्पत्ति स्थान है। खृष्ट के प्रथम शताब्दी से
आरब देश में निकोमेकास नामक जो अत्यन्त
र विख्यात संगीतवित [illegible] पंडित ने जन्म ग्रहण
किया था, तिसके मत में मिसर देश में हि इस यंत्र
की प्रथम सृष्टि भई अर्थात् निर्माण किया गया।
और और संगीत जानने वालों के मध्य में भी इसी
तरह विस्तर मत भेद लक्षित हुआ, किन्तु उक्त
पंडितगण जो किस कारण से और किस विश्वास
मात्र से कानून का प्रथम उत्पत्ति स्थान घटित
मत भेद प्रकाश किया गया है, सो हम लोक सहज में ३
समझ नहिं सकते। हम लोकों के विचार में इसी भारत
वर्ष में हि कानून की प्रथम सृष्टि है। जिसका प्रमा
ण यह है जो अति पूर्वकाल से भारतवर्ष में शततंत्र विशि
ष्ट एक प्रकार की वीणा प्रचलित थी, प्राचीन ग्रन्थकारों ने ति
सको "शततंत्री वीणा" एहि उसका नाम रखा था।
सो मि कृष्ण यजुर्वेद में कथित है जो महर्षि कात्यायन ने*
उक्त जाति की वीणा का प्रथम सृष्टि करी है।

---

* पाणिनि मुनि के कितने दिन पीछे अर्थात् खृष्ट के जन्म से
चारसौ ४०० वर्ष पहिले जिस काल में पाटलिपुत्र नगर में नन्द ना
मक राजा राज करता था उसी समय में ही भारत वर्ष में कात्यायन ऋषि
प्रादुर्भूत हुए। जन्न मयारेंद्र कृत हिन्दु जाति के पुरातत्त्व शिल्प,
साहित्यादि विषय वाले अभिधान में कात्यायन और वररुचि
शब्द देखना चाहिये।

कात्यायन ऋषिकर्तृक प्रथम सूत्र ग्रंथ सो उसको अनेक ही लोक कात्यायन बीणा तक के व्यवहार करते हैं। सो मध्यमें किसी विशेष विप्लव में उसको यंत्र भारत वर्ष में नाममात्र से पर्यवसित भया। अर्थात् समाप्त भया

व्यापारके मिसर देशवासी लोक जिस समय में [illegible] नि-
भित्त सर्वदा काल भारत वर्ष में आवते जाते थे उसी समय में कोई एक व्यापारी मिसर देश का भारत वर्ष से कात्यायन बीणा आपने देश में ले गया हय। येह बात हमारे लोक केवल बोलते हैं सो ऐसे नहीं है फ्रान्स देश का सुप्रसिद्ध पंडित माष्टार मिलैंडि उ मिसर देश के संगीत संबंध के इसहजात से लिखने के समय भी स्पष्ट रूप से स्वीकार किया गया है जो मिसर देश के भारत वर्ष से हि पहिले कात्यायन बीणा आपने देश में ले गये तिसको हि अनुकरण में आपने देश प्रसिद्ध कानुन नामक यंत्र प्रस्तुत किया तदनंतर अरब देश के लोक मिसर देश के [illegible] बने हुए कानुन यंत्र को आपने देश में ले जाय कर कानुन नाम प्रदान किया ॐ। इस ही जाति के लोक संगीतवेत्ता सरोमन के [illegible] मत में ईशु जन्म के समे पाँच सौ ५०० वर्ष पहिले मिसर देश में ही कानुन प्रथम उत्पन्न हुआ है।

ॐ सो कात्यायन बीणा ही से, देश भेद से संस्कृत नाम का अपभ्रंश से किसी स्थान में कानुन- किसी स्थान में कानेल नाम प्राप्त भया है एह कथा क्यों कि कहते हैं मिसर [illegible] कानुन से हमारे देश में प्रचलित भाषा बी नामक व्यवहार भाषा ले हि [illegible] देश में हि नाना स्थानों में नाना रूप धारण किया है जिस रीति वङ्ग से बाङ्गला- लवण से नून- अपोलन से बंगाल में लोन- घृत से घी पूर्व बङ्गाल में घृत- वा गी, हेड से मुडा, मेदिनीपुर अंचल में मुण्ड एड़ से भेरेण्डा, प्रस्तर से पाथर, मृत्तिका से माटी वा माडी, दन्त से दाँत (उड़िया और मेदिनीपुर अंचल में एहि दांत शब्द व्यवहृत है) इत्यादि। एहि सकल प्रमाण इस भाषा के जानने वाले लोक स्वयं विचार करि के देखेंगे कि उसी प्रकार एक देश की भाषा स्थान भेद से नाना रूप धारण किया है तिस रीति भारत की कात्यायन बीणा भी देशान्तर में जायकर भिन्न भिन्न देशों में भिन्न भिन्न नाम से प्रसिद्ध हुए हैं एह मानने के नहीं अर्थात् प्रसिद्ध ही है।

मिसरदेशके कानुनकी दीर्घता चालीसपर्व प्रस्थ
षोडशपर्व और वेध दो पर्वमात्र होतेहैं, इसमें बैया
—र कीलकमे बाधा —र — तन्तुआबद्ध है औरको
लोकादित्तकित सम्प्रदाययंत्र एक काष्ठके बाक्सके म
र: खोहो वा ५ ध्यमे संस्थापित रहताहै। माशूर मिलेटि
साहिवके मतानुसारसें पहिलें कथनकियागयाहै
जे कानुन यंत्र मिसरदेशसें आरबमें लेगए और का
नून नाममात्र हुआ, किन्तु माशूर लेन साहिव
बोलतेहैं थ, खृष्ट जन्मकेसमे तीनसो ३०० बरस
पहिलें आरबदेशमेंही कानूनप्रस्तुत हुआथा। सो
आरबदेशके कानूनके चालीस कीलकमे चालीस—
तार योजित और सम्प्रदाययंत्र पूर्वकथित नियमकेअ
नुसारसें एकही बाक्समध्यमे स्थापित रहताहै।
उपरंत तिसकेपीछें पारस देशके लोक आरबदेशसें उक्त
यंत्रकों आहरण करके तिसमे और दो तार होरबरबरी
जोड़दई सो सभमिलाकर बितालीस ४२ तारवाला
कानूनयंत्र व्यवहारकिया। कालक्रमसें भारतव
र्षके जातिगौरवकी सामग्री साई कात्यायनवीणाही
देशभेदसें नामभेद और अवयवभेद प्राप्त होकर
पारसदेशके वाणीयेंद्वारा एहि भारतवर्षमें फेर लौटआ
ईहै। क्याकि बड़ा आश्चर्यका विषयहै, कि इससमय
मे कहां वो कात्यायनवीणा, कहां उसमें शततन्त्र योजी
तहोयें और कहां उसके निर्माण करनेवाला महर्षि खेक: पाती
कात्यायन। खृष्टके तीनसौ सताईस वर्ष पहिलें ग्रीस
के 'रहिलेवाला' मासिडोनियाका अधीश्वर आलेक
जाण्डर कि अशुभ दालमेंही एह स्वर्गभूमि भारत
भूमिमें पदार्पण किया, सो उक्त महात्मा के पाद
स्पर्श नाहोनेसेंही भारतका सौभाग्य सूर्य्य
चिरकालका उदयहुआ होया अस्त होगयाहै।

तिस समयसें लेकर इस महाराज्यकी स्वाधीनता लोप दर्शन, विज्ञान, शिल्प, साहित्यप्रभृति शास्त्रकी दुरवस्था, संगीत शास्त्रका ह्रास और इसीके संग संग प्रभृति ही कात्यायनी इत्यादि नाना जातिकी वीणा और अन्यान्य संगीतयंत्रका विनाश होगया है।

पारसिक राजि वृत्त लेखक आलेफजांडार वूरको साहेव दोलतेहैं ये रहूरके आठसो वर्षपीछें कानूनयंत्र कोई कोई अंशमे परिवर्त्तित होकर भारतवर्षमे फेरपीछें आ एकर स्थापित हुआहै। अधुनातन अर्थात् अववर्तमानसमयके भारतवर्ष के कानूनकी दीर्घता प्रायदो हाथहै प्रस्थप्राय एकहस्त और वेध अर्द्धहस्त परिमित होताहै। सोइस देशा व्यवहृत कानूनमे सचराचर प्राय वाईससें ले कर त्रीसपर्य्यंत तार योजीयाँ होइयाँ दरवियाँ जाति याँहैं। सोओही तारां लोहादि धातु निर्मित हैं। आधुनिक भारतवर्षके कानूनकी तार मिसर, आरव प्रभृति देशाके कानूनकीन्याँई एककाष्ठके वाक्स के मध्यमे दोनोपार्श्वों के कीलकद्वारा वांधी होतीहै। एह यंत्र समतल स्थानमे स्थापन कर फेर कोलसंवि लिष्ट दोनेहाथकी चार चार करिके आठ अंगुलियों करके वजाउते हैं। कानूनके द्वाविंशति अर्थात् वाईस संख्यक तारां निम्नलिखित रूपमे आवद्ध करी जाती है यथा—

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२

कानून।

अथवा।

ऊपरमे लिखितहै प्रथम स्तवकतें बाईस तारके मध्यमे प्रथम सात उदारा सप्तकके सप्त स्वरमे, द्वितीय सात मुदारा सप्तकके सप्त स्वरमे, तृतीय सात तारा सप्तकके सप्त स्वरमे, और द्वाविंश अर्थात् बाईस संख्यक तार ताराके उच्च सप्तकके शुद्ध सा, सो सभमिलके एहि बाईश स्वरमे आबद्ध हैं, तैसे होनेसें इस यंत्रमे स्वाभाविक तीन शुद्ध सप्तक और कोमल पंचमके उच्च सप्तकको सा मात्र पायाजाता है और ताराके उच्च सप्तकका स्वर ज्ञापकार्थ सोई स्वरके सप्तकके ऊपर एक बिंदु स्थापित किया गयाहै। द्वितीय स्तवकसें उदाराको पंचमसें ताराके उच्च सप्तकका पंचम पर्य्यंत स्वर पायाजाताहै ✱

एडूओयाई एफ् रिम्बल्ट् एल् एलएस्।

साहिबकृत पियान यंत्रका इतिहास विषयक ग्रंथमे इच्छय, इकृतियोंके देशमे कानून यंत्र "आबि" अथवा "सालूटरि" नामसें विख्यात था। रोमीलोग † बोलते हैं, प्रसिद्ध सलमान भारत वर्षसें मेहगुनी

✱ वादक गण प्रयोजनानुसार एहि बाइशा स्वर ही कोमल भी तीव्र भावसें विकृत करिके लइसे सकते नहीं ×

† डल्सिमार नामक अपर एक प्रकारका यंत्र सन्तुरिके प्रकार भेदमा तिसकालमें प्रस्तुत हुआ। डल्सिमारको आकार त्रिकोण, एह प्राय आषाढ़ा अंगुलि दीर्घ और इसमे पंचाशहि तार एक सेतुके ऊपर देकर कीलकमें बांधी रहितीहै। डल्सिमार यंत्र सन्दूकमें समतल भूमिमें स्थापनके

काष्ठ (संस्कृतभाषामें जिसकों नन्दिककाष्ठ कहितेहैं) आबनाइयां अर्थात् उसकों उ आइके सालूटरियंत्रमें १० । १२ के अधिक जिसमें तार प्राय नहिं रहती। सालूटरि, हार्प, लायार, शाम्बूक, प्रभृतियंत्र, सकल यही साधारणजातिके हैं तव निर्माणगत और उपादानगत भेदमें ध्वनिका तारतम्य लक्षित होताहै, १११८ खृष्टके वर्षमें नानाविध सालूटरिका चित्रमयरूप प्रति प्यारिसेर कोतुकागारमें प्रदर्शित कया देखेगयेहै। तिसकालमें स्पेनदेशमें उक्त यंत्रकों कल्टिकम् बोलतेथे, अन्यान्य वीणाजातिके यंत्रकी न्याई अंगुलित्र अथवा केवलमात्र अंगुलिद्वारा सालूटरि के वजाउणेकी रीतिथी।

खृष्टके त्रयोदशशताब्दीमें गइलाम् नामक एकजन शिल्पीका कियाहोया इटाली देशमें कानून यंत्रका प्रतिरूप अर्थात् उसकेबदले सिटोल् नामक यंत्र एक प्रस्तुत कियाथा। सो सिटोल् यंत्र ताड्नीवा अंगुलित्र द्वारा नहिं वजता केवलमात्र अंगुलिद्वारा वा जताहै। मिष्टार फेटस् साहेव बोलतेहैं, कि सिटोल् यंत्रसें त्रयोदशशताब्दीके मध्यमें इटाली देशमें हि निजराव

अनंतर दोनो हाथके तर्जनीयोंसे महिषशृंगनिर्म्मित दो अंगुलित्र पाहिरकरिके उसके वजाउणेकी रीतिथी। १५४० खृष्टके वर्षमें इंग्लेण्डेश्वर अष्टम हेनरिके राज्यत्वकालमें डल्सिमार् इंग्लेंड देशमें वहुतप्रचलितहुआ। कथित वर्षमें, राजाधिराज अष्टम हेनरि पीडितावस्थामें डल्सिमार श्रवण कियेसें अनेक तरहाको सुस्थहोलेकर राजाके प्रासादकों अर्थात् राजगृहका प्राय प्रति गृहमें अर्थात् घरघरमें ही एक एक यंत्र स्थापितहुआ। प्रसिद्ध जार्मेन देशके संगीतग्रंथकार अटमेरास लुसिनियास बोलतेहैं डल्सिमार जार्मेन देशमें ह्याक्वोर्ड नामसें प्रसिद्धथा। ह्याकवोर्ड यंत्र अथवा दोनो हाथमें दो शलाका वा ताड्नी लेके वजाउणेकी रीतिथी। हैं दोनों

(१) शाम्बूक यंत्र वडे आकारवाला सामुद्रिक शाम्बूक आवरणद्वारा प्रस्तुत होताहै इसीसें इसका नाम शाम्बूक हुआहै। पाकंगल इसस्थल में विवेचना करतेहैं, कि शाम्बूक शब्दका अर्थ संस्कृत शब्दगत होताहै

क्लामिकाई नामक अपर एक प्रकार का यंत्र प्रस्तु
तभयाथा। सो क्रमसे क्लामिकाई बेलजियम् और
जार्मेनि देशमे प्रस्तु होनेही और आरंभ हुआ।
१७ सो क्लामिकाई यंत्रके अनुकरण करिके १८ष्ट
की षोडशशताब्दीमे क्लामिसिम्बिरीयम्
अथवा सकूजिक सेतार नामसे एक प्रका
रका यंत्र प्रस्तुतभया। प्रसिद्ध लुसि-नियास और
मार सेन्से बोलतेहै, क्लामिसिम्बिरीयमेका आदि
उत्पत्ति सेतारके से भई। अनन्तर क्लामिकाई
और क्लामिसिम्बिरीयम् क्रमसे भर्जिनेल् के स्पिनेट्
१७१६ हार्प सिकर्ड प्रभृति यंत्र प्रस्तुत भया। यथार्थ १२
हार्पसिकर्ड देखनेमे अविकल आधुनातन
अनुग्रास्थ महापियानफोर्ट यंत्रकी न्याई था।
हार्पयंत्रके अनुकरणसें हार्पसिकर्डकी उत्पत्ति है।
बेलजियम्का अन्तःपाती आण्टर्प नगरवासी प्र
सिद्ध रकर् कर्त्तृक अर्थात् रकर् कर्त्तृक हार्पसिक
र्डका विशेष चमत्कारित्व और पूर्णत्व लाभ हुआ।
१७१० खृष्टाब्दमे इटाली देशके अन्तःपाती टस्कानी
प्रदेशकी राजधानी पाडुया नगरवासी सिग्नर् बार्
तोलिमियो कृष्टफाली तोमेंकी तार शालामे ऐश्वर देशा
वाद्यजन्य (अर्थात् इकट्ठ बजाउनेके निमित्त फ्लोरेन्स ला
नगरमे पियानफोर्ट यंत्र पहिलें प्रस्तुत कियाथा।
१७१८ खृः वर्षमे सुविख्यात फ्रान्स देशका हार्पसिक
र्डके निर्माणकरनेवाला मेरियस् पियान यंत्रको निर्मा
णकरिके आपने देशमें प्रचलित किया। इसीतरु

यथा- "शम्बूकात् जात इति शाम्बूकः"
१७ क्लामिकर्ड और क्लामिसिम्बीरियम् एहि दोनो यंत्रके मध्यमे
कौनसा आगें और कौनसा पीछें प्रस्तुत हुआ, इस संबंधमे तार
यंत्रके इतिहास लेखक गणके मध्यमे अनेक मतभेद हैं।
प्रसिद्ध मेः केद्रिस् साहेबके मतमे क्लामिकर्ड यंत्र आगे भया।
† वीणजातिके यंत्र सामान्य और और देशमें प्राय सेतारना
मसे व्यवहृत भया।
१७०० संस्कृत ग्रंथकार जिसतरु वीणायंत्रको मनुष्य देहकी
अनुकृति बोलके लिखे गयाहै तैसें प्रसिद्ध मार्सेनासकेम
तमेंभी स्पिनेट् यंत्रको मनुष्य देहका

स्वल्प कालके मध्यमे एकि पियान यंत्र, इउरूपके सर्व
वादि सम्मत और सर्वदेश प्रचलित होगया। सो क्रमसें
इसका निर्म्माण कौशल धार्णि पाद्य प्रभृति वहवि पारि
धकी उन्नतिके साधन वास्ते नानादेशके शिल्पीगण
विशेष अध्यवसायके सह कारसें चेष्टा करने लगे। पारिश्रम
उनके मध्यमे एब्रड्उड् कलर् प्रभृति कया इत्यादिसम
शिल्पीगण पियान यंत्रके करनेवाले उसके संबंधसे अ
त्यंत ख्याति लाभ किया था क्या वडे प्रसिद्ध लोकोमे भए।
प्राय ८ आठ वर्ष व्यतीत होएसें हमारे देशमे इसी
यंत्र कानूनैंका प्रतिरूप स्वरूप 'सुरबहार' नामे एक यंत्र
प्रस्तुत किया। सो सुरबाहार इस तरह यंत्र निर्माण मे
वङ्ग देशका कोई एक विख्यात संगीतज्ञ अर्थात् संगीतके
जाननेवाला उससे निर्माणकी विधि को जानलिया —सोउ
सी महोदयही और सी यंत्रका नामकरण किया था।
सोई कलकत्तेमै स्थित कोई एक प्रसिद्ध यंत्र निर्म्माता
अर्थात् यंत्र निर्माण करनेवाला सोई यंत्रकी निर्म्माण विधि
संपादन किया। उसी निर्माण करनेवालेके निकट रहने
यथार्थ सें हमलोकभी आविर्भाव उसी तरह करनेलगे अथच
तिसकी अपेक्षा करके सुंदरतर और उत्कृष्टतर और एक
यंत्र प्रस्तुत करलिया अर्थात् होस्य यंत्र निर्माण किया।
सो सुतरां ओह यंत्र नूतन नहीं था, हमारे देशमे एहि इस तर
हमैभी स्थान स्थानमें प्रचलित है मैं जानता हूं, अनेक
मुसलमान संगीतदर्शी इस यंत्रके वजाउनेमे विशेष क
र्के कुशली अर्थात् बुद्धिमान है। वस्तुतः एहयंत्र का
नूनका अनुकृति व्यतीत क्या- विना और किछभी नहीहै।
एड्ओयार्ड रिम्वल्डेर पियान फोर्ट नामक ग्रंथमे
इन सिमार्ह अध्यायमो तिसकाएक चित्रमय प्रतिरूप
प्रतिरूप वोलकर लिखागयाहै। मारसेनाम वोलते है।

विवरन।

देखनेमें आता है। सुतरां यह यंत्र नूतन बोलनेसें किछ भी प्रयोजन सिद्ध नहिं होसकता है। ये यंत्र मिसर देशमें कानुन, और खडौर पारस्य प्रभृति देशमें कानून कहते हैं सो ई प्रचलित है— जिसके अनुकरणमें अवरोप भो इउ रोप देशका प्रसिद्ध यंत्र 'पियान' प्रसिद्ध होया है— सो यंत्र जो भारतके सरू आधिक वतार प्रचलित कात्यायन वीणा था सोई एक प्रकार प्रतिपन्न भया।

संख्या १५।

प्रसारणी वीणा।

दोई चिकारी परित्याग सें पाँचही तार विशिष्ट एक कच्छपी वीणाके दंडके पासें मो और तीन कील कस्यु क एक क्षुद्र दंड संलग्न करणेसें प्रसारणी वीणा होती है। इसी यंत्रके प्रधान दंडसें १८ थान और प्रतिरिक्त क्षुद्र दंड तें भी १८ थान सभ मिलाके ३२ बत्तीस थान सारिका अवि कल कच्छपी आदि वीणाके अनुकरणमें विन्यस्त हैं। यथार्थ

प्रधान दंडस्थ पाँच ही तार कियत् परिमाणसें रंजनी वीणाके मत बंधन करणेकी रीति है और क्षुद्र दंडस्थित तीन तार प्रधान दंडके तार षड्सुर के मध्य सप्तक करिके बांधते हैं, अर्थात् प्रधान दंडके दोई चिह्न विशिष्ट तार जिस सुर में बांधी रहती है

सो क्षुद्र दंडस्थ दोई चिह्न विशिष्ट

तार है तिसकी अपेक्षा करिके एक सप्तक उच्च करिके बांधते हैं। किन्तु प्रधान दंडके दोई चिह्न विशिष्ट तार उदाराके निम्न सप्तकके षड्ज करिके बांधनेकी रीति है, सुतरां क्षुद्र दंडके दोई चिह्न विशिष्ट तार ही उदाराके षड्ज स्वरमें आबद्ध होती हैं। अपरापर तार जिस जिस स्वरमें बांधते हैं, सोई निम्नमें अर्थात् नीचें दरखाइता है। यथा—

प्रधानदण्ड।

76

दण्ड दण्डिका।

सेतारादि अन्यान्य यंत्र जिस पद्धतिसें बजाउते हैं न
यथार्थ इसकी प्रसारणी वादन अविकल तिसके अनुरूप नहीं है।
प्रसारणी समतल स्थानमें वा क्रोडमें अर्थात् आपनी
ठीक गोदमें, समभावसें शायित करिके वंश वा काष्ठनिर्म्मि
त एक दण्ड शलाका दक्षिण हाथके मुष्टियोगसें धारण
करिके अनन्तर तिसीके आघातसें बजाउते हैं
और बामे हाथके वृद्धांगुलि तारके ऊपरमें सारिका सा
रिकामें टीप और घर्षणके सहकारसें संचालन क
रते हैं। किन्तु प्रत्येक आघातही यंत्रके सारिका
शून्यस्थानमें होना उचित है। वादकगण स्वेच्छा
बदले नुसारसें शलाकाके परिवर्त्तमें कोणस् भी व्यवहा
र कर सकते हैं। प्रसारणी वीणामें निम्नलिखित सिद्ध
सम मिलाके नियमसें दोनों दण्ड साकल्यमें सार्द्ध त्रिसप्तक स्वर उत्पन्न
होजाता है। यथा—

प्रधान दण्ड।

न्युस्दंडिका।

इसयंत्रमै दोनो दंड योडनेका तात्पर्य्य एह है जो, औरऔर २

प्रथमतः अन्यान्य यंत्रकी अपेक्षाकरिके इसमै एक

सप्तका अधिक स्वर अनायासले प्रतिपन्न होताहै, जिसका

रुद्र अपरापर वीणादिसें सार्द्धद्विसप्तकका अधिक औरऔर ४

स्वर नहिं पाया जाता, किन्तु इसमै सार्द्धत्रिसप्तक पर्य्य

न्त विना क्लेशसें प्रतिपन्न करसकते हैं द्वितीयतः

अर्थात् दूसरेसें प्रधान दण्डस्थ तारका सुरभी व और

न्युस्दंडस्थ तारका सुर एक सप्तक उच्चकरिके बांधते हैं,

बजाउणे के समयमो समय समयमो दोनो दंडका उच्च

औरनीच स्वर योगदेणे सै बाजा विशेषकर्के अलंकृत

और सुणनेमै अतिमधुर होताहै। प्रसारणी वीणा भी

आधुनिक यंत्रहै।

संख्या १६।

स्वर वीणा।

सङ्गीतकेअनुसार।

स्वरवीणा संस्कृतानुयायी अतिप्राचीन यंत्रहै, एह

देखणेमो अनेक अंशमै रवाबके मत। अर्थात् सा है।

इसका ध्वनि कोष अलाबू निर्मित और दंडादि अव

शिष्ट अवयव समुदय काष्टका ही होताहै। सभ १

~~मृदंग।~~

मोचङ्ग।

र वावका ध्वनिकोश जिस तरहासें चर्म्माच्छादित होताहै सो इस्का ध्वनिकोश तिस्के वदले काष्ठफलक द्वारा अर्थात् काष्ठकी फट्टी साथ आच्छादित होता है। स्वरवील्लकी तारें वारही निम्नलिखित स्वरमे आवद्ध थाके अर्थात् वाँधीरहितियाँहैं। यथा—

इस यंत्रमै उदारा, मुदारा और तारा एही तीनही पूर्ण सप्तक पाया जाताहै।

संख्या ८।

मोचङ्ग।

मोचङ्ग यंत्र विशुद्ध लोहेकर्के निर्म्मित होताहै और देखनेमें कितनेक अंशमे त्रिशूलके अग्र भागकी न्याई है। इस्के मध्यभागमे एक थान पतला सरू लोहेका पात्र संवद्ध होताहै। सो यंत्र वामे हाथके सहाय्यसे दांत द्वारा दवायकर दहिने हाथ की तर्जनी द्वारा उक्त लोहेके पातमे आघात देके वजाउते हैं। इसमै एक से अधिक स्वर प्रायनिष्पन्न नहिं होता। स्वरके स्थायित्व रक्षाके निमित्त प्रति आघातके संग सङ्ग मे अतिशय जोरसें ५१

श्वासग्रहण करते हैं। मोचंग बजाउने के समय एही वि
शेष को प्राप्त है और इसे सर्वदा मोचङ्ग बादन करते हैं,
तिन्हू कों प्राय हि दन्तरोग और श्वासरोग से आक्रान्त
होजाते हैं। जेकर इसी यन्त्र का संतोष जनक ध्वनि
माधुर्य्य अच्छा नहिं लगे, किन्तु समय समय मे अभ्यंत
रिक ऐक्य तानिका सम्मिलनसे बाजते होयों एक प्रकार
सुणनेसें मंद क्या बुरा नहीं लगता। चतुर मोचङ्ग के
बजाउने वाले लोक मयन वा मोम द्वारा मोचंगके स्वर
कों उच्चनीचता संपादन करिके बजाउते हैं। एह यंत्र
भी अति प्राचीन है, कोई कोई संगीतज्ञ तुरहली महा
त्मा इसीकों भारतवर्षीय हार्प करिके प्रतिपन्न करते हैं,
किन्तु एह बात हमारे कों युक्तियुक्त बोध नहिं करती।
जिसकारण इसमें हार्प का कोई सादृश्य भी लखित नहि होता।

सारङ्गी।

संख्या १८।

सारङ्गी यंत्र भी अति प्राचीन काल सेलेकर
भारतवर्ष मे प्रचलित है, इसका ध्वनिकोष भी दण्ड
दोनो हि एकखान अखण्ड काष्ठ द्वारा निर्मित, ध्वनि
कोष भी पतले चर्म द्वारा आच्छादित और दण्ड भी
काष्ठ की पटरी से आवृत होता है। और दंड के ऊर्द्ध्व भा
ग मे दोनो पार्श्वो मे दो दो करिके चार ही कीलक हैं
और एहि चार कीलक मे चार गाछि अर्थात
तन्तु संबद्ध किया जाता है। दंड के पार्श्वो मे निर्म्माण
करने वाले की इच्छाधीन ऊपर कितनेक कीलक
और तिसी मे कीलक संख्यानुगत अर्थात अनुसार

पितल वा निर्म्मित तार पार्श्वतंत्रिका रूपसें संयोजित करी जाती है। उक्त खित प्रभात चारही तन्तु अर्थात् तांत निर्म्मित
१८ खित भिन्न भिन्न स्वरमें बांधी जाती है। यथा —

लंबभावसे एह यंत्र क्रोडमें अर्थात् अंसगमें रखके वक्षस्थलके गोदमें १
सहकारसें स्थापन करिके बामें हाथकी वृद्धांगुलि भिन्न से २
अपर चार अंगुलिके नखके घर्षणसे और दाहिने हाथमें
ली हुई पतली केसाथ बजाउते हैं। नखके घर्षण तन्तुके
पाससे पाससेभी करना चाहिये। सारङ्गी यंत्रमें निम्न प्रदर्शित
अर्थात् नीचे रखा हुए नियममें पूर्ण विसप्रक प्रतिपन्न होता
है। यथा —

वाली १
सारंगी कोमलकण्ठी अर्थात् सुंदर कोमल कंठ स्त्रीजाति
के सुंदर स्वरके अनुसार होकर बडे समाजकी नृत्यशाला
में व्यवहृत होती है। सारङ्गी की ध्वनि अति गायकके
मधुर, अथच कंठस्वरानुरूप अर्थात् कंठस्वरके सदृ
श, इसतरह की कोई कोई स्त्री सुंदर कंठवाली स्त्रीलोकके
मध्यमें बडी श्रेष्ठ सारङ्गी के और कंठके स्वरके सहित
इसकी ध्वनि इसी तरह सम सुरमें मिलित होजाती है जैसे,
उत्तम सुरज्ञ संगीत व्यवसायवाले भी अति कष्टसें दोनो
सुरोंका पार्थक्य अर्थात् भिन्न भिन्न स्वर समझना
सहसा अर्थात् सतावीसे स्थिर करनेमें कोई नहि समझ
सकता, यंत्रकी ध्वनि और कंठस्वर एह दोनोंहि एक
बोलनेमें प्रतीत होता है।

अर्थात् एह यंत्र जन विसप नामक को निर्माण किया होयाफे राकेसे निर्माण्यकियो ॥

एह यंत्र भी बहुत चिरकालसे भारतवर्षके प्राय सर्वत्र एहि बहु
लभावसे प्रचलित ओर धनुत्तत यंत्रका आदि बोर कर
प्रसिद्ध है, एह जन विसप कर्तृक प्रउवादित है वे लैयम् जि २
राज्यके राजधानी मे ब्रुसेल नगरमे रहिलेवाला संगीतविद्या
लयका अध्यापक एफ् जे फेटीस् साहिब कृत सुविख्यात बाजु
लीन निर्माता एस् टेडि भेस्त्रियास का जीवनवृत्तांत ओर धनुर्यंत्रका
आदि उत्पत्ति विषयक इतिहास ग्रंथमे स्पष्टाक्षरमे लिखिते है।
किता है रवइ जन्मके ५००० पांच हजार वर्ष पहिले महावल
पराक्रांत लंकाधिपति रावण राजाही इसी जातिके प्रथम यंत्रकी
री सृष्टिकरीथी। पीछेसे नाना देशों अर्थात् अनेक प्रकारके
देशोंमे किंचित् किंचित् अवयवभेदसे नानानामसे
प्रसिद्ध भई। युरोपके देशमे भायलिन्, चीनके "आ
रहीन" जापानके "कोकीन" पारस्यके "कामांचा"
सारंगीका अवयवभेद मात्र, एसिरिया देशमे बी इस
का प्रचारथा अप्रचारित नहीथी।

संख्या १९।

एसराज्।

एसराज् यंत्र अति आधुनिक है, अर्थात् अबहीव
ना है, सेतार ओर सारङ्गी एहि द्विविध यंत्रके मिलालेसे
इसकी उत्पत्ति है, एह यंत्र खर्परसे लेकर दंडपर्यंत समु
दय अवयव बही काष्ठनिर्मित होता है। खर्पर भी कितनेक यथार्थ ५
अंशमे सारङ्गी की न्याई है ओर दंड भी अविकल
सेतारके दंडके अनुरूप अर्थात् सदृश है। दंडके ऊप
रभागमे जोडी होई पांच ही कीलकमे पांच ही तार आ
बद्ध करी जाती है, सेतारकी पांच ही तार जो जो धातुनि
बांधी १

र्म्मित और जिस जिस सुरमै बांधी रहिती है, इसका तार पांचमी और ठिक सोई सोई धातु निर्म्मित और सोई सोई स्वर मै बंधने [illegible] की रीति है। अधिक तो इसमे पित्तर की पार्श्वतंत्रिका व्यवहृत होती है, किन्तु तिहू की

बजाउलेवा लेकी ५ संख्या और सुरबंधन वादक की इच्छा के आधीन है। इसकी पार्श्वतंत्रिका एप्पर रूपसे बाजती नहीं है, प्रधान तार के कम्पनेसें हि प्रतिध्वनित होती है। वादकगण बामे हाथके हो लेपकडनेके आश्रय

ए सें यंत्र लंबभावसे खडा करिके दहिने हाथमे लोह धनुषी करके वादन क्रिया निष्पन्न कदिया याकेन। अर्थात बजाउते रहिते हैं। सेतार वादन की अंगुली सें इसके बजाउले मै बामे हाथकी तर्जनी और मध्यमा हि दोनो अंगुलियों का ही बडा व्यवहार देखा जाता है।

सर्वदा एक तारकी लोह निर्म्मित तायकी तार ही बाजती रहि तीहे, अपर तार प्राय सुर सहयोगिता के निमित्त ही व्यवहार कराने योग्य है। एह यंत्र भी कोमल कंठी स्त्रीजाति के गानेकी मधुरता वर्द्धन निमित्त ही प्रयोजन योग्य होती है और तिसके गीन के अनुसार होकर बजाती है। कभी कभी सेतारादि यंत्रकी न्याई इसका स्वतः सिद्धरूपसेंभी वादित होती देखी जाती है।

संख्या २०।

मायूरी वा तायूस।

मायूरी यंत्र एसुराग का अवयव भेदमात्र है। केवल इसके खपर मूलमै एक काष्टादि निर्म्मित मयूर की ग्रीवा सहित मुख योजित रखा हो या देखा जाता है। मयूरास्य संयोगसें निर्म्मित होता इस

वोलतेहैं कि एहियंत्र संस्कृत भाषामें "मायूरी" ओर पारस्य भाषामें "तायूशा" नामसें प्रसिद्ध है। इसका धारण, स्वरबंधन, वादन ओर प्रयोजन प्रभृति अर्थात् इत्यादि समुदायही एसराज यंत्रकी न्यांई है। वास्तवताकर्के एह यंत्र थोडेहीकालका बनाहुआ है। विविध अनुसंधानसें प्रतीत होताहै, उत्तर पश्चिम हिन्दुस्थानका कोई पुरुष चालीस ४० वा पंचाश वर्षोंके मध्यमें एसराज यंत्रमें एक मयूरास्य योडकरिके तायूशा नामसें विख्यात करदियाहै। पारस्य भाषामें मयूर अर्थात् मोर पंखी कोंमुखवाले यंत्रको तायूशा बोलतेहैं, कोईकोई वङ्ग देशस्थ विष्णुपुर के अंचलका सेवाराम नामक एकजन शिल्पी कों, तायूशाकों निर्माण करनेवाला बोलतेहैं और येह वात स्वीकारभी कियाहै।

संख्या २१।

अलाबू सारङ्गी।

अलाबू सारंगी सारङ्गीका प्रकारभेदमात्र है। विशेष के मध्यमें एहजो, सारंगीका समुदाय अवयवभी दारुनिर्मितहै, इसके खर्परसें लेकर भाग दंड प्रान्त पर्य्यन्त समुदाय ओर पश्चाद्भागभी एक अखंड अलाबू द्वारा प्रस्तुत होताहै। अति प्राचीनकालसें इसी यंत्रकी खर्परीकों कोईकोई नारिकेलकी खोपरी द्वारा निर्मित होताहै। अलाबू सारङ्गीका अंगुलिस्थान ध्वनि पट्टक प्रभृति क्या इत्यादि सभ अपरापर अङ्ग प्रत्यङ्ग काष्ठकाही होताहै। इसका धारण, पार्श्वतंत्रिका, सप्तककों, स्वर बंधन ओर प्रयोजन प्रभृति समुदायभी सारङ्गीकी न्यांई है। किन्तु धारण ओर वादन

ओर ओर ३

अलाबीमें सारंगीसें कि एक विशेष लक्षित होता है। सारंगी की न्याँई यंत्रभी क्रोडमें अर्थात् गोदमें दाँड करिके नाप कड़ कर इसके पंथिको सन्निकटस्थ खर्परांशको वामें स्कंधमें स्थापनपूर्वक वामहस्त कि एक परिमाणसें ऊंचे तकरिके उक्त हस्तका ताल और अंगुलिकी सहकारसें धरि ते हैं; और वादनकालमें सारङ्गीसें जिसतरह तन्तुके नीचें नीचें वामे हाथ्यके नखघर्षणसें स्वर निर्गत होता रहिता है, इसमें तिसके परिवर्त्तमें अर्थात् वदलेमें तारके ऊपर ऊप रमें अंगुलीके टीप देनेसें इउरोपी। वाइलीन यंत्रकी रीतिसें संपूर्ण स्वर प्रदर्शित अर्थात् दरवाउते हैं। फलतः वाइलीन और अलाबू सारङ्गी एह दोनोंहि एक जातिके यंत्र हैं, इसीवास्ते कोई कोई इउरोपदेशके इसीको भारतवर्ष का वाइलीन बोलके स्थापित किया है। जो होवे सो हाय अलाबू सारङ्गी अतिप्राचीन वोलकर इस वंगदेशमें प्रसिद्ध है।

संख्या २२।

मीन सारङ्गी।

मीन सारङ्गी एसराजका रूपान्तर मात्रही हय। दोनोके मध्यमें विभिन्नता एहि जो, मीन सारङ्गीके ध्वनिकोषसें लेकर दंडप्रान्त पर्यन्त समुदाय पश्चाद् भागभी एक अखण्ड दीर्घाकार अलाबुनिर्म्मित होता है। इसकी सारिकाकी संख्या और विन्यास, कीलक, तारकी संख्या और योजना, पार्श्वतंत्रिका का नियम, स्वरबंधन, धारण, वादन, अङ्गुलि विक्षेप प्रभृति अर्थात् इत्यादि सभ जितनाक विषय है सो एसराजके अनुरूप है। यंत्रके खर्परके मूलदेशमें काष्ठादिनिर्म्मित एक मत्स्यका मुख जोडा हुयाहोता है इसी यंत्रको मीन सारङ्गी बोलते हैं।

यंत्रकोश ।

संख्या २३ ।

सुरसङ्ग वा सुरसों ।

सुरसङ्ग यंत्र देखनेमें एसराजकीन्याई है ।
एसराजका जोजो अङ्ग जिस जिस उपादानसें नि गत
र्म्मित होताहै, इसकाभी ओहीओही अवयव उसी सकल
उपादानसेंहि तैयार प्रस्तुत होताहै । इसके बादनादिका
नियम भी अविकल एसराजके हि सदृश हय । केवल सभ ५
एसराजकी न्याई पार्श्वतंत्रिका नहिं रहितियां "सुरसंग"
एहि स्वतंत्र नामही प्राप्तिहै अर्थात् प्रसिद्ध है, बङ्ग दे
शके अन्तःपाती विष्णुपुर अंचलमें इसप्रकारके केपासे ८
यंत्रका प्रचार बहुत देखनेमें आउताहै, सोतहांके रहि
नेवाला सेवाराम दास उसने एहि यंत्र पहिलें निर्माण किया ।

अपना अर्थात् अब जो सकल सभ्य तंत्रयं बीलादि बजोर ६१
त्रका प्रचलन प्रतिदिन अधिकसें अधिक देखाजाताहै,
तिसके समुदायका विस्तारसहित विवरण देखाहै
इससें भिन्न बहुत यंत्रोका नाम सङ्गीत ग्रंथमें रहि गोय
रहे किन्तु सो सकल यंत्रका प्रचलन नाहिं देखीय
इस स्थलमें तिन्हूसभ यंत्रोका नामभी उल्लेख नहि कि
या, सो परिशिष्टमें यथास्थानमों लिखेंगे ।

अर्थात अकारादि वर्णक्रमसें ।

3

ग्राम्यततयंत्र।

संख्या २४।

सारिन्दा।

सारिन्दा यंत्र किसी किसी सभामे भी व्यवहृत होताहै। वास्तवतासे विचार करिके देखा गयाहै जो एह ग्राम्यके विना कँही सभाके यंत्रश्रेणी मे भुक्त नही हो सकता। सारिन्दाका समुदाय अङ्ग भी काष्ठनिर्मित है, इस का ध्वनि कोशा कितनाक भाग चर्मकर्के आच्छादित और कितने क अंश खाली रहिताहै। इस यंत्रमे घोडेकी पुच्छके केश निर्मित तीनँही तार तीनँही कीलकमे निम्नलिखित सुरमे आबद्ध किया जाताहै। यथा——

सारङ्गी यंत्र भी सारिन्दाके अनुकृत है अथवा सारिन्दा सारंगीके अनुकृत एह स्थिर करना किछु कठिन है। वस्तु संबंधकी उन्नतिको विषय विचारकर्के देखणेसे प्रतीत होताहै कि सारिन्दाही आदिम यंत्रहै, काल सहकारसे देशकी सभ्यताके सङ्ग सङ्गसे संस्कृत होकर सारङ्गीके आकारमे परिणत होके वर्त्तमान है, किन्तु इसमैभी एक विषम संदेह उपस्थित होताहै; जिस कारण संस्कृत सङ्गीत ग्रन्थ समूहमे सारिन्दाका नामोल्लेख नँही है, तब सारङ्गा नामक यंत्रका नाम

अर्थात कोलसा पहिले निर्माण किया गया ९

देखनेमे पायाजाताहै, वोयहयकि सारन्धाका हि नाम अपभ्रंश्यासैं सारिन्दा कहितेहैं। सारंगी का नाम प्राय सकल प्रदेशमे हिं लदिताहै। सो होवे पर दोनोयंत्रही अति प्राचीनहै।

संख्या २५।

एकतन्त्रिका वा एकतारा।

चर्म्माच्छादित अर्थात् चर्मकरिके मढाहोया एक अलावू खर्परमे एकही वांस दंड जोडके और उसी दंडके ऊपरके भागमे एकमात्र कील के संवद्ध करनेसें एक तंत्रिका वा एकतारा यंत्र प्रस्तुतक्या तियार होताहै। सो उक्त यंत्रके कीलकमे एक मात्रि लोहेकी तार संयोजित होतीहै। सोवादकगण एहि तारही आपने कंठ के अनुसारी करिके आवद्ध करि लेतेहैं। इसी यंत्रके वजानेमे वजाउने वालेको किंचिन्मात्र परिपाटी नही, यंत्रभी दहिने मोढेमे स्थापनकरि के दहिने हाथकी तर्जनी द्वारा पुनः पुनः आघात करिकें तंबूरू वीनाके अनुकरणमे वजाउतेहैं। एकतन्त्रिकायंत्रभी अति प्राचीन और एक तंत्र विशिष्ट बोलके एक तंत्रिका नामसें वर्णितहै। भारतवर्षके सर्वत्रहि प्रायइसीयंत्रका प्रचलन देखा जाताहै। बाउल, वैरागी प्रभृति भिक्षोपजीवी हैं सो प्राय इसी यंत्रकी सहायतासें ग्राम्यगान करिके द्वार द्वारमे भिक्षा मांगतेहैं, तिनसे भिन्न और कोई संप्रदाय द्वारा भी इस यंत्रका व्यवहार देखा नहिं जाता।

एकतारा

संख्या २६।

आनन्दलहरी।

आनन्दलहरी ग्राम्ययंत्रोंके मध्यमे परिगणित है। प्राय अर्द्ध हस्त परिमित एक शून्य गर्भ काष्ठका खोल, एक गांधित तन्त और चर्म्म कर्के आच्छादित एक मृण्मय वा काष्ठादि निर्मित भाण्डा एहि तीन प्रकार उपकरणसे आनन्दलहरी यंत्र प्रस्तुत होताहे। उल्लिखित खोलका एकमुखकी अपेक्षाकर्के किंचित प्रशस्त और चर्मद्वारा आच्छादित करणा चाहिये और उसी आच्छादक चर्मको ठीक मध्यस्थल मे, एकहि छिद्र करिके पूर्व कथित तन्तु का एक प्रान्त आबद्ध कर्के अपर प्रान्त उक्त मृत्तिकादि निर्म्मित भांडके आच्छादक चर्मके मध्यस्थित छिद्रमे संलग्न करेहि। यंत्रका काष्ठ निर्म्मित खोल भी वामी कक्षामे दृढ रूपसे पकड़ भांडाभी वाम हस्तमे बल सहित आकर्षण करेहि और दक्षिण हस्तमे धारण करी होई जो शलाका है तिस्के द्वारा तन्तुमे आघात करणेसे वादनक्रिया निष्पन्न होती है। वाम हाथके आकर्षणसे न्यूनातिरेक ही स्वरकी उच्चनीचता संपन्न होताहे। इसी यंत्रको ही भिक्षुगण व्यवहार करते रहिते हैं।

यंत्रकोष।

संख्या २७।

गोपीयंत्र।

एकही डेढ़ हाथ परिमित ग्रंथिके सहित सम्पूर्ण वंशदंडका ग्रंथियुक्त प्रान्तके छः सात अंगुल अग्रखण्डभावसे रखकरिके अवशिष्टांश चारही समान भागसे चीरकर्के तिसके दो अंश परित्यागकरणसे जो एसे दो अंश बाकी है तिन्हूके प्रान्तमे आनन्दलहरीके खोलके अनुरूप अर्थात् सदृश एकही अलाबू निर्मित खोल आबद्ध करिके तिसमे आनंदलहरीकी रीतिसे एक लोहेकी तार संलग्न करिके उसी तारके अपर
वेधा प्रांतमे उक्त दंडके अविकृत भागमे रोपित एक कीलकमे संबद्ध कर्त्ते हैं। यंत्र दंडके प्राय मध्यस्थल दक्षिण हस्तकी तर्जनी परित्यागसे अवशिष्ट चार अंगुलिके सहायतासे पकड़कर तर्जनी द्वारा तारमे आघात कर्के इसको वादन क्रिया निष्पन्न कर्त्ते हैं। दंडधारक अंगुलि चतुष्टयके आकुंचन और प्रसारणसे इसके स्वरकी नीचता और उच्चता प्रकाश पाती है। एह यंत्र भी बाउले प्रभृति भिक्षुकगणही व्यवहार कर्त्ते रहिते हैं।

जो संपूर्ण ततयंत्रका विषय है अर्थात् वीणादिक जो बाजे हैं एह उसका विषय कहिते हैं विलम्ब आदि, तिनके मध्यमे जो अनेकही एहआसिया विशेषतः एहि भारत

ततयंत्रकी उत्पत्ति ।

वर्षमे उत्पन्न होकर नाना देशोंमें नानाविध संज्ञाकर्के
प्रचलित हुए हैं — अङ्ग भेदसें विविध विरूपित प्रदर्शित
कर्के विख्यात हैं सो एक प्रकार प्रतिपन्न भये हैं ।
कोई यंत्र किसी स्थानमें अविकल अपरिवर्त्तित । अर्थात्
उसी तरहसें रहे हैं बदले नहिं गए और किसी स्थानमे
आकारसें कितनेक बदले गये हैं । कितनेक यंत्रकी
पहिली संज्ञा देश भेदसें भाषाभेदसें वर्णगत विकृति
प्राप्त होजाती है । किन्तु परस्पर होये मूल अनुसंधान
कर्नेहीसें जाने सकते हैं जैसा ओही एकही यंत्र को
ई एक देशविशेषसें उत्पन्न होकर विभिन्न देशमे
विभिन्न नाम वा आकार धारण किया है सो उद्
भवका विलास विभ्रम भिन्न हुआ है । और केते न १२
ही यंत्र हुए हैं कि वर्त्तमान समयके निर्माणकरे हुए
प्रसिद्धतम अर्थात् विख्यात यंत्र सकलके पत्तनभागि
स्वरूप अर्थात् नगरके यंत्र होगये हैं । सो भाषाके तत्व
वेत्ता जो हैं औ हि विभिन्न देशप्रचलित भाषासमूहको
परस्पर सादृश्य समालोचना कर्तेंगए इसी तरह कित
नासत्य का आविष्कार वा प्रघट करते हैं । अवश्योमें
ऐसा दिन आवे जिनदिनमे हमारे लोकोंका एहि वाक्य
सत्यकारिके प्रतिपन्न होवे जो, पश्चिममे पारस्य
वा सिरिया देशान्तर्गत इलाए प्रदेश, पूर्वमे मगधदेश,
दक्षिणमे विंध्यगिरि और उत्तरमे हिमाचल एहि
चतुःसीमान्तवर्त्ती विस्तीर्ण भूमिभागके अधिवा
सियोंके निकट इउरोप और और अनेक देशोंकी
न्याई अधिकांश सङ्गीतयंत्रका विशेषकर्के
ततयंत्रके निमित्त चिरकालके निमित्तसें अधमर्ण
अर्थात् कर्ज्जदार रहे हैं । हमलोकोंका एहि मत है ।
और जेकर इतिहास पर्यालोचना करि अपना वि
चारकर्के जो ऐसा होवे तब जान सकते हैं जो, प्राय
संगीत समुदाय इउरोपके देशोंके इतिहासलेखक गण और
हमारे लोक इसी मतको संपूर्ण अनुमोदन कर्ते हैं ।

सो सभभी एहि कहिते हैं "हमारे देशमै जो, सकल प्र
सिद्धतम संगीतयंत्र प्रचलित हैं सो सभकाही आ
दिम स्थल पूर्वांचल — सकलके ही मध्यमे कोई कि
पूर्वाञ्चलके सकलयंत्र का अनुकृति हैं, कोई
वा उह्के आकारके परिवर्त्तनसंभूत अर्थात् उह्के
बदलनेसें होयाहोया।" सुप्रसिद्ध जो फिटिस नामकहे
तिस्के मतमेभी पूर्वांचलही यउरोपके देशों का
संगीत देवीका प्रोशाय होलाहे अर्थात् संगीत देवीके वा
ल्यावस्था का पघूड़ा है। सो कहिते हैं "एहि पाश्चिमां अध्यात्
चलमे इसतरहा कुछभी नाहिं जो पूर्वांचलमेंनहिं भया।" भया

जेकर ओह यउरोप देशके सभ पंडित पूर्वदेशके जितने
सङ्गीत यंत्रका जन्म देश बोलकर मुक्तकंठसें अंगीका
र कर्त्ते हिं, तदवी कोई इसी पूर्वकाससके कोई एक देश
विशेषके आदिम जन्मभूमि बोलके सन्मान देनेको
नहिं चाहते। उह् सभके मतमे सभ यंत्रके निमित्त
यउरोप का मुख्य संबंधसें वा कि गौण संबंधसें प्रधानतः
मिसर, अरब, आसिरिया और भारतवर्ष एहि के दे
शके निकट विशेष ऋणी हैं। किन्तु उह् सभके मध्यमे
कौनदेश ये प्रकृत जन्मभूमि सो तिसको स्थिर नहीं
कर सकते। सभकाही इस वास्ते मतभेद लक्षित स्थान
होताहे। पहिले बुद्धिमान लोक कालु निर्णयमो उह्की
आशा त्यागगई हैं। वास्तवतासे उह् सभका जन्मका
ल इतना प्राचीन हे जो इतिहासके अधिकारके
भी बाहर नहीहे — और तिस्का ओही बाहरका
भाग एक घन विस्तीर्ण जवनिका द्वारा अंत
रित हे अर्थात् बीचमे व्यवधानयुक्त होगयाहे।
उह् सभके मध्यमे कोई कोई बोलते हैं, कि जो
कितनेक यंत्र मिसरदेशसें, कितनेक अरब

देशसे, कितनेक वा आसिरिया से और सभ देशों
से बहुत भारतवर्षसेही कितनेक यंत्र उसी तरहके रहे और
कितनेक रूपान्तरित होकर आसियाके और और
देशोंमेंभी और इउरोप देशमे उहांसे ले आए हैं,
सभप्रकारके प्रत्युत्ततयंत्रका और आधिकांश और
और तरहके ततयंत्रका जन्मभूमी जो भारत वर्षही है,
तिसके विषयमे सभही एक अविसंवादी का-
मत प्रकाश किया गया है। सुप्रसिद्ध
मन्सियर मरिराट साहिब कहते हैं जो, "जितने
कर्षनुत्ततयंत्र पहिलेसमयमे आसिरियादेशके, कि
हिब्रू कि, मिसरदेशके सबूसभके मध्यमे कितनेक
हि परिचित नहीथे। जेकर और कोई कोई इतिहास
लेखक करके बोला गया है जो, हिब्रू देशके उसी
तरह कितनेक यंत्रथे किन्तु तिन्हके मध्यमे सभ
के अग्रगलित्रको पुनः बोलकर भ्रमथा। सोवास्ते
वतासेभी प्रत्युत्तत यंत्र संपूर्ण भारतवर्षकेहीहैं।
वाल्लस्क नामे हिन्दुसभका जो एक अतिशयकर्के
पुरातन प्रत्युत्ततियंत्रथा सो प्राय पंचसहस्त्र व
र्ष व्यतीत हुए भी सकुनाधिपति रावण निर्माण करके
आपलेनामकर प्रसिद्ध किया है। चीनका उड्कीन,
जापानका कोकिउ, हिन्दुदेशका सारङ्गी और सारिन्दा
और आरब और पारस्य का केमानगे और रबाब
ए इसंपूर्णही उसीएकहीयंत्रके प्रतिरूप के बिना
और किछनही था। इसी तरह प्रतिरूप यंत्र
जो आसिरिया और हिब्रू देशमेंभी अवश्यही
उत्पन्न होसकते हैं सो कितनेक संभवपरहैं। ए
एक जो कि टिस तिन्हको रोगामि। किन्तु सो फिकट्
देला हिष्टारिड देला मिउजिकड नामक ग्रंथमें
लिखाहुआ है कि जो सभ प्रतताततयंत्र इउरोप से

पहिले उत्पन्न होकर आसियाके और और देशमें ले
गयेहैं। सो कहितेहैं प्रस्तुत यंत्र पहिले से इटाली
मै उत्पन्न होकर ग्रीस मे और तिससे होके आसिया
माइनर मे और पीछेसे पारस्य और आरबदेशमे
के मानुगो एराउसि नामसे प्रचलित हुआहे।
किन्तु इउरोप देशके युद्धयात्रावाले सभलोक जिस
सालमे जेरूजेलम से मुडकर्के आए तिस समयमो
उह सभके साथ साथही ओहि यंत्रकों और लोकभी
आपले देशमे लेगए। किन्तु भारतवर्षके नारदा
सूभी अपरके हुए सभयंत्रकामूल सोभी ओह
और ही तिस्को तिस्केपीछें किये हुए ग्रंथमे स्पष्टा
क्षरमे अंगीकार कियागयाहे। सोकहितेहै "जिस
समयमो हम इस तरहासे लिखयाथा उस तालमे हम
पूर्वदेशके संगीत संबंधमे सम्पूर्ण मे अनभिज्ञथा अथ
र्यात कुछभी नहीं जानताथा, क्रमसे मात्र अनुसं
धानके पीछेसे अवशेषमें एहि सत्यही जालयाहै
नहीं जो पूर्वदेशमें था सो इस तरह कि कभी ओह पश्चिम
देशमे नहीं था। इस समयमे हम निर्भय होकर बोल
सकतेहैं जो भारतवर्ष सर्वाङ्ग संपन्न भाषाका
(क्या संस्कृत भाषाकी) उच्ची पोडीमे चढकर सबकी
मनुष्योंके मनकी अनेक प्रकारकी चिन्ता और भावपरं
पराका प्रकाशक दर्शनशास्त्रको, सार्वाङ्ग सुंदर क
विताके निमित्त और तहांके वासीलोकोंका प्रधानतम
हर्षको देनेवाला सङ्गीतके प्राचीनतम चिह्न समूह
को प्रत्यक्ष करनेवाला कियाहै सोई भारत समस्त वर्ष
स्तत यंत्रका आदि जन्मस्थान है और तिसीसे आसि
याके और और स्थलमे सोई सभयंत्र परिचित हुए हैं।
अनेक यंत्र हैं देखलेसें निश्चय एहि होताहै कि एस
भ भारतवर्षकेही कहिलेसे प्रतीति होतीहै। इसमे
किंचिन्मात्र भी संदेह नहीं है। जेकर कोई प्रस्तुत

ततयंत्रकी उत्पत्ति।

यंत्रकी पहिली अवस्था देखलेकी इच्छा करे, तब तिसकी प्राचीन सरल भावका अनुसंधान कर्ता जावे, क्या शिल्पमाकी चतुराई जिस्की संपूर्णता संपादनमे नहीं देखी इसी तरह यंत्रहीन दृष्टकरके भारतवर्षके वसन्तसत्र इत्यादिकोमे दृष्टिकरे।

इतने दूरजाएके निमित्त केह आवश्यकता है कि जो एकतंत्री वीणाका कितनेक युरोपदेशके पंडितगण समुदय तत यंत्रको आदि कहिकर स्वीकार कियागयाहे, सोलहि भारतवर्षसेंही उत्पन्नहुए हैं। सोई एकतंत्री वीणा भारतवर्षका प्रसिद्ध पिनाक यंत्रहै। इस्का प्राचीनत्व प्रतिपन्न भया सिद्ध करलेके निमित्त भारतवर्षके पंडितगण इसीकों देवदेव महादेवजीका निर्माण किया होया और तिसीकोंही निरंतर प्रिय बस्तु कहितेहैं। †

† एहि यंत्र देखलेमे धनुषकी न्यांई हे। एकही स्थितिस्थापक गुणोपेत याष्टि अर्थात् दोनोपार्श्वोंसें बांधी होई एक लाठीहे तिस लाठीकिया दोई सीमाहैं क्या दृश्यांहें एकही तन्तुद्वारा तन्आईकिके बांधी होई। धनुषकी न्यांई इस्का आकारहे ऐसें कहिकर महादेव युद्धकालमेभी इस्का व्यवहार करतेहैं। सो कि युद्धकालमें कि क्रीडके समय कि और किसी समयमे [illegible] महादेव सर्वदाकालही इसीकों [illegible] व्यवहारकर्तेहिं ऐसें कहिकरके तिसका एकही नाम पिनाक पाली हे।

सो जौंवे सो होय, सभप्रकार के ततयंत्र ही जो पूर्व देशसें उत्पन्न हुए हैं तिन्हूमे किंचित मात्रभी संशय नही है। और जो लेसे लोक पश्चिम यंत्र संपूर्ण भारत वर्षमें हि उत्पन्न नहिं होकर पूर्व देशासे और और देशो सें ही उत्पन्न हुए हैं ऐसें कहिते हैं उन्ह सभके मत जो भ्रांति संकुल है सो अनेक ही स्थानमें देखे गए हैं। सुप्रसिद्ध फिटिस कहिते हैं "भारतवर्ष ही सभ जो प्रचलित तयंत्र हैं उन्हुका जन्मस्थान है — भारत वर्षसें ही प्रथम आसिया के और और देशमें ही ले गए हैं। हमलोक जिस तरए रावण और अमृति एहि दोनो हिन्दु यंत्र को साथ अरब देशके केमा न्चे रबाबुज के साथ तुल्यता करके, तिस तरए शे सोक यंत्र को पूर्वोक्त यंत्र की अनुकृति मात्र नहिं कहिकर ठहिर नहिं सकते"।

एक हि यंत्र जो कोई एक देश विशेषसें उत्पन्न होकर विभिन्न देशमें नाम भेदसें प्रचलित हुए हैं सो अनेक ही स्वीकार करते हिं। सो एह युक्ति भी अननुमोदित नहीं अर्थात् इसको दूर नहीं कर सकती है। सो भाषाके तत्त्ववेत्ता महात्मा सो प्रत्यक्ष दिखाय देते हैं। जो यंत्र इंलंडमें 'पाइप' सोई यंत्र को जर्मनका 'फिफे'। फ्रांसका 'पिपिउ', गल देशके 'पिओव' ओयेलसको 'पिव', सुइडेनके 'पिपा' और डेनमार्कके 'पिजप' सो स्पष्ट उपलब्ध करा देख सकते हों। जो यंत्र इंलंडके 'हार्प' सोई जर्मनका 'हार्फे' फिनलंडका 'हार्पु' आइसलंडका 'हर्पा' हंगेरीका 'हार्फा', फ्रान्सका 'हार्पे' स्पेनका 'आर्पा' आंगलो स्याकसनदके 'हार्पे' वा 'हार्पी' जो 'एलउद' यंत्र आरबका सोई ही स्पेनको

36 'लत्', सुइडेनको 'ल्होता', डेनमार्कको 'ल्यत्',
जर्म्मनिके 'लते', इटालीके 'ल्यतो', फ्रान्सके
और ३ 'लुत्', इंलिण्डके लोक 'लिउट' । और जो
यंत्र पूर्वदेशसें मूरजातिका कियाहुआ पहिलें
स्पेनमें लेजायकर "गिटार' नामसें कथन
कियागया ओहि यंत्रही पीछे जर्म्मनदेशके
पर्वतके प्रदेशवासी लोकका 'जितार', निउरि
याका 'किसार' पुरातन ग्रीसका 'कितारा'
अर्थात् पूर्वदेशमें हय' और मूलमें सोई जो पारस्य और भारत
वर्षका 'सितार' सोई इससमयमों सभई लोक
खुल्के ठसें अंगीकार करलियाहे । भाषा
के तत्त्वकोंजाननेवाले सभलोक जोहें उन्के
पूछनेसें सोसभलोक ग्रीसके नियमानुसार
अर्थात् उस देशके व्याकरणसें से कहितेहें — कि स कागज इत्यादि शब्द
एक पारिवारके भी परस्पर बदलेजाते हें ।
अर्थात् जैसें सितार, किसार, गितार, कितारा, जितार, इत्यादि
[illegible] पूर्वदेशके प्रचलित
यंत्र सभकेसहित पश्चिमदेशके यंत्रस
मूहका अनेक नामका सादृश्य हे । कभी
नाहिंहुआ कभी ऐसासमयहुआकि आन
पृथक्‌ही होगया जिसकारणमें इन्हसभकी
आदिभूमि निर्लीत होसकती हे ।

सुषिरयंत्र।

एह सभ यंत्र छिद्रयुक्त हैं। अर्थात् बीचसें पोले और छिद्रोंकर्के भी युक्त जैसे वंसरी है। इसीनिमित्त इत्यादि सभकों सुषिर यंत्र कहिते हैं। सो एह सभ यंत्र मुखकर्के फूकमारनेकी सहाय तासें वजतेहैं। इन्ह सभके मध्यमे जो सभ की अपेक्षाकर्के और एक अधिक प्रचलित है सो उन्हकों विषयोंहि विवरण किया जावेगा। एहि सभ यंत्र प्रथमसें हि दो श्रेणीसें विभक्त हैं - एक नल और द्विनल। तिन्हकेमध्यमे औभी और चार प्रधान जातिसें विभागकिएगए हैं— वंशीजाति, काहलजाति, शृंगजाति और शंखजाति। वंशीजातिके मध्यमे मुरली, सरल वंशी वा लयवंशी, और वेणु इत्यादि हैं। काहलजातिके मध्यमे रोशनचोकी, कलम और सानाई अर्थात् सरना ई इत्यादि हैं। शृंगजातिके मध्यमे शृङ्ग, रणशृंग और तुरी इत्यादि हैं। शंखजातिके मध्यमे शंख, गोमुख अर्थात् नरसिंगा इत्यादि हैं। एह समुदाय एकनल यंत्र भएहैं। द्विनल यंत्रके मध्यमे केवल तुंबडीही वंशीजाती है। इन्ह सभके मध्यमे अनेकही पारस्य देशके नामसें ही परिचित हैं। किन्तु इन्ह सभका एक एक संस्कृतनाम भी है। सो प्रत्येकके विवरण स्थानमे लिखा जावेगा। साधारण सुविधाके निमित्त तिन्ह सभका जो नाम व्यवहार किया गया। लसें प्रचलित सोइ सकलनामसेंही

❀ सुषिरं विवरं, बिलम् और गर्त्त वितो भविश्वभ्रे सरंध्रे सुषिरं त्रिषु॥ एहि अमरकोश ध्वनवचन दोनो केअनुसार सरंध्र यंत्रकों सुषिर बोलतेहैं।

सुषिर यंत्र।

इस सकल यंत्रके मध्यमे शंख ओर शृंग अति प्राचीन हैं सो सभ यंत्रके फूंककार यंत्रके आदि हैं। जिस धातुके शिल्पकोशल द्वारा संबंध कियाजाताहे उहू सभकेही यंत्र है (१)। सुतरां इहू सभका प्रकृतस्वरूमे एह आख्या अर्थात् नाम प्राप्त होनहीसकता। इहू सभका दोनोंही प्रकृति प्रसूत पदार्थ सभ्यता के अनुन्नतिके समेमेही व्यवहृत होवेंगे। एहि प्रथम समुदाय यंत्रही ततयंत्रकी न्याई विभिन्न अवस्था मे ओर विभिन्न उपलक्षमे व्यवहृतहे सोएहसभ भिन्नभिन्न भागसें विभक्त हुए है। तिहूके मध्यमे कितनेक सभाकेजोग यंत्र, कितनेक बाहरले द्वारके कितनेक युद्धके बजंतर कितनेक ग्राम्य, कितनेक वा मांगल्य अर्थात् मंगलकार्यमें बजाउलेवाले। किन्तु इहू सभके मध्यमे अनेकही दो वा तीन तरहाके श्रेणीभुक्त भी होतेहैं। नीचेमे तिहू सभकेमध्यमे कितनेकका एकही तालिका दीजातीहे।

अर्थात् सभाके सामान्य समेमे [?]

अर्थात् तीनहि भाति [illegible] कियाजाताहे [?]

सभामे	बाहरके द्वारमे	युद्धमे	गाउमे	विवाहादिमे
सभ्य	बाह्यद्वारिक	सामरिक	ग्राम्य	मांगल्य।
मुरली	रोशनचौकी	तुरी	गोमुख	शंख
ढक्का	सरनाई	रणसिंग	शंख	गोमुख
	कलम	शृङ्ग	तुबड़ी	रामसिंग
सरलवंशी *	सरलवंशी		बेणु	

[illegible] पर्याय [illegible]

---

(१) यम धातुके आगे त्र प्रत्ययसें "यंत्र" एहपद सिद्ध होताहे अर्थात् जिसकेसाथ संबंध कियाजाताहे।

* लयवंशी, सभ्य ओर बाह्यद्वारिक ओर शंख, ग्राम्य ओर माङ्गल्य एह दोनोमेही होसकताहे।

वंशी-जाति।

सामान्यता करके पकड़कर जो यंत्र फूकदेनेसें वज
नेवाले हैं उन सभकी सामान्य संज्ञा वंशी है। किस
कारणसें कि अति पूर्वकाल क्या बहुत चिरकालसें
प्रथमे छिद्र सहित कोई फूकसें वजनेवाला यंत्र
रचनेके समयमें वांसकाही यंत्र रचना कियाथा,
पीछें औरऔर कालसेंभी इसकी निर्माण विधि
संपादित होकर स्थिर करीगई और वजाउनेकी री
तिकी विचित्रता, और उपादानका अर्थात् कारण
का और छिद्र संख्याका विशेषकर भिन्नताके अनु
सारसें नानाप्रकारके आकार और नाम हुए हैं।
जैसें तैल, क्या तिलोत्पन्न स्नेहरूप यही प्रकृत तैल है,
किन्तु इससमयमें एरंड सर्षपादि सें उत्पन्न जो द्रव अ
र्थात् स्नेह पदार्थभी तैल शब्दसेंही प्रसिद्ध होता है।
यो वंशी श्रीकृष्ण भगवानजी व्यवहार कियाथा अथा
वजाउते हैं और वंशी बोलतेहैं, तिसीकों मुरली बोलजा
ता है। ग्रीसके अभेना, रोमके फिश्चुला, मिसरके
सिवि और अवके लोक इंगरेजी फ्लुट, और जर्मनि
देशके एलिमेण्ड, इनसभके साथ तिसका अने
कतरहका सादृश्य है। जो सरलभावसे बाजताहै तिसकों
पारस्य भाषामें अलगोजा, वंगदेशकी भाषामें सरलवंशी,
संस्कृत भाषामें वंशी, इंगरेजी भाषामें फ्लाजिउलेट
और लाटीन भाषामें फिश्चुला मिनिमा बोलते हैं।
सो सभप्रकारकी वंशीही नलाकार, वर्तुल, अर्था
त् गोल, सरल और पर्वदोषविवर्जित अर्थात् बीचमें
कोई गांठ नहीं। एहसभ पहिलें बांसके होथे, किन्तु
पीछेसें खदिर रक्तचंदन इत्यादि काष्ठका, सुवर्ण,
रौप्य, ताम्र और लोहा इत्यादि धातुके भी निर्माण किएगए
हैं, समय समय हाथीके दंदके और स्फटिकेभी हुएयेवनलेहै,

कहींकहीं

38

मुरली।

इन सब पंचौं का गर्भ शून्य है अर्थात् बीच में पोले हैं। इन सब की दो सीमा है, शिरोदेश और अधोदेश, सो शिरोदेश [illegible] बंद होता है और अधो देश खुला रहता है। इनकी दीर्घता आठ नौ अंगुल से लेकर एक हाथ लंबे और तिस से भी अधिक हो सकते हैं। जो वंशी मुरली पद वाच्य है तिस का विषय पहिले ही विवरण होगया है।

मुरली।

एह नलाकार, वर्तुल और सरल वंश रूपी होती है इसकी दीर्घता अनेक प्रकार की हय, किन्तु निरंतर एक हाथ परिमाण की ही देखने में आउती है शिरोभाग का तीन अंगुलि परिमित निम्न देश में अर्थात् नीचे एक छिद्र होता है तिसका नाम फूत्कार रंध्र, उसी रंध्र के प्राय चार अंगुलि (कहीं कहीं तिस के ही) नीचे छे छिद्र होते हैं, उन सब का साधारण नाम तार रंध्र है। पहिले में फूट की न्याईं इसके दोनो पार्श्वों में बंद होते हैं। किन्तु इस समय में तिसका और बडा व्यवहार नहीं है, श्रीकृष्ण जी की प्रतिमा में जिस तरह हाथों में मुरली दई जाती है उसी तरह यहां टेढे भाव से दोनो हाथों के कर्ही धारी जाती है। सो पहिलें सिखने वालें को सरल भाव से पकडाइकर मस्तक ऊंचा और बामे मोढे के पास थोडी उच्चाइ कर और कोमल भाव से अधर के बक्षस्थल बिती लेकर के अभ्यास करने की विधि देखी जाती है। मुरली दोनो हाथ के अंगूठों के मध्य भाग में। एक दे केप क इनसे बामे हाथ की तर्जनी, मध्यमा और अनामिका

एहि तीन अंगुलि मुरली के शिरो देश के तीन छिद्र के मुखमें और दक्षिण हस्तके एहि तीनही अंगुलि निम्नका तीनों में स्थित जो तीन छिद्र हैं उन्हू के ऊपर बजाउने के समयमें प्रयोजन के अनुसार विनियोजित करते हैं।

पूर्वोक्त प्रकार के आयत्त अनुसार अर्थात् प्रमाण के अनुसार से पकड़कर निम्नलिखित प्रकारसें एह बजाउन होती है इसके फूत्कार रंध्रकों एक गले केपास से हिलायकर तिसकों ऊपर अधरके अर्थात् नीचे के ओठके ऊपर स्थिर और दृढ भावसे राखके अधर और ओठको एकत्र दबाय के दोनोके मध्यमें फूत्कार निर्गमनके निमित्त एक छोटा कर स्वर छिद्र राखते हैं। अधर एक मुखके पासे रहे और फूत्कार रंध्रका आधाक भाग मुद्रित रहे, और ओठ एक बाहिरमें रहे और उक्त रंध्रके अनावृत खुले हुए भागको आवरण करिके रहे। इसतरहासे जिस समय फूत्कार बाहिर होवे तिस समयमें प्राय सब तरह फूत्कारही रंध्रमध्यमें प्रवेश कर जाताहै। फूत्कार आरंभ करनेसे, तिसके प्रयोगकालके बलका न्यूनाधिक्यके वशतें स्वरका भी उच्चता और नीचता संपन्न होतीहै।
हमलोकोंके देशमें जिसप्रकार मुरली है, इउरोपमें सोई रूप फ्लुट है। एह दोनोही अति प्राचीन कालसें प्रचलित हुएहोए अब तक चले आउते हैं। इन्हू दोनो काही प्राचीनताके प्रतिपादनके निमित्त दोनो देशोंमेंही इन्हू के संबंध में नाना प्रकारका प्रवाद है। भारत की मुरली श्रीकृष्णजी कों अति प्रियतम थी और ओही श्रीकृष्ण भगवान् इसको निर्माण करने वाला कहा है।

यंत्रकोष।

इउरोपका फ्लुट पूर्वतन अर्थात् पहिले समेका रोमका
फिस्चूला और ग्रीसका आवलुस् मिनर्भा देवीका अति
प्रियतम और रतिसीक केहि निमित्त इसतरूकाहिते हैं।
पूर्वसमेमे फ्लुट् हटहोलेके पीछेही प्रथमसें इतरजन
भी इसको व्यवहार करतेथे और उसी निमित्त एह तैसा आद
रणीय नहिथा, किन्तु जबसें ग्रीस देशके लोकोंने पार
स्यादि देश जीत लिया, तबसें लेकर जैसेंही संगीतका
विशेषकर्के आलोचना क्या देखएका आरंभ हुआ, उसी
समयमे फ्लुटका इतना आदर अधिक हुआ, कि जो एसे
लोक इस यंत्रको बजाउणे नहीजानते थे सोउन लोकों
कीगलती अच्छे लोकोंमे नहीथी। फ्लुटार्क कहिते हैं
विख्यात ग्रीस देशका राजा पेरिक्लिश नामक इसयंत्र
का बडा उत्साह देणेवाला थी और उसीने इसको ग्रीसके
आर्किथियटरमे पहिले संनिवेशित अर्थात् स्थापनकिया
और हमारे पासके लोक पूर्वदेशसें विशेषकर्के आसिरि
या और मिसरमे मुरलीको न्यांई यंत्र बहुतसें पहिले काल १८
प्रचलितथा। अवयवमे कोई भिन्नता लक्षित
नहीहोती। सो किहाहय कि सुमेर प्रसिद्ध जोकोइस्था
नवा नगरविशेष है उसके ध्वंसक्या नाश होणेके उपरं
त उसके बीचसें एकजगासें मृण्मय प्रतिमा निकसी
तिसकेसाथ एक यंत्र निकसया, तिसका आकार निरं
तर मुरलीकी न्यांईथा। सोकिस समयमो और किस
प्रकारकीघटनामे जो इसप्रकारका यंत्र उसजगासें प्रा
प्त हुआथा सो किहानहीजाता। और प्रतिमा आसि
रिया देशकाहीथा। सोइसस्थलमे एह अवश्यही
स्वीकार करनाचाहियेजो सभप्रकारके फूककर्के ब
जणेवाले यंत्रका आदि यंत्र षांखहै।

संगीत इतिहासलेखक प्रसिद्ध चार्लस् बर्णिनाम
क साहिब इससमयमे वर्त्तमान मतकी साखी देतेथे। घे

अपर्याप्त नाम शास्त्रोंमें १८

सरलवंशी।

इसीको पारस्य भाषामें अलगोजा और इंगरेजी भाषामें फ्लाजिओलेट् कहितेहैं। इसीतरह इस्कों सरल भावसें अर्थात् सूधी पकडनेसें इस्का नाम सरलवंशी भयाहै। सो मुरलीकी न्यांई इसमेंभी सात ताररंध्रहैं और फूत्कार रंध्रके स्थलमें एक वायुरंध्र होताहै
निकसताहै
उस स्थानसें वायु निर्गत होताहै। फूत्कार रंध्रमें फूक नही देनी चाहिये; क्योंकि एह शिरदेश इस्का खुल्लारहिताहै, उसीस्थानसेही फूक देनेसें वायुरंध्र खुल्ले रखनेकी आवश्यक मत ताररंध्र सभमेंही अंगुलि निक्षेपद्वारा वादनक्रिया संपादित होतीहैं। किन्तु पकडनेकी रीति मुरलीसे सभ स्वतंत्रहै।

प्रथमतः इसकों सरलभावसें पकडना होताहै और उपरके चार छिद्रोंमें दहिने हाथकी चार अंगुलि और नीचेंके तीन छिद्रोंमें वामेहाथकी तीन अंगुलि उक्त छिद्रोंमें योडनी चाहिये इतनामात्र मुरलीका और अलगोजेका भेदहै, और और सभ विषयमें एही सरलवंशी प्रायमुरलीकी न्यांई है।

लयवंशी।

केवल एह यंत्र निरंतर बाँसकाही होताहै — अवयव में सर्वांश अर्थात् अलगोजाके समानही होताहै। लोकमें इस्कों भी प्राय सरल भावसें पकडकरके बजाउतेहैं। नव विशेष एहि जो, इस्कों मुखके

एक कोणेसे एक टेढेभावसे पकडके इसके दोनोमुख अनावद्ध अर्थात् खुलेही रहतेहैं और सरलवंशीसे जो एक वायुनिर्गमन रंध्र होताहै, सोइसमें नहीं होता। औरऔर संपूर्ण विषयमें एह सरलवंशीकी न्याईं है।

काहलजाति।

इसीसकल यंत्रको शर वा तृणध्वज देकर बजाउतेहैं। इसतरहका यंत्र, कि पूर्वदेशसे कि पश्चिमदेशसे, एह दोनो देशोंमें विभिन्न नामसे प्रचलित है। बंगदेशमें कलम, रोशनचौकी, सानाइ और इंरेजी क्लारिअनेट, ओवए प्रभृति इसीपंक्तिके अंतर्गति है।

कलम।

इसका आकार लिखनेवाली कलमकी न्याईं है, इसी निमित्त इसका नाम कलम है। एह यंत्र इसप्रकारके नामसे अनेक देशमें प्रचलित है। इसीको संस्कृतमें कलम और पारस्य, आफगानस्थान, तुर्की, तातर प्रभृति देशमेंभी कलम और ग्रीसके कलमस्, इसी निमित्त बोध होताहै जो एह भारतवर्षकायंत्र होवेगा। इसका मुख एक कलमकी न्याईं कटाहोया और अग्रपर मुख औरऔर वंशीकीन्याईं अनावद्ध होताहै। इसका दैर्घ्य अपेक्षाकर्के अल्पहै। इसकी तार रंध्र संख्या औरऔर वंशीकी न्याईं सातही होतेहैं एह सरलभावसे बजाया जाताहै। किन्तु औरऔर यंत्र जिसप्रकार फूत्कार रंध्रमें फूकमारनेसेंही बजताहै एह उसतरहसे नहीं। मस्तकके पाससे अर्थात् जिसस्थानसे बजाउतेहैं उसस्थानमें देशीसानाईके मत एक छोटा नल बलाने रहताहै अर्थात् उसके मुखविच नलदिया रहताहै।

काहलजाति। क

ओर वजाउए लगनेके पहिलें तिसको पु पु कर्के मिजाइ कर फेर वजाउए लगतेहैं।

रोशन चौकी।

एह यंत्र हमारे देशमे ओर पारस्य देशमे वहुत प्रचलितहै। देखलेमे अनेक ओवाइए केमतहै। कलमकी न्याई इसके मुखमे एक नल देकर इसको वजाउतेहैं। इसका आकार ऊपरके भाग काठका ओर निम्नदेश पित्तलादि कोई धातुनिर्मित ओर धत्तूरे के पुष्पका आकार होताहै। ओर किसी किसीका सभ अवयव भी शुद्ध काठका ही होताहै। ओर नलं वाई इसकी साधारणसे एक हाथ परिमित होतीहै। लखनो इत्यादि देशमे इसकी अपेक्षाकर्के अनेकही वडे यंत्रोंका व्यवहार है, तिन्हका स्वर भी अपेक्षाकृत निम्नतर है क्या ... गंभीर है नोवाजे हमारे देशोंमे नववादवी नोवतमे जो रोशन चौकी व्यवहृत है, तिसका स्वर तीव्र है अर्थात् साधारणयंत्रकी अपेक्षा कर्के तीन चार स्वर ऊर्द्ध मे है। पूर्वतन अर्थात् पहिले समेमे मुसलमानलोकोंके राज्यके समयमो राजयोंके पास उत्सव ओर मांगल्य कार्य्य के उद्देश कर्के इसका व्यवहार वहुतथा। आजतकभी एहि मुसलमान ओर हिन्दु लोकोंके मध्यमे उक्तविध कार्य्य क्या मंगलकार्य्य के उद्देश कर्के व्यवहृत होताहै।

सानाइ। सरनाई

एहियंत्रकि अवयवमे कि वादनप्रणाली क्या पंक्तिमे क्या दोनो पंक्तिके विषयमे ही संपूर्ण पूर्व कहेहुए यंत्रकी न्याई है। एह दोनो यंत्रकाही स्वर गत जो विलक्षणताहै सोई इन्ह सभका भेद निदर्शक अर्थात् ठीक ठीक निश्चय स्वरको कर देताहै।

एहियंत्र [illegible] मुसल्मान सम्राट् अकवर शाहजीकों अति प्रियथा। सोसदा ही नौवतके मिलनेमे इसीका वजना सुनने मे वडा प्रसन्न होताथा। इसका पारस्य नाम सिर्नाइ है।

वेणु।

एही हमलोकोंके देशमे वेणु अर्थात् बाँसद्वारा निर्मित होताहै इसीवास्ते इसकाभी नाम वेणु होयाहै। एहीवेणु मिसरदेशियोंने अंगरेज लोक जिसकों नावि कहते। (अर्थात् तिस देशके लोक फकीरलोक वंशी वोलके व्यवहार कर्त्ते हैं) इसीकों मिसरदेशके धर्मसंबंधवाले व्यापारमे जिकार नामक नृत्यके सहित फकीरलोक व्यवहार करतेहैं। इसकी दीर्घता वंशी जातीके औरऔर समुदाय यंत्रकी अपेक्षाकर्के अधिकहै। इसीयंत्रकों सन्मुख देशमे छे और पश्चाद्देशमे एकही मात्र छिद्र होताहै। इसके वजाउनेकीरीति इसजातीके औरऔर यंत्रकी अपेक्षाकर्के स्वतंत्र है अर्थात भिन्न है। मुखटेढाकर्के और यंत्रकोंभी टेढाकर पकडकर अल्पअल्प फूत्कार त्यागकर्त्ते हैं तब इस यंत्रकी वाद्नाक्रिया निष्पन्न क्या सिद्ध करतेहैं। उसीफूकके देनेके समयमे जोवलप्रयोग किया जाताहै तिसकी तारतम्यताके अनुसार सें अनेक प्रकारके स्वर वहिर्गत होतेहैं। सो अच्छी तरहसें शिक्षा होया जोवजाउनेवालाहै तिसके हाथसें इसयंत्रसें अति सुंदर और सुननेमे

अति मधुर स्वर उत्पन्न हो सकता है। किन्तु तिसके बजा
उ[illegible]नेहारे अनेक दिन पकडकर अभ्यास नहिं क
रने सें फुतकार्य्य अर्थात् अच्छी तरह बजाय नहीं
सकता।

शृङ्ग जाति।

एह सकल मृग, महिष, मेष, गो इत्यादि दीर्घ शृङ्ग
धारी जन्तु सकल का शृङ्ग कोष देके यंत्र प्रस्तुत होता तियार
इस जाती के सभ यंत्रों का आदि शृङ्ग है। एह पहिलें कि
हा गया है, शंख और शृङ्ग एह अनेक प्रकार के यंत्र ही
प्रकृति संभूत अर्थात् स्वतः सिद्ध हैं। और सभ प्रकार के फू
वो त्कार यंत्र के आदी है। एहि शृङ्ग जो शुद्ध भारत का कि
एहि पूर्व देशा मे स्थित सभ देशा के हि जो यंत्र है, ऐसे नहीं है, सो
जितनेक पश्चिम देशा मे स्थित जो हो र देशा उन्हूं मे हरन्,
प्रभृति अनेक नामसें प्रचलित है। एहि यंत्र भारत की
श्रृंग, पारस्य देशा का कारले, हिब्रु देशा का केरेन्,
ग्रीस का केरास, रोम देशा का कर्णु, फ्रान्स का कर्,
जर्म्मणि का हरन्, ओयेलस का करन्, हङ्गेरी का
कुर्त्, और इंगलण्ड का हरन्। एहि श्रृंग जो हमारे देशा
के [illegible] कितनेक पूर्व कालसें प्रचलित होया हुआ है
सो किछु नहिं जाता। परंतु कहा है कि देवादि देव
महादेव इसको व्यवहार किया है। एह यंत्र सभ के
मस्तक का अग्र भाग सूई के तुल्य और अपरो भाग
ऊपर की अपेक्षा करके वडे विस्तार वाला होता है,
और आकार इसका टेढा होता है, सो इसके शिरोदे
शमे एक कृत्रिम छिद्र किया होता है सोई फूत्का
र के प्रका कार्य्य कर्त्ता है।

रण शृङ्ग।

सभ्यदेशोंमें ही रणके स्थलमें सैनापत्यके लोकोंके उत्साह करणेकों वा उन्होंकों बुलाउणे वास्ते वा कोई कार्यके निमित्त इङ्गित क्या संकेत करणा इसी वास्ते एह यंत्र व्यवहार किया जाता है सो बोलते हैं कि इसका नाम रणशृङ्ग है। सो जेकर उक्त जो उपलक्षण क्या कार्य्य हैं सो सभ ही देशोंमें इसका प्रचलन है तदवी पहिलें हमसोकोंके देशमें और ग्रीसमें इसका अत्यंत प्रचलन आदरपूर्वक कया। अथ इस समयमें इंगरेजोंके निकट व्युगल नामक यंत्रद्वारा जो होता है पहिलें सोई कार्य्य इसद्वारा भी संपादित होता था। शृङ्ग जातिके और और सभ यंत्रकी अपेक्षा करके इस यंत्रका आकार अतिशय करके वडा है। एह निरंतर पित्तलका वा तांवेका होता है। फूत्कारसें वजनेवाले जो इतर यंत्र हैं उन्हसे विशेष इसमें स्वरकी तीव्रता वा कोमलता संपादित होती है।

रामशृङ्ग।

एह माङ्गल्यकार्य्यमें व्यवहृत होता है। इसकी लंवाई पूर्वोक्त यंत्रकी न्याई है, किन्तु आकारमें और स्वरमें परस्पर अर्थात् आपसवीच अनेक अन्तर है। रणशृंगकी अपेक्षा करके इसका व्यास वडा है और जेकर दोनोंका ही स्वर तीव्र है, तदवी रणशृंगका स्वर सूक्ष्म और इसका स्वर स्थूल है। और वादनप्रणालीमें दोनोंका ही एकरूप है।

तुरी।

एह इंगरेजी ट्रम्पेट यंत्रके सदृश है, शृङ्ग-जातीके और और यंत्रसें इसकी विलक्षणता एह है जो, एह सरल है।

शंखजाति।

निर्सिंग

एह पित्तलका बनेंताहे; रणश्रृङ्ग की न्यांई एह भी रणस्थलमें व्यवहृत होताहे, किन्तु इसके द्वारा आह्वान नहिं करते अर्थात् किसी को बुलाउते नहीं। इसकी दीर्घता और व्यास रणश्रृङ्गकी अपेक्षा करके अल्प है। एहि हमलोकोंके नये बाजे वा नौबतमें बजाउतेहैं। बजाउनेकी प्रणाली रणश्रृङ्गकी न्यांई है।

भेरी।

इसको सभलोक "भड़ङ" बोलतेहैं। एह दूरबीन यंत्रके आकार और उसीकी न्यांई एक नलेके भीतर और उसी तरहका स्तबक स्तबकमें होता है अर्थात् उस नलेके बीच और नला होताहे, बजाउनेके समयमें एक एक करके बाहिर निकासलेते हैं; एहि पहिले युद्धके समय व्यवहृत होता था, किन्तु इस समयमें केवल नौबतके बीच इसका व्यवहार देखनेमें आउताहे।

शंखजाती।

एहि जातिके यंत्रोंके मध्यमें शंख और गोमुख अर्थात् नरसिंगा एहि दोनो प्रचलित हैं। शंख इन सभके मध्यमें [illegible] बहुत चिरकालका है ऐसे कि एही सभ फूत्कार यंत्रका हि आदि है कि केवल श्रृङ्गके संग ही बराबर समझा है सो शंखका विषय पहिले एक प्रकार उल्लिखित होगयाहे।
एह शंख सभ यंत्रका आदी, ना ऐसि प्रभृति प्रसिद्ध संगीत इतिहास वेत्ता जो हैं सोभी इसी मतकी पुष्टि करते
(कोंकरगये हैं।

4

द्विदलयंत्र।

तित्किरी

अर्थात् बंगदेशमें

एहि एक द्विदलयंत्र है। इस जातीका एही
एकमात्रही यंत्र है सो हमारे पासके देशमे प्रचलित
है, इस्कों आमलोक तुवडी (बीन) बोलते हैं। सामान्य
ग्राम्यजन सर्पको पकडनेवाले इस्कों व्यवहार
कर्त्ते हैं बोलते हैं कि एहि ग्राम्य यंत्रके मध्यमे
परिगणित होगया है। सोसभ इस्कों साधारण
सें तुवडी वा पुंगी बोलते हैं और हमारे देशमे बीन
कहिते हैं। इसी यंत्रके निम्नदेशमे छिद्र वाले दो
नल परस्पर समसूत्रपातसें संयत और ऊपरके
भागमे एक कौडहू वेका (तितलाउ) एका खोल जोडा
हुआ होता है उसी खोलकों वायुकोष बोलते हैं।
तिसका ऊपरका भाग नलाकार और कुछक टेढा
होता है, और उसी नलाकारके शिरोदेशमे
एक छिद्र होता है, उसीकों फूत्कार रंध्र कहि
ते हैं। इसी यंत्रमे और नौ ९ रंध्र होते हैं इस्के
निर्माणमे कडुतुम्बीका तिक्त अलाबु क्याहै वा
व्यवहृत होता है बोलते हैं इसीका नाम तिक्कि
री होयाहै। इसीकों युरोपदेशके इतिहास
सङ्गीत लेखक तित्रि बोलते हैं। इसके संग
सोसभ युरोपदेशके व्यागपाइपको तुल्य
गणना कर्त्ते हैं किन्तु हमलोक तित्तिरी वो तुवडी
के संगे उवके लोक व्यागपाइपके निर्मा
ण विधिके अनेक प्रभेद देखले मे आउ
ते हैं। व्यागपाइपका [illegible] वायुकोष
चर्मका और तितिरीका कोष कडु लौवेका
बना।

हिगर्त?

सोनिरंतर इउरोपदेशके जोहैं सो कि सतरासें इसप्रका
रके सिद्धान्तमें उपस्थित हुएहैं, सोकिछु नहीं जाता।
कोई कोई स्थलमें अति पूर्वकालसें मुनि ऋषियोंके
समयमें अलाबूके अभावमें मृगचर्म व्यवहृत होताथा,
सोनिरंतर तदानीं त्र अर्थात् उससमेके लोक तित्तिरी
और अधुनातन क्या अब वर्तमान समेके लोक व्यागपाइ
प एह दोनोंही समान हो सकते हैं। इउरोपदेशके पंडि
तगणके मध्यमें भी कोई कोई बोलतेहैं जो, पुंगी और
तुबडी एक ही है। एहि तुबडी यंत्र कभी कभी नासिका
द्वाराभी बजाउतेथे सो इसको नासा वंशी भी बोलतेथे
सो एहे बात पीछे सें चले आई हैं इस यंत्रके एकनलेमें एक
अंगुलिके अंतर नो छही छिद्र हैं, और एकनलेमें पांच
छिद्र हैं, नोंछिद्र जो हैं उनमें जोनीचेके दोछिद्र हैं सो मो
म द्वारा बंद होतेहैं और सभसे ऊपरका जो छिद्र है सो नलेके
पीछेके पासे पर्यंत विस्तृत होताहै और दूसरे नलेके पांच
छिद्रोंके मध्यमें दूसरा और चौथा छिद्र खुला रहिताहै
और तीन छिद्र मोमसे के बंद कियेहोतेहैं सोवो कनरा
सुरयोगके निमित्त व्यवहृत होतेहैं, और प्रथमोक्त न
लेमें जो सात व्यवहार करने योग छिद्र हैं, सो बजाउने
के समय तिन्हु सभके ऊपर आवश्यक हीं अंगुलि
विक्षेप करिके फुत्कार रंध्रमें फुत्कार देनेसें बरबरे
बरबरे स्वर निकसतेहैं। किन्तु साधारण वंशी
में जिस तरहसें फूंक दईजातीहै तिसकी अपेक्षाकरके
९९ इसमें फुत्कारकी रीति अनेक तरहका बरबरी बरब
रीहै, इसयंत्रमें एकबारसें मुख परिपूर्ण वायु लेके
क्रम क्रमसें आवश्यकही परित्याग कर्तेहैं।

७६ एहि द्विनलयंत्र भारतवर्षमें नवीन पृथिवी
में स्थित प्राय सभही देशमें अति पूर्वकालसें

प्रचलित होया होया आजतक है, स्त्री पुरुष ए ह दोनोंही एह व्यवहार कर्त्ते हैं अर्थात् वजाउते हैं। पारस्य देशाके नेयाम्चाना प्राचीन मिसर के जुक्कोयारा और आधुनिक मिसर देशाके अर्ग्युल और जुमारा यंत्रभी केवल इसी तरहका होता है तब इसका नॅल एक दूसरेकी अपेक्षा करिके बड़ा होवा है। मिसर देशाके मल्लाहलोक सभ एहि द्विनलयंत्रकी व्यवहार कर्त्ते हैं तिसका नाम जुमारा, सोई और लोक जुक्कोयारा एकही, इहू सभके दोनो नल ही बराबरलेते हैं। दोनो नल जिस सलमे वराबर धरवेर और आलावू के बिनाही रहे, तिस दलमे मिसर देशाके तिसकों पाम बोलते हैं। ग्रीसमे और रोममे एहि यंत्र पहिलें से प्रचलित था, किन्तु तिसके स्वर नियमके निमित्त कीलक देकर नलेके छिद्र कों बंदकरिके रखते हैं। इस देशामे भी तिसके बदले मोम व्यवहार कर्त्ते हैं। इसीकों हिब्रूके बाइबेलके दानियेलु अध्याय मे साम्फोनियां बोलते हैं, इसीको इटालके अधुनातनक्या इससमयमो वर्त्तमान जाम्पोंग्ना और हिब्रू माग्रेपाभी सामफोनियाके मत है। किन्तु अङ्गगत अनेक वैलक्षण्य है।

सुषिरयंत्र। ॐ फूत्कारप्रभवोवाद्यः पूर्वंतत्सुखरंप्रतः

सुषिरयंत्र। ॐ

जितनेक प्रधान प्रधान फूत्कार यन्त्र थे सो सभ वरणन होचुके। ततयंत्रकी सृष्टिके पीछे इन्हसभ यंत्रोंकी सृष्टि होईहै सो बोलतेहैं कि इसपक्षके जितनेक ततयंत्रके पीछे जोभए सोसभ लांछित कियेगयेहैं अर्थात् सभवर्तनेमें आइगयेहैं। सङ्गीतके इतिहास पर्यालोचना अर्थात् विचारकरएसें जाणसकतेहैं जो, फूत्कार यंत्र ततयंत्रके पीछेहीं सृष्ट होएहैं। ततयंत्र और फूत्कार यंत्रकों एहि दोनोका निर्माण कौशल तथा बनाउणेकी चतुराई निरीक्षण करणेसें स्पष्ट प्रतीति होती है जो, पहिलेंकहेहुएकों अपेक्षाकरिके शेषोक्तकी निर्माण प्रणाली अधिक सूक्ष्म और उत्कृष्ट है। संगीत शास्त्र मनुष्यकों प्रकृतिसिद्ध तथा स्वभावसिद्ध है, इसकीउन्नतिभी मनुष्यकीउन्नतीकी अनुसारिणी होतीहै मनुष्यकी बुद्धिकी वृद्धी और दर्शनशक्ति अर्थात् शास्त्रके अवलोकनसें जोशक्ति सोजितनीक वृद्धिकों प्राप्तहोवेगी, उतनीहीउसकी परिपुष्टि प्रतीत होवेगी। सो निरंतर मनुष्योंका समाज जिस कालमें निरंतर शैशवावस्थामे अवस्थित तथा प्राप्तथा, जिस कालमें मनुष्यकी बुद्धिचातुरी अच्छीतरहसें पुष्टिकों प्राप्त नहींथी, जिसकालमें तिन्हसभकी भाववृत्ति निरंतर संकीर्ण और सीमाबद्धथी, अर्थात् थोड़ी थी, तिसकालमें तिन्ह लोकोंको पहिले कुछ ज्ञान नहींथा, तिसकाल तिन्हसभको जोकुछ प्राकृतिक उपायसें प्राप्त होताथा सोई तिसीकोंही व्यवहार जानतेथे, तिसकेबिना और तथा स्वरसंज्ञान वा जोवस्तुकी लोड़ होवे उस निमित उसवस्तुकी लोड़ रःखली ४

अर्थात्

किसीको भी अभावबुद्धि थी तिन्ह सभको नवीन आविष्कारण
मे अर्पित कार्य बुद्धि बलसे तो ऐसा कि वा कोई यंत्र नवी
न निर्माण करनेमे उद्भाजित क्या उसके प्रकाश करने
मे नहिं कर सकते थे, सुतरां तिस समयमें भी अयास
के विनाही लभने योग्य जो प्रकृतिसिद्ध उपाय क्या
सुलभ कंठ संगीत सो उन्ह सभ लोकोंको प्रथम आलो
चना देखने जोग जो विषय होता था, किन्तु जिस का
ल मे देखा कि कंठसंगीत सभको ही भाग्यसे होता
है अर्थात् किसी का कंठ अच्छा नहीं होता, तिस कारण
और उपायसे इसके साधन करने मे चेष्टा करने लगे, किंतु
क्या करें तब विचार करनेके पीछे जिस कारण उन्ह सभकी
उन्नति होने लगी, बुद्धिवृत्ति, दर्शनशक्ति और अभाव
बुद्धि परिवर्द्धित और बडा अध्यवसायी होने लगा, तिस का
रण सो सभ लोक उपाय उद्भावन क्या प्रकाश करने मे
समर्थ और कृतकार्य्य भी हुए। तिस कारण से लेकर
यंत्रसंगीतका प्रथम समावर्त्तन हुआ — सो पहिले
तत यंत्र, उसके पीछे शुषिर वा फूत्कार यंत्र भये।

पहिले जो तत यंत्र सृष्ट हुआ सो एकतंत्री — सो हमलो
तत कके देशमे भी एकतंत्री यंत्र सर्वयंत्रका आदि बोलके
अति पुरातन कालसे प्रचलित होके अबतक स्थित है,
किन्तु एहि जो पृथिवीके सभ तत यंत्रकी अपेक्षा करि
क प्राचीनतम क्या बहुत कालसे सो हमलोक बोल नहीं
सकते; तब इतने पर्य्यंत बोल सकते हैं कि जो जिस काल
इस समयके सभ्यतम क्या बुद्धिमान लोक जाति सभके
मध्यमे अनेकोंके ही जन समाजमे असभ्य नामापा
किम्वा वनके पशुओंकी न्याईं बडे सघन वनमे नि
भृत दुर्गम पर्वतकी गुफामे विचरण करिके स्वच्छंद
क्या स्वाभाविक इच्छा करके वनमे उत्पन्न हुए जो फ
ल मूल उद्धृत करके अथवा सद्य ही मारा हुआ जो
पशु मांस उससे उदर पूर्ति करिके निषादकी न्याईं
जीवन धारण करते थे जिस काल सो सभ लोक अ
धिष्ठित सकल देशमें हुए सम्प्रदके आगमागमने

स्थित नहिं हुए विविध हिंस्र जन्तु समर्कुल भीषण महावन मे परिव्याप्त थे, तिस काल एहि यंत्र इस लोकके देशमे लब्धप्रतिष्ठ हुए थे। किहा है कि, देवादिदेव महादेव एकतंत्र विशिष्ट पिनाक यंत्र निर्माण किया उसीनि मित्त तिसका एक नाम पिनाकी भया। खृष्ट शाकके ये कितनेक सहस्र वर्ष पहिलें महादेवकी कीर्ति परंपरा से स्थापित हुआ तिसकी इयत्ता अर्थात इतना विरहुआ सो किहा नहिं जाता। तदनन्तर सोई एक तंत्री पिनाकमे एकही मात्र तार समावेशित होती है और तिसमे कोई सारिका विन्यास नहिं है सो निरंतर इसके निर्माणके कौशलका अति अल्प मात्रही प्रयोजन होता था। किन्तु प्रथम फूत्कार यंत्र जिस कालमे निर्माण हुआ था, तिस काल निश्चय ही मनुष्यकी इसतरह अवस्था नहीं थी। इसीकारण तिसका निर्माण समधिक जटिल और कष्टसाध्य था।

फूत्कार यंत्रमे जो सकल छिद्र-विन्यास किया जाता है, तिन्ह सभका परिमाण समान नहीं है—परस्पर का दूरत्व समान नहीं है तिन्ह सभके प्रत्येकका व्यास भी अर्थात चौडाई भी समान नहीं है, विभिन्न स्वरके निमित्त तिन्ह सभका वैचित्र्य संपादित होता है, सो निरंतर सो सभ जिस कालमे अच्छीतरहासें संपादित हुआ था। तिस काल निश्चय ही मनुष्यकी बुद्धिवृत्ति वृद्धिको प्राप्त हुई और परिमार्जित अर्थात् निर्मलिभी होगई और दर्शन शक्ति समधिक प्रोज्वल अर्थात् देखलेमैभी शक्ति अतिशयकरकें उज्वल होईथी। सो विशेषकरकें शास्त्रके किहा है, द्वापर युगमे कृष्णावतारमो वंशीकी प्रथम सृष्टि हुई। वंशी बजाउलेकी नियमावली द्वापरयुगके पूर्वमे जो कोई जानताथा एह बात कोई किसी ग्रंथमे लक्षित नहीं है, किन्तु देवादिदेव महादेव द्वापरके अनन्त काल पहिलें सत्ययुगमे

सुषिरयंत्र।

पिनाकयंत्र व्यवहार करतेथे; इसका प्रमाण नाना संस्कृ
त पुराणमें लिखितहै। इसीतरह उन्नति काल सा सेखाहै,
निरंतर जो ततयंत्रहैं सो फूत्कार यंत्रके पहिलें हुएहैं
तिसके विषयमे किंचिन्मात्रभी संदेह नहीं है। कोई
कोई इतिहासलेखक उल्लेख कियागयाहै जो तत
यंत्रके पहिलेंभी एक दो फूत्कार यंत्रका प्रचलन
था। तिह सभकी एह बात किसी मतसेभी सत्य बोल
के प्रतिपन्न अर्थात् सिद्ध नहीं होसकती है। कारण
को सोसभ जिसपासके फूत्कार यंत्र बोलतेहैं कि सोसभ
प्रकृतकल्पमें यंत्र नहीं हैं– बुद्धिकौशल तिह्नोमें
अणुमात्रभी विनियोजित नहीहैं। जिसकारण सो
सभ प्रकृति संभव है अर्थात् स्वभावसिद्ध है जैसे शंख
और शृङ्ग हैं। इह दोनो कोही पुराविद्गण आदि
फूत्कार यंत्र बोलकर वर्णन करते हैं। तत यंत्र समूहकी
संपूर्ण परिपुष्टि और बहुत प्रचार जिस समय में नहीं
भयाथा, तिस समय इसी तरह दो एकका प्रचलन असं
भव बोलके ज्ञानके नहि होनेसेंभी होसकतेथे, किंतु
जिस समय सुषिर "यंत्र" लहि उन्नत सरो प्राप्त
होकर यंत्र सकलके मध्यमे परिगणित होने
का आरंभ हुआथा, जिस समयमें उह के निर्माण
मे मनुष्यकी बुद्धिवृत्ति परिचालनकी आवश्यक प्रयोग॰
ताभईथी, तिस समय पहिलें फूत्कार वैचित्र्यमे शंख
और शृङ्गमो दो चार मात्र स्वर निनादित हुए, किंतु
पीछेसें जिस समयमें विविध स्वर-विभ्रम विविध
राग विलसित प्रदर्शन करनेकी इच्छा बलवती
हुई, तिस समय और प्रकृति सुलभ अर्थात् स्वभाव
से सुगम शंख वा शृङ्ग मे संगीत कुतूहली मनुष्यकी
तृप्ति संसाधित ना भई। तिस समय सेंही फूत्कार
यंत्रकी [illegible] प्रथम सृष्टिका आरंभ
हुआ। पहिलें एक नल यंत्र सृष्ट हुआ, पीछेसे तिसी
के अंगभेदसे, रचनाभेदसे, विविध अभिप्राय सेसा

शुषिर यंत्रोंकी उत्पत्ति।

पवनके निमित्त भिन्न भिन्न देशोमें। भिन्नभिन्न प्रकारसें
और भिन्नभिन्न नामसें प्रचारित हुए। पशियोंपमे द्वि
नल यंत्रभी सृष्ट हुए हैं। एकनल यंत्रमे पहिलें दोई
मात्र छिद्र विन्यस्त करे गये, उसीतरह एक कर्दम वि
निर्मित अर्थात् कीचडका यंत्र वनायकर अग्निमे
पकायकर रखाथा सो व्याबिलन नामक देशविशेषमे प्रा
प्त होगयाथा उसदेशसे एह यंत्र आलकर काप्तेन उइल
साहिबनें क् रएल आसियाटिक् सोसाइटी नामक सभावि
शेषमे अर्पण कियाथा। उसी यंत्रकोंही इसकालमें
सभलोक ही फूत्कार यंत्रका आदि बोलतेहैं।
किन्तु अति पूर्वकालसें ही हमलोकके देशमेंभी
उक्त विधयंत्र प्रचलितथा। किन्तु इन दोनोंके मध्य
मे कौनसा आगें है, सो हमलोक तिसको निश्चयकर
नेमे समर्थ नहीं हैं। तव इसमे एहि सिद्धांत है जो पूर्व
देशसें हि जो पहिलें उत्पन्न भया है सोई सभलोकों
मे एकवाक्य होकर स्वीकार कियागया है, द्विनल
यंत्र जो है एभी पूर्वदेशसे ही प्रचलित हुआ है। पहिलें
कोई कहिते हैं कि एह मिसर देशका यंत्र है कोई
है कहिते हैं कि एह भारतका यंत्र है मिसरदेशमे इसका
नाम "अग्गलि" भारतमे इसका नाम "पुंगी"।
किन्तु एह दोनोके मध्यमे कौनसा पहिलेंका है और
कौनसा पीछे निर्माण हुआ है सो आज पर्यंतभी
उसका कोई निर्णय नहिं कर सकता है। दोनो यंत्रोंको
ही देवताके पूजन समयमो आवहन और पुरोहितद्वा
रा वादित होता है। किन्तु इनोमे प्रभेद एहि जो भारत
मे नासिका द्वारा वजाउते हैं, इस समयमेभी एहि री
ति होती है- इसका कारण एह है कि तिस समयमे एह
संस्कारथा जो, जो यंत्र इतरसों पावन लोक मुख
सें वजाउते थे, सोई पूज्यपाद ब्राह्मण द्वारा उसतरह

सें व्यवहृत नहिं होताथा, आलए लोक इसी निमित्त सोना सिका सेंही वजाउतेथे, मुख द्वारा उच्छिष्ट नहिं करतेथे। किन्तु क्या आश्चर्य्य है। सोमाइटी द्वीपमे और फिजि आइलएण्डमे भी एहि यंत्र नासिकामै वादित होता है, भारतकी एह प्रथा अर्थात् रीती जो किस प्रकारसें उक्त दूरवर्त्ती द्वीपमे प्रचलित हुआ है सो बोला नही जाता। जो समस्त यंत्रमे एकनलयंत्र और द्विनल और तिहु सभके भिन्न भिन्न प्रकार भेद इसी पृथिवीमे प्रचलित हैं प्राय तिहुका समुदायही भारतसे अति प्राचीन कालसें ही उत्पन्न होकर वर्त्तमान है — एह सकल संबंधसें सम्मान संपर्कसें और और देशा प्रति हुई ही स्वरूप हुए हैं — वस्तुतः प्रकृत इतिहासके अभावसे और प्रकृत कारु निर्णयकी अस्थिरता वशसें इस तरु नाना मत भेद उपस्थित हुए हैं — किन्तु सभ देशाके फूत्कार यंत्रके मध्यमे एक यंत्रके निमित्त हम लोकके पासेका भारत खंड उन्नततम चूडामे आधिरोहण कियागया है अर्थात सभ देशों के मध्यमे भारत वर्ष वडा श्रेष्ठ प्रधान है। सो उसी भारतके चिरकालके गौरवका आपनेको धन है। सोई अधुनातन क्या इस समयमेभी न्यास तरंग नामसें अर्थात् आमानरः बोहिया प्रचलित है, किन्तु अति प्राचीन कालसें तिसका नाम उपांग था ——

"अङ्गैक देशमाश्रित्य मयूरिर्यस्य जायते।
उपाङ्ग-स्स समाख्यातः कविभिस्तत्त्वदर्शिभिः

एह अति प्राचीन संस्कृत पद्य, हमारे पासे उक्त वाक्य प्रमाण सहित करते हैं।

अर्थात् इदमित्थंक कै निश्चय नहीं भया ।२

मढेऊएथंत्र

आनद्ध यंत्र।

ढोलक, ढोल, मृदङ्ग, तालमृदङ्ग वा तबला, खोल, ढक्का, काड़ा, (नगारा) नागरा, दमामा, जगझम्प, डमरु, डुकडुकी, टिकारा, तासा, खंजनी (री), डम्फ, डफले
घुंगरू ४ हुडका, घुंघरू, घोषयंत्र, खोर्द्द, मादल, जोड़घाई, एह सभ इसी श्रेणीके अन्तर्गत हैं; पंक्तिके
और और यंत्रोंकी न्याईं भिन्न भिन्न उपलक्षमें व्यवहृत होय रहते हैं इन्हू सभकों भी सभ्य और वीचमें
ग्राम्य प्रभृति भिन्न भिन्न श्रेणीमें विभागकियेगयेहैं। विशद करनेके निमित्त नीचेमें तिन्हू सभका एक प्रसिद्ध र
तालिका दीया गियाहै, — क्या नमूना दृखाई देताहै

सभ्य	वाहर्द्दीषिक	सामरिक	ग्राम्य	माङ्गल्य
मृदङ्ग	ढक्का	जगझंप	डुकडुकी	टिकारा
तबला	ढोल	ढक्का	खोर्द्दक	काड़ा
ढोलक	नवत	तासा	मादल	नागरा
	नागरा	काड़ा	जोड़घाई	डम्फ
		दमामा	खंजनी	खोल
			तमक	
			हुडका	
			घुंघरू	

इन्हू सभके मध्यमें प्राय सभही अन्तर्गत सिद्ध हैं बाजे वाद्य—गान और नृत्यके संग संग बाजतेहैं और कितनेक और बाजेभी पूजा और विवाह प्रभृति

३८। मृदङ्ग।

उपलक्षमें व्यवहृत होतेहैं, अर्थात् केवल बाजेही बजाउतेहैं, जिसस्थानमे नृत्य वा गान किसीके भी साथ योग देनेके निमित्त नही वी बजाउते, अथच बजाउनेके समय कोई कोई बजाउनेवाला बजाउता बजाउता आमोदसें इतना प्रसन्न होउठते है जो आपसें आपही नाचने लगजाता है। एह सभ जंत्रोमे भिन्न भिन्न आकारका और भिन्न भिन्न उपादानका एक एकही खोलहै और तिसका एक अथवा दोनो मुखही चर्मद्वारा आच्छादित कया भए और उसी आच्छादनचर्मकी रज्जु अथवा चर्म सूत्रसें संयत होताहै। इसीश्रेणीमें स्थित अनेक यंत्र अति पूर्वकालसें इहु स्थलमे व्यवहृत होतेथे, किन्तु तिनका अधिकांशही विलुप्त होगयाहै और कितनेक यंत्र नामभेदसें और उपलक्ष भेदसें अबभी व्यवहृत होते हैं। इहु सभके मध्यमे जो कोई आदी है तिसका निर्णयकरना दुष्करहै। तिस्से एक अवश्यही स्वीकार करना चाहिये कितनेक सहस्र वर्ष वीते गए जो देवादिदेव महादेव डमरू यंत्र व्यवहार कर्तेथे, सो होया इसदलमे प्रत्येककी वर्णनामे प्रवृत्त हुए हां इस्मे जैसे होवे सो होय।

इस यंत्रको यथार्थ बनाउनेवाला कहिताहै कि इसका विषय हमारे बनाए हुए मृदंग मंजरी ग्रंथमे विशेषकरकें देखने योग्यहै। एहि यंत्र सभ्य यंत्र श्रेणीके मध्यमे प्रधानरूपसें परिगणित है। एह पहिलें मृत्तिकाद्वारा निर्मित होताथा, इसी निमित्त इसका नाम मृदङ्ग भयाहै।(क) किन्तु परिशेषमें

(क) मृत् मृत्तिका अङ्गं अंगभूतं यस्य तत्। इस शब्दका अर्थ मृत्तिका जिसका अंगभूत भयाहै।

अर्थात् पुलाउ

कार्यके

क्यावा जे १४

इस दलमे सभका आदि

१६ मृत्तिका द्वारा नाहोकर इस कालमे काष्ठके वनाउने
का आरंभ होयाहै और मृत्तिका निर्मित समुदाय
का इस कालमे लाघातलसें खोल कहि जाते है।
इसी मृदंगका पारसिक नाम पाखवाज है,
वडा५ अर्थात् जिससें घोर गंभीर शब्द निकसता है।
पुराणमे लिखाहै, सत्ययुगमे देवादिदेव भगवान्
महादेव महावल पराक्रान्त दुर्जय त्रिपुरासुर
को घोर संग्राममे विनाश करके इन्द्रादि देवगण-
परिवेष्टित भावमे आनंदसें नृत्य कियाथा।
उसी नृत्यके अनुसार भगवान् ब्रह्माजी मृदंगकी
सृष्टि पहिलें करी और गणाधिप जो गजानन है
तिसको प्रथम उक्त यंत्रसें समर विजयी व्योमकेश मृदंग १२
कों नृत्यके संग ताल देणे के निमित्त अनुमति दिया
था। तिसदिनसें लेकर मृदङ्गकी उत्पत्ति भई है।
लिखा है, उसी त्रिपुरविजयके समय त्रिपुरासुर
वधके पीछे तिसके रुधिरसे पृथिवी मंडल
भीजकर कीचड युक्त होगया, भगवान् ब्रह्मा उसी
रुधिरसें भिजी होई मृत्तिका लेकर मृदंग नि
र्माण किया और उसी असुरको चर्म लेकर
मृदंग यंत्रको आच्छादनी शिरावधी नाडी उसकी
का समुदाय उसकी वेष्टनी अर्थात् विन्नी रसरी और
अस्थिहें गुल प्रस्तुत कियाथा। ✱

✱ इसका और और विषय हमारे निर्माण किये
हुए ग्रंथमे देखणा चाहिये।

एहि मृदङ्ग-यंत्र अनेक दिनसें हमारे देश
मे प्रचलित होके वर्त्तमान है। इसलिए इसको
सभलोक खदिर, रक्तचंदन, कसीर, पनस
इत्यादि वृक्षोंके काष्ठद्वारा निर्माण कियाजा
ताहै। इन सभके मध्यमे खदिर निर्म्मित
मृदंगही सभसें श्रेष्ठ है, किन्तु चन्दन काष्ठ
निर्मित मृदंगकी ध्वनि अतिशय करके गं
भीर और सुमधुर होतीहै। इसकी दीर्घता डेढ़
हाथ और यंत्रनिर्माणका उपयोगी काष्ठका
दल डेढ अंगुल परिमित मोटा होताहै। मृदंग
का वाममुख द्वादश अथवा त्रयोदश अंगु
लि व्यास विशिष्ट क्या चौडा और दक्षिण
मुख वामकी अपेक्षा करके एक वा अर्ध अं
गुलि न्यून होताहै। यंत्रका मध्य देश मोटा हो
ताहै। इसी यंत्रके आच्छादनी चर्म सूत्रद्वारा
आबद्ध और चार अंगुल परिमित गोलाकार आठ
गुल्म नाई चर्म रज्जुके संग संलग्न होताहै। एह
गुल्म हाथीके दांतका अथवा काष्ठका होता है।
एहि इसके स्वर-बंधनका प्रधान उपयोगी होताहै। स्याही
मृदंगके दक्षिण मुख कृष्ण स्वरालियुक्त किया हो
ताहै (*)। और वाममुख शुद्ध चर्माच्छादनीसें क्या ख
लुसें आवृत होताहै, बजाउलेके समय बाजदार लोक
उसी आच्छादनीके ऊपर मयदा लेपन करलेते हैं।
एह यंत्र बजाउते हुए स्वरालियुक्त मुख दक्षिण हस्त
लेपन के पासे और मयदा विशिष्ट वाम हाथके पासे प्रायही
होताहै, कोई कोई बजाउलेवाले वैपरीत्यभी करते हैं इसको
करतेहैं। किन्तु यंत्रको गोदमे राखके बजाउलेके समयमे
दोनो मुखोमें दोनो हाथही व्यवहार करते हैं।

(*) भस्म, गेरीमिट्टी, केन्दुकफल, अन्न, पिठा एसभ वस्तु पाइकर स्वराली
अर्थात मृदंग वास्ते लेपविशेष होताहै।

एहि मृदङ्ग जिसद्वारे पहिलें मृत्तिकाद्वाराही निर्मित होताथा, तिसद्वारे श्रीकृष्णभगवान्‌जीके लीलासंकीर्त्तनके समयही अधीतरूप व्यवहृत होताथा। किन्तु अधुनातन अर्थात् इस वर्त्तमानसमय काठका मृदंग सभा योग्य यंत्रके मध्यमे परिगणित होताहै, एह ध्रुपदादि गीतके संगही प्राय सभलोक बजाउते रहितेहैं— किन्तु पूजाके समय विश्वेश्वरजीके मंदिरमेभी इसका प्रचलन देखलेमे आउताहै।

ढोलक।

एहि यंत्र सभ्य और वाहिर्द्वारिक इहू दोनोमेंही परिगणित है। ढोलकका शब्द प्राकृत है, इसका कोश काष्ठद्वाराही सभलोक निर्माण कराउते हैं और इस्का मध्यस्थल मृदङ्गकी न्याईं ऊंचा और दोई मुख पतले चर्म्मद्वारा आवृत अर्थात् मढेहुए होतेहैं दोनो पासे चर्मकी रज्जूद्वारा और और पासे तिर्य्यक भाव सें आबद्ध क्या बांधेहुए होतेहैं। स्वरके तारतम्यके निमित्त आवश्यक मत एही है जो सभ रज्जूको न्यूनाधिक अर्थात् कहीघट कहीं बढीक इह संयत कियाजाताहै। सोई सकल रज्जूमें लोह, पित्तल और चांदीके अंगुलीयक अर्थात् छल्ले (कडा) आबद्ध होतेहैं, तिह सभके अवस्थानभेदसे रज्जू सकलका बंधन इहभार तारतम्य होताहै अर्थात् कसा जाता है। इस्के दोनो मुख प्राय सभ समान व्यास विशिष्ट होते हैं। वाम मुखमे खरालि अर्थात् मसाला लेपकिया होयाहोताहै। इस्की वादनक्रिया गोदमे राखकर दोनो हाथों सेंही संपादित होती है। मृदंगकी न्याईं बजाउनेके समय इस्के खरालि रहित मुखमे मैदेका लेप नहीं करते। देंका जाताहै

ढोल।

एह यंत्र कुछ पहिलें हाफ़ आकड़ाई मे अर्थात कोई नृत्यविशेषमे और इसतरह यात्रा, क्या रास मंडल, पाँचालि, और कवि प्रभृति मे व्यवहृत होताहै। अर्थात् एह इत्यादि बंगदेशमे उत्सवविशेषहैं कवि क्या- एक गान करचुके उसके पीछे दूसरेने उसका उत्तर रचना करके प्रत्युत्तर देदेला इसी गानकों कवि कहितेहैं ग्राम्यलोक बाऊलीन यंत्रके संग विपाणी प्रभृति अर्थात् हडीयां इत्यादि स्थलमेभी व्यवहृत करतेहैं। ढोलकके अनुरूप यंत्र सिडिया, एसिरिया प्रभृति देशमे पहिलें व्यवहृत होताथा और आधुनिक क्या अबके पारस्य इत्यादि स्थानमे इसतरहमेभी लक्षित होताहै।

तबला वा तल-मृदङ्ग।

एह यंत्र सभ्यहै। एह दोनो वामक और दक्षिणक, आम लोक जिनकों बाँयाँ और दहिना बोलतेहैं। एह दोनो इकट्ठेहै, कभी कभी वा केवल वामकही व्यवहृत होताहै। उदारा स्वरमे बद्धरहिताहै बोलतेहैं कि वामकको समय समयमे ताल देनेका निमित्त लोकमे व्यवहार करतेहैं। दक्षिणकको पक्षमे उसतरहसें नहीहोता। सो एकस्वरमे बाँधा रहिताहै। तबलेको एकमुखमे केवल चर्माच्छादनी आवद्ध रहिताहै। तबला एहयंत्र एकही संज्ञामे आसिरिया देशमेभी प्रचलितथा।

ढोल।

एह ग्राम्य और वाहिद्विधिक यंत्रहै। इसका आकार केवल ढोलककी न्याईहै, किन्तु ढोलककी अपेक्षा करके ढोल किछ बडाहोताहै, इसके भी वाम

यंत्रकोष।

मुखमे खराति अर्थात् मसाला लगा होता है। किन्तु एकपासे हाथसे और दूसरे हाथमे दंड लेके इस यंत्र को बजाउते हैं। बजाउनेके समय एहि रज्जु द्वारा गल देशमे लटकाय लेते हैं। एह यंत्र विवाह और पूजा इत्यादि उपलक्षमेंही व्यवहृत होता है। इसके साथ बजाउने वाला यंत्र कांसिका का विजयघंट है। प्रतीत होता है कि ढोल यंत्र कालांतरमे परिणत होकर ढोलक होकर स्थिर रहेगा।

ढक्का।

एह यंत्र बाहिर्द्वारिक है। एह सभकी अपेक्षा करके वृहत्तमका बहुत बडा है और बहुत प्राचीन यंत्र है। ऐसा कि एहि यंत्र है त्रेतायुगमे राम रावण के घोर युद्धमे भी व्यवहृत होता था। इसके दक्षिण मुखमे दोनो दंड द्वारा बजाउनेकी क्रिया संपादित होती है। एह यंत्र हमलोकों के देशमे चंडक नामक पूजा विशेषमें और सभ शक्तिकी पूजा के समय व्यवहृत होता है। इसका आनुषंगिक बाजा कांसिका है। ढक्का यंत्र पक्षी का पालक चूडामे सुशोभित होता है अर्थात सभ यंत्रका शिरोमणि ढक्का यंत्र है। एह यंत्र भारतखंडका ही बोलनेसें इसमे बडी अत्युक्ति नहीं है अर्थात यथार्थ है। किसकारण कि आजपर्यंत यंत्रके जितनेक चित्र है, और जितनीक प्रतिमूर्त्ति नाना देशोंमे आविष्कृत होईयां हैं— इसका प्रतिरूप अर्थात् चित्र किसी स्थानमे भी दृष्टिगोचर नहीं हुआ। केवल १८२३ खृष्टाब्दमे मिसर देशके ध्वंसके पीछे थिवित नामक को ईस्थल पुहुकके इस तरहका एक यंत्र उहांसे मिल गया।

यंत्रको

अर्थात् इसके साथ का ८

अर्थात् प्रसिद्ध हैं

ध्वंसावशिष्ट

यंत्रकोष।

काड़ा।

खण्ड १

इस यंत्रके भी एक मुखमें चर्माच्छादनी मढी होई होती है। इसको गलेमें लमकाय करके दंड द्वारा बजाउते हैं इसका मुख पिछले पाससे की अपेक्षाकर्के बड़ा विस्तृत है। एहि एक बाहिद्वारिक यंत्र है, पूर्वकालसे राजादिकोंके बहिर्गमन और युद्ध समयमें एह बजाई जाता था। अब पूजा के समय जगझम्प प्रभृति अर्थात् डफले इत्यादि और और मदंकुल आनद्ध यंत्रके सहित इसकी वादनक्रिया संपादित होती है।

नागरा।

एह यंत्र दो प्रकारका है, क्षुद्र नागरा- और महा नागरा। एह दोनो ही बाहिद्वारिक यंत्र हैं दोनो ही मृत्तिका द्वारा निर्म्मित होते हैं। क्षुद्र नागरा देखनेमें एक गोलाकारका आधा भाग है। इसके एक मुखमें आ चर्म च्छादिनी कितनीक चर्मरज्जु द्वारा आबद्ध रहती है। सोई सकल चर्मरज्जु और पिछले पासके एक बन्धन विष्टनमें अर्थात् चर्मरज्जु की बिन्नीमें बांधा होता है। और शोभाके निमित्त इस यंत्रमें पंछियोंके पर और घोडेके केश चर्मरज्जुके बीच बीच जोडे रहते है। इस यंत्रको भी गलेमें पाइकर दंडद्वारा बजाउते हैं। इसका व्यवहार सर्वदा काड़ा यंत्रके साथ साथ ही होता है। इस यंत्रमें जिस तरह पाछि पदरह हुए होते हैं, इससे जो एहि यंत्र अति प्राचीन है तिससे अणुमात्र भी संशय नहीं। अति पूर्वकालसे एह युद्ध यंत्र था। किन्तु इस तरह राजादिकोंके बहिर्गमन, पूजा और विवाहादिमें इसका अधिक प्रचलन है।

महानागरा यंत्र छुड़नागराकी अपेक्षाकर्के व हुतवड़ाहे। और पश्चात् भागसे क्रमकर कोणका रहोयाहे। एह दोनोंहीं वाम और दक्षिण। आकारगत और और विषयमें एहि यंत्र अपरकछुक एयंत्रकी न्याई है। एहिमहानागरा टिकारा-नामक और एक यंत्रके साथ नौबतमें व्यवहृत होताहे। इसकी वादनक्रिया भूमिमें राखकर्के हि दोनो दंडद्वारा संपादित होती है। पहिलें प्रातुकोंजीतके राजादिकों कोगृहप्रत्यागमनके समयमें उष्ट्र, हस्ती प्रभृति के पृष्ठमें राखकर्के वजाउतेथे, किन्तु इससमयमें विवाहादिकोंमें ही एह वजाई देहैं।

यंत्र कोष।

जगझंप।

एहयंत्र वाहिद्वारिकहै। एहपूजा और विवाह प्रभृति उपलक्षमें व्यवहृत होताहे, पहिलें एहयुद्धयंत्रथा। इसकी चर्माच्छादनी चर्मरज्जु वा डोरीद्वारा संबद्ध अर्थात् मढीहोईहोतीहै। इसका कोश मृत्तिका निर्मित होताहे। इसयंत्र को गलेमें और सन्मुखमें राखकर सामान्य लोक वजाउतेहैं। एहयंत्र तासा नामक एक यंत्रके सङ्ग व्यवहृत होताहे। कार्यमेंर

तासा।

एहयंत्रभी वाहिद्वारिकहै। पहिलेंहीं किया गयाहे जो एह जगझंप यंत्रके संग वजवाईदाहै। सुतरां जोजो उपलक्षमें जगझंप उसी उसी उपलक्ष में इसयंत्रको वजवाते हैं। इसकी चर्माच्छादनी

निरन्तर ३

नासा।

किंचित् स्थूल अर्थात् मोटी है। इस्कोबी चका पहिलेकी र प्रकार्से अपेक्षा करके बडा है।

58

दामामा।

इसीका और एक नाम दगडा है। एह देखले मे टिकारा की न्याई है, किन्तु इस्का मुख प्रशस्ततर अर्थात् अति सुंदर है, सो चर्म्म आच्छादनी द्वारा आच्छन्न है। इस्का कोषा भी मृत्तिका निर्म्मित होता है। एह यंत्र भी दोनो डंडयों करके बजता है। पहिलें एहि यंत्र युद्ध यंत्र था। इस यंत्र के साथ भी टिकारा बजाइता है। किन्तु इस काल मे बहिर्गमन प्रभृति उपलक्ष मे अर्थात् राजादिकोंको यात्रा समय के उद्देशा करके इस्का व्यवहार होता है।

जोड घाई।

टिकारा।

एह यंत्र बादर के हारका है। इस्के एक मुख मे चर्माच्छादनी, डोरी वा चर्मरज्जु द्वारा आबद्ध अर्थात् मढी होई होती है, उपर मुख को एक हारी है। उस मुखमे चर्मवेष्टन द्वारा उक्त डोरी वा चर्मरज्जु सारी बांधी होती है। एह यंत्र महा नागरा यंत्र के सहित नौबत मे भी मिसो रख करके दोनो डंडयों करके बजाउते हैं, नागरा यंत्र की न्याई विवाहादि के उपलक्ष मे हाथी वा उंठ की पिठ उपर रास करके बजाउते रहिते हैं। इस्का आकार इस्को व न्याई बडा है और इस्का कोषा भी मृत्तिका निर्म्मित है।

जोड़घाई।

एह यंत्रभी वाहिरद्वारिकहै। एह यंत्र ढोलके
ऊपर एक क्षुद्र ढोलजोड़ा होयाहोताहै। दोनोंही बा
जतेहैं, क्षुद्रतरमे उच्चस्वर और वृहत्तरमे अर्थात
अतिवडेमे निम्न स्वर प्रकाशित होताहै, इसकेभी
दोनोमुख और दोनो मुखोंही चर्माच्छादनी द्वारा मुखही
मढे हुए क्या चर्मरज्जु और डोरीद्वारा बांधे हुए और
तिस्मे वडा जोजित होताहै। एह यंत्र गलेमे पा
यकर वाम मुखमे दंडद्वारा और दक्षिण मुखमे
हाथकर्के दामामा प्रभृति यंत्रके संग बजाईदाहै।
इसको वाम मुखकी अपेक्षाकर्के दक्षिण मुखमे
उच्चस्वर निनादित होताहै।

(margin: खु / गंभीर २ / बजाया हुनिलता है १)

यंत्रकोष।

खोरदक।

(margin: खो)

एह यंत्र वाहिर्द्वारिकहै और दोनोंही वाम
और दक्षिणहै वामेकी अपेक्षाकर्के दक्षिण
का मुख बहुत छोटा और मुद्रहै। इसका मुख एक
हीमात्र और चर्माच्छादनी द्वारा आछन्न होताहै। (margin: मढा होया)
वाम मुखके मध्यस्थलमे क्षीरल लेपित
होताहै। दक्षिणको आपिक तीव्र स्वर कर
नेके निमित्त रज्जु योड़नेका एक विशिष्टता
होतीहै। एह केवल रोशनचौकी बाजेके साथ
तालदेनेके निमित्त व्यवहृत होताहै।

अर्थात कसा जाते हैं २

डमरू।

एह यंत्र ग्राम्ययंत्र पंक्तिके मध्यमे परिगणित है। किन्तु अति पूर्वकालसें देवादिदेव महादेवजीका अतिप्रियतम यंत्र होताभया। एह आकारसें अति क्षुद्र है दोनो मुखमे हीच र्म्मचर्म्मास्तनीसे आवृत है। इस यंत्रका मध्य भाग संकीर्ण, उसस्थान हाथकी अंगूठा ओर तर्जनीको मध्यस्थलमे राखकर नाडिले अर्थात इसके दोनो पास्से जो दोई छोटे छोटे रज्जू करके बांधे हुए दोई सीसक गुटिका होती है, सो चर्म्मास्तनीके ऊपर तिसके आघात लागलेसें इस यंत्रकी वादन क्रिया संपादित होती है। इस यंत्रको सभलोक डुकडुकी बोलते हैं, सर्प ओर बानर लेके फिरने वाले लोक इस्को अधिक व्यवहार कर्ते हैं एह यंत्र प्राय आसियादेशमे ओर आफ्रिकादेशमे प्राचीन देशमात्रमेही दुसराँमेभी समय समयमे दो एक देखाजाता है।

आनद्ध यंत्र।

प्रचलित जो सभ आनद्ध यंत्र हैं इन्हका विवरण होगया। इन्हूसें भिन्न ओरभी अनेक यंत्र हमलोकोंके देशमे प्रचलित थे, किन्तु सोसभ उपलक्षाभाववशसें विलुप्त होइ गये हैं; तिन्हके नाममात्र अवशिष्ट रहिगये हैं। पहिलें ओर ओर प्राचीन देशकी न्याँई हमारे देशमेंभी मनुष्य मंडलीके सङ्ग देवता ओर अप्सरा प्रभृतिकी प्रीतथी। युद्धके जयकेसमय ओर तिन्हका

साहाय्य अथवा अभिनन्दन करनेके निमित्त नाना प्रका
रके बाजे बजवाते थे, सो सभ बाजेयों मध्यमे दुन्दुभि ही
अधिक प्रशस्त। पूर्वकालमे युद्ध समयमे नानाविध
वाद्ययंत्र वादित होते थे, किन्तु इस स्त्रर सो सभ
युद्धका काल व्यतीत हो गया है, सुतरां तिन्ह सभका
और आवश्यक नहीं है। किन्तु तिन्ह सभके मध्यमे
अनेक ही उत्सव और और उपलक्षमे और नानान्तु
रसें व्यवहृत होते हैं। अधुनातन तथा अववर्त्तमा
न समय जो सभ आनद्ध यंत्र तथा मढ़ुक ए यंत्र ह
मारे देशोंमे प्रचालित है, सोई सभई यत्किंचित थोड़े
रूपांतर भेदसे आसिरिया और मिसर प्रभृति
देशमे व्यवहृत होते हैं। हमारे देशका मृदङ्ग
ढोलक और खोल इत्यादिकों की न्याई सिंहल
दीपका बेरी वा भेरी मिसर देशमे व्यवहृत हो
ता हय। कोई कोई बोलते हैं, इसी तरहका यंत्र
आसिरिया देशमे भी एक समेमे प्रचालित था।
मिसर और आसिरिया देशके यंत्रोंमे मृदङ्ग-
की न्याई गुल्मका व्यवहार था। एह सभ ही
स्वीकार करते हैं जो मिसर देशके भी आसिरिया
देशकी न्याई इहूदीयोंके भी अनेक प्रकारके
आनद्धयंत्र प्रचलित थे, किन्तु तिन्हके मध्यमे
डोफ ही अधिक प्रसिद्ध है। मेसर डोफ, आरब
देशके दारा बुक और हमारे पाससेके लोक डम्फ ख
एक ही सामग्री हैं। हमारे पाससेके डम्फकी
न्याई उक्त डोफ यंत्र कोई वाहि लौकिक
आनन्द समारोह उपलक्षमे अर्थात बाहिरके उ
त्सव विशेष मेला इत्यादिमें नारी गण कर्त्तृक ही

अर्थात एक ही रूप यंत्र है ४ — अर्थात स्त्रियोंका निमित्त ही वादित होता है २

अर्थात् स्त्रियोंकर्के निर्मित यंत्र बजाईदाहै। बाइबेल
नामक जो ख्रिष्टका धर्मपुस्तकहै उसमें देखलेसें पाया
जाताहै सुप्रसिद्ध जो मिरियाम् नामकहै सो इसका
बहुत व्यवहार कर्तेहैं — केरोया नामकका सेनास
रूए जिसकालमें विनष्ट हुआ था, तिसकाल सोई
स्त्रीके औरऔर इस्राएलु रमणीके साहित एहि यंत्र
बजाउते बजाउते आनंद गान किया थे। जेपृथार कर्तेथे
जुहिडा नामक एहि बजायकर पिताकों अभिनंद
नकर्तेथे।

सभ देशमैंहीं आनद्ध यंत्रका अर्थात् मढे
हुए यंत्रका सृष्टि जो किस समयमें होई थी
सो कोईभी स्थिरकर्के बोलनेनहिं सकता।
पृथिवीके मध्यमें इसकालभी इसप्रकारके अनेक
अर्थात् मूर्खहैं ५ असभ्य जाति है, जिन्हके निकट किसी तरहका सौ
तयंत्रभी परिचितनहीं। जेकर तिन्हको कभी कभी
कंठ संगीतके साथ ताल देनके निमित्त किसी सा
मग्री की सहायताका प्रयोजन होता है, सो तैसें
होनेमें करताली वा कोई दोई काष्ठ खंडके पर
स्पर आघातसें सो कार्य्य होतारहिताहै। और
अबके इसप्रकार अनेक असभ्य जातिहैं, जोसभ
ढोलक इत्यादि आनद्ध यंत्र व्यवहार करिते रहि
तेहैं।

घनयंत्र।

सप्तशराव, मन्दिरा, बड्ताली (बड्ताल),
करताली, घंटा, कांसर, घडी, झांजर (
घुंगरिका (घुंगरू) नूपुर। एहहैं

घनयंत्र।

क्या जैसे ताली को कोई जोर से तुम्हारे कर घोड देवे फर रस्सी

एह सभही पूर्वोक्त यंत्र सभकी न्याई भिन्नभिन्न
उपलक्षमे अर्थात् कार्य्यविशेषमै व्यवहृत होते हैं
इन्हू सभकोंभी सभ्य, ग्राम्य इत्यादि पृथक पृथक मध्यमे २
श्रेणीमे विभाग किये गये हैं। एह प्राय सभही
कोई धातुके पदार्थसें निर्मित होता है। कोई कोई काच छका
स्थित स्थापक गुलेपेतंभी ओर खरोज मनो पयो
गी कोलके इन्हूकेमध्यमे कोई कोई काचकाभी
होता है। एह सभ जो किस समयमे व्यवहृत होते
थे ओर कबसें इन्हूका आरंभ हुआ है एह निश्चय
नहीं किया जाता। तब इतना अवश्य ही स्वीकार
वि करना चाहिये जो धातुके आविष्क्रियाके पीछे स
एही सभ व्यवहृत होते थे। सभ्यताके इतिहास पाठ होवें
मे अवगत क्याजा जाता है कि सभ धातुओंके आगे
लोहाही पहिलें हुआ है। सो निरंतर प्रथमसें प्रघट
जो सभ घनयंत्र निर्माण किया जाता था सो सभ लो
हेकाही होता था। इसी निमित्त इस समुदाय
धा यंत्रका साधारण नाम घन अर्थात् लोहा है। पीछे
ओर ओर धातुके प्रघट होणेके पीछे जिसस
मे लोकने जो सकल धातुके उपयोगी देखा,
उसी धातु सकलके द्वारा ओह यंत्र निर्माणकरने
मे आरंभ कर लिया। इन्हूसभके मध्यमे प्राय सभ
ही मांगल्य कार्यके निमित्त ओर ओर उपलक्षमे
व्यवहृत होते हैं; केवल मंदिरा, घटूताली
ओर करताली एह कितनेक अनुगत सिद्ध हैं
सप्तधाराव इन्हूके मध्यमे सभसे श्रेष्ठ हैं ओर
वितंत्री प्रभृतिकी न्याई स्वतःसिद्ध यंत्र है। इस श्रे
णीमे अनेक परस्पर आघातसे वा कोई चाहिये वा
दूसरेके आघातसें बाजता है सो होवे इसतालमे
सभही क्रम क्रमसे [illegible] । सभका विव

क्या परंपरा सें चले आते हैं

यंत्रकोश।

झांजा वा झांजर।

एह यंत्र बोध होताहै जो सभ घनयंत्रका
आदि एही यंत्र होवेगा। इसमें कारण हैहै कि
एह यंत्रभी पहिलें लोहेकाही होताथा, इस
समयभी इसप्रकारके लोहेके निर्माण किये थे
हुए यंत्र अनेक देखनेमें आउते हैं और भी,
जिसवास्ते इसयंत्रका अन्य कोई विशेष नाम
नहीं था, केवल इसीद्वारा जो शब्द निनादित हो
ताथा, उसी शब्दसेंही इसका नाम रहा है, तिस
वास्ते एही जो प्राचीनतम है, तिस विषयमें अणु
मात्रभी संशय नहीं है। कारण, अति पूर्वकालसें
भाषाका तत्तपरिपुष्टि नहीं हुआथा और उसी नि
रतनी मित्त प्रत्येक पदार्थका पृथक् पृथक् नाम होना
असंभव था, उस समय इसतरहके यंत्रकी सृष्टि हो
ती होवेगी। जिस कारण झंजार शब्दकी इस
उत्पत्ति एही जो, जो यंत्र 'झंजा' ऐसाकार
शब्द करे। * उसको चलित वार्तामें झांजर बोल
तेहैं। इसका आकार बडाहै और गोलाकार और
समतल और मध्यभाग थोडासा विंगा उसी स्थान उच्च
मेंही आघात कियाजाताहे। पूर्व समयमें दूसरें
बुलाउनेके निमित्त अथवा कोई संवाद जनाउने
के निमित्त राजालोक व्यवहार करते थे। तिसवा थे
स्ते मंगल कार्यके निमित्तही अधिक व्यवहृत
था। इसको अंगरेज लोक घङ् बोलतेहैं।
सो बडा आश्चर्यका विषयहै कि पृथिवी के प्राय
सभ देशोंमें एह यंत्र घङ्-नामसें प्रसिद्ध है।

---

* झंजा इति शब्दं राति यत् तत्। क्या झंजा ऐसें करके इसका
शब्द होताहे इसनिमित्त इसका नाम झांजरा किहाहै।

सप्त-शरावं।

एह बंगाल देशका अति पुरातन यंत्रहै। इउरोपदेशके हार्मनिका यंत्रके सदृशहै। पहिलें सात पान मिट्टीके कूठेकोलेकर यथोचित भावसें जलपूर्ण करिके बजाउते हैं। एह हि पहिलें प्रसिद्धमूल सप्त स्वरके अनुमतसें गिले गये हैं। अब इस समयभी इसी तरहका यंत्र देखनेमें पाया जाताहे। इस तरह अधिक संख्यामें भी व्यवहृत होताहे। एह यंत्रभी नाना देशोंमें नाना प्रकारका दृष्ट होताहे अर्थात् देखनेमें आउताहे।- इउरोपमें कांचमें, चीनदेशमें और ब्रह्मदेशमें स्थिति स्थापक गुल्लेपेत अर्थात् जु आया हो याने जावे खींच देनें काष्ठ सें फेर तैसा होआवे रेसेर सें निर्मित होताहे। किन्तु एहि प्रयोगके आकार अनेकही नौका कारकी न्योंईहे। इसी तरहके यंत्र कांस्य इत्यादि लेकर नाना प्रकार धातुके भी होसकतेहैं। एह यंत्र आसियाके औरऔर देशोंमेंभी देखाजाहे।

ग्राम्य यंत्र।- बद्दूताली, करताली प्रभृति सभ यंत्रोंकी वलित संज्ञा बद्दूताली है।

नूपुर।

एह एक अलंकार स्वरूपहे। एह पाउंमे पहिरकर्के ताल तालमे वादित होती है। नृत्यके समय यहीं इसका व्यवहार देखनेमें आउताहे।

घडी।

एह यंत्र पहिलें लोहेकाही होताथा, अब

56

यंत्रकोश।

वर्त्तमानसमयमे कांस्यका होताहै। इस्का आका
र गोल और सम तल है। इस्के बजाउने से वा
द सूचना और समय निरूपण अर्थात् काल
के निर्णय निमित्त पूजाके समय, मांगल्य कार्य्य,
और राजादिकोंके समारोहमें वहिर्गमन क्या
वाहरजाने के इत्यादि उपलक्षमे इस्का व्यवहा
र चले आउताहै। मुजरद्वारा इस्की वादनक्रिया
साधित होतीहै। किसी किसी स्थलमे प्राचीन
राज वंशके गृहमे वालू की अथवा जलकी घडी होतीहै।
पूर्वकालमें जैस तरह ऐसी घडी होतीथी सो अब व
र्त्तमानकालकी घडी निर्माण नहीं होती, तिस वास्ते
कालनिरूपणके निमित्त कोई एक निर्दिष्ट गृहकी
रेत कोठडीमे वालुका अथवा जलपूर्णकरिके तिस घडी पात्र
एक के तल देशमें सूक्ष्म छिद्र करिके उस जलके पात्रमे रा
खी होती है, उसी छिद्रके मार्गसें उक्त जल वा वालु
काराशी सब निपतित होतें जितना समय लगता
है, उतना परिमित समयका नाम एक दंड वा घडी
और उसी सूचनाके निमित्त घडयाउलमें मुजरद्वारा
चोट कराईजातीहै उसी निमित्त एक दंडकों एक घ
डिकाभी बोलतेहैं। इस समयमे कोई कोई धनवान
के वाहरके घरमे इसप्रकारकी जलघडी देखनेमें
आउतीहै। हिन्दु लोकके विना और और जातिके
इस यंत्रको मांगल्य यंत्रके मध्यमे नहिं राखते,
केवल समय निरूपणके निमित्तही व्यवहार
कर्ते रहितेहैं।

द्वितीय अध्याय।

ऐकतान-वादन।

हिन्दु ऐकतान-वादन।

कितनेक भिन्न जातिके यंत्र भिन्न भिन्न ग्राम के स्वरसंयोगसें एककालमें बजाउनेको ऐकतान वादन कहितेहैं। बंगाले देशमे "ग्राखडाई बाजा" "नौबत"* और "रोसन चौकी" इत्यादि अनेक प्रकारके वाद्य प्रचलितहैं, किन्तु भिन्न भिन्न ग्रामके एककालमें स्वरसंयोग नहि रहिलेसें, तिन्हका एककालमें ऐकतानवादनके मध्यमें भली प्रकार परिगणना नहीं होसकताहै। यवनोंका नौबत और रौसन चौकीका बाजा समय विशेषमें दूरसें श्रवण करनेसे मधुर लगताहै, किन्तु सोई बाजा एक स्वरग्राममें ही बजता रहिताहै।

प्राचीन कालसें यह और भारतवर्षमें इस वर्तमान कालकी न्याँई ऐकतान वादन नहीं था ऐसा, किन्तु विशेषरूपमें अनुधावन करके देखनेसें एक प्रकार अवगत होताहै, तिस समयमें हिन्दु ऐकतान वादन असंपूर्ण अवस्थामें था। शास्त्रमें लिखितहै, देवादिदेव महादेवजी चारमुखोंमें रुद्रवीणा, डमरु इत्यादि कितनेक यंत्र एकसमयमेंही बजाउतेहैं, सो निरंतर तिन्हको ऐकतान वादन कहना असंगत दोष नहीं होता।

---

* फरु शालि, और वाहारि आजम् तोयारेख और पारस्य लोगके ग्रंथमें लिखितहै, सकंदर बादसाह नें "नौबत" स्रष्टि किया है।

इत्यादि ३

रामायणमे श्रीरामचंद्र रावणका युद्ध, महाभार
संग्राम तमे कुरु पांडवका युद्ध और अपरापर पुराणमे
और उपपुराणमे देवासुर प्रभृति के जो सक
लयुद्ध वर्णन कियेगयेहैं उन्मे अनेक प्रकारके
युद्धके बाजे नर एककालमेही बाजाईदेये; सो
निरंतर तिन्ह सभकाभी एकप्रकार ऐकतान एकतान
वादन बोलकर अभिहित करना अयुक्त नहीहै।

डेफडीके काहरकबाजं नर ८ ऐकतान-वादन वाहिर्वीरिक और आभ्यंतरिक समाके वाज
है। अनावृत स्थानमे बजाउणेसें बडे आकारवा
लायंत्र वहिर्भूत अर्थात् वाहरवजाउणेकर्के उच्च
स्वर संयोगकी आवश्यकता होतीहै, सोइसीनिमि
त्तदूरदेशमे सुनाउणेलियें वजवातेहैं सोनहिं होवे के।
तब "फोंकशोनाय। अर्थात्
और गृहके अभ्यंतरमे छोटछोटे यंत्र अर्थात्
वंशी, वीणा, बेहाला, एसरार इत्यादिके यो
गसे बजाउणा योग्यहै, ऐसे वजाउणेसें सुंदरमी
ठा लगतेहैं। वाहिर्वीरिक ऐकतान गृहाभ्यंतर
मे बजाउणेसें अत्यन्त श्रुतिकठोर होकरउठैहै।
वस्तुतः संगीत मात्रकाही प्रधान उद्देश्य एही
हैजो जिसमे मधुरता होवे।

ग्रंथकारकहिताहै कि हमारे वंगदेशमे प्राची
नकालसें अलिखितहै कि दोप्रकार का ऐकतान
वादनही स्थूलरूपसें होताभया। सो कभी कभी
अनेक प्रकारकी जातिके युद्धयंत्र सभका एक
पलतमे औरऔर सभयंत्रोंका किंवा उत्सवादि उ
वाहिर्वीरिक ऐकतान वादन बोलनाहि सकताहै

अथवा इक है

और राजादिकोंके भवनमें तद्जातिके भिन्न प्रकारके
यंत्रसमूहको एकसमयकें वाद्यकों आभ्यंतरिक ऐक
तान वादन बोलकरके कथनकिया गयाहै, विराट
बीच ४ पर्वकें विराट राजा की कन्या उत्तराके संगीत शालामें
आभ्यंतरिकका ऐकतान वादनका अन्यतर दृष्टा अतिशय करके ५
त स्थलहै।

भारत वर्षका प्राचीन वाहिर्वासिक और आभ्यं
तरिक ऐकतानवादन दो भागसें विभक्तकरने सेस
कताहै; सभ्य ऐकतान और ग्राम्य ऐकतान।
राजादिकोंके समर संघटन कालमें युद्धयंत्र स
मूहका वाद्य और उत्तराके संगीत शालाका
घरकेबीच बजाउनेवाला यंत्र ६ गार्हस्थ्य यंत्र समूहके वाद्यकों क्रमान्वयसे यथा
क्रमसें सभ्य वाहिर्वासिक और सभ्य आ
भ्यंतरिक ऐकतान वादन बोलाजाता है। और
ग्राम्य विवाहादि उपलक्षमें नाना प्रकारकी जाति यंत्र
समूहके वाद्य और वैष्णव प्रभृति भिन्नाभिन्न
प्रकार धर्मावलंबि मनुष्यको देवालयमें खोल, मृदंग,
करतालादिकों एककालके वाद्यकों क्रमसें ग्राम्य
वाहिर्वासिक और ग्राम्य आभ्यंतरिक
ऐकतान वादन कहितेहैं। अपिकन्तु वैष्णवपद एक है
का के ऐकालीन यंत्र समूहके वादनकों ग्राम्य वाहिर्वा
सिक और ग्राम्य आभ्यंतरिक ऐकतान वादन
बोलनेसेभी अत्युक्ति नंही होतीहै। नीराजन-की
र्त्तन और नगरकीर्त्तन ओही तिसका दृष्टान्त
स्थलहै।

प्राचीन हिन्दुलोकके ऐकतान वादन संबंधमें
सिंवर प्रिन्सेप् साहिवभी कितनेक अवगता किये
थे। सोकहिते थेकि "हिन्दुलोकों का प्रातःकालका
ऐकतान वादन सारिन्दा, चौतारा, पाखल' दारा द

बजाउनेवाली

अर्थात् पातशाह

इत्यादि कितनेक ततयंत्रके संयोगसें बाजते होतथे।

जिस समयसें लेकर मुसलमानलोकने भारत वर्ष शासन करनेका आरंभ किया, उसी समयसें ही भारत वर्षके प्राचीन संगीत शास्त्रकी चर्चा क्रमसें विलुप्त होनेका आरंभ हो गया। यद्यपि और लोक तिन्हुका हिन्दु संगीत शास्त्रके विरुद्धमे हस्त प्रसारण करनेलगे अर्थात् दूर करनेकी इच्छा किया तदवी हिन्दुलोकोंने उक्त संगीत शास्त्रकी सहायता अवलंबनसें वाहिद्रिक और आभ्यंतरिक एह दो प्रकारका ऐकतान वादनकी उत्कर्ष साधनमे यत्न वान हुएथे। मुसलमान् पातशाहोंके समयमे ऐकतान वादन संबंधके अधिकांश यंत्र हिन्दुलोकोंके और अस्वांश यंत्र आरब, पारस्य इत्यादि देशवासी लोकोंके निकटसें स्थापकर नूतनरूप ऐकतान वादनकी सृष्टि कियाथा। सोई नीचेमे विवरण कराहुआहै—

एवुल्फजल् सूम्यान् साहेव कहितेहैं, कि आईन अकवरी ग्रंथमे लिखा है जो, सम्राट् अकवरके नगारखानेमे ऐकतान वादनके निमित्त निम्न लिखित यंत्र व्यवहृत होतेथे। यथा—

१। कुवर्गा, इसका साधारण नाम दामामा एह यंत्र वरावर अठारां जोड़ाथे और इन्हुकी ध्वनि अत्यंत गंभीर।

२। चालीस नगारे

३। चार ढुहुल

४। चारही वावर करना एह यंत्र स्वर्ण, रौप्य, पित्तल वा और कोई धातुके निर्मितथे।

५। भारत वर्षके और पारस्य देशके सर्णा अर्थात् सरूनाई एह यंत्र नौही इकट्ठे बजाई देथे।

६। भारत वर्षके, पारस्य देशके ओर ३ओपदेश। के नफीर यंत्रहै।

७। गोश्रृङ्गके सदृश पित्तलका श्रृङ्ग यंत्र।

८। तीनजोडा वडे करताल क्या वडे ध्यले।

सोपहिलें चारघडी दिनशेष रहितयों ऐकतान् वादित होताथा ओर सूर्यभगवानजीके उदयहोने से पहिलें अर्थात् चारघडी रात्रि शेषरहिदयों उसी तरह वाजतेथे हिंदुराजयोंके समयमों। किन्तु अकवर पातशाहके समयमें उसतरहसें नहीं। बजाएगये। सोइस रीतिसें बजनाने लगे कि दो पहिर रात्रिमें अर्थात् आधी रातमों फेर दूसरीवार प्रातःकालमें बजनाने लगेथे।

सूर्योदयके एक घडी पहिलें वाजदारलोक सरनाई बजायकर सोएहुए लोकोंको जगाउतेथे ओर सूर्योदयके एक घडी पीछें सोई लोक नगारे यंत्रके विना कुवर्गा, करना, नफीर ओर ओर यंत्र संयोगसें मंगलाचरणिक ऐकतान वादन करतेथे। तदनन्तर कुछकाल विश्रामकरिके फेर पुनर्वार सर
ट। नाईवजाउतेथे। एकघंटाके पीछे नगारेवाजेका आरंभ होताथा, ओर उसीके साथ पादशाहके मंग लसूचक ओर ओर सर्वयंत्र वादित होतेथे। अकवर शाहके समय ऐकतानवादन मुसालि, इरवृसाती, खोया। रिज् माइत इत्यादि सातप्रकारके थे। अक वरशाहको अत्यंत संगीत अधथा, विशेषतः अलि खित है कि ऐकतानवादनमें तिसको आन्तरिक अनु राग कहा होताथा। सो आपही ऐकतान वादनके उन्नतिके निमित्त खोयारिज्माइत सुरमें एकसे दो गत रखे प्रस्तुत किया गयाहे। अकवर शाह के निकट अनेक कश्ले अनुरु संगीतके जानने वाले लोकोने आपला पराजय स्वीकार करलिया, सो विशेषकर्के नगारे बजाउ

णेकी क्रियामे सो अतिशयकर्के चतुरथे।

एहि स्थलमे हमारेलोक अधुनातन अर्थात् वर्त्तमानकालके आभ्यंतरिक ऐकतान वादन संबंधमे किंचित् आलोचना करेजावें।

हमारेपासेकों आभ्यन्तरिक ऐकतानमे जो क्या क्या यंत्र हलेसें सुंदर श्रवणकरणेयोग्य होताहै, सो तिसका आज पर्य्यन्त विशेष स्थिरीकरण नही हुआ, जिन्हुकों जिसतरहा इच्छा, हुई उन्होने उसीतरहा यंत्रही व्यवहारकरतेगये। तिस्का कारण, कि हमारेलोक अवके आभ्यंतरिक ऐकतान प्रणालीके इसस्थलमो तरुणवस्था

क्या नवीन अवस्था 12 मेहैं। सोहोताही है, संगीतप्रिय देशीयगणकों अर्थात् संगीतहै प्याराजिन्हुकों ऐसेजो देशोंमे लोकहैं सोक्रमसें उत्साह और अध्यवसायशीलता अर्थात् बडाव्यवसायकरणेसें और कुछ काल पीछें इस्की आभ्यंतरिक उन्नति होवेगी, तिसविषयमे कुछ संशय नहीहै।

अवग्रंथकार कहिताहै कि वंगदेशकी अधुनातन क्या वर्त्तमानसमयकी ऐकतान वादनकी रीती हमारेको पूज्यपाद अग्रज राजश्री यतीन्द्र मोहन ठाकुर बाहादुरके यत्नसें हमारा पूजनीय संगीतगुरु अध्यापक श्रीयुक्त क्षेत्रमोहन गोस्वामी महाशयके द्वारा प्रथम सृष्ट हुआ। सो उक्त संगीत पारद श्री गोस्वामी महाशय कितनेक ऐकतानिक गत प्रस्तुतक्या तियारकरिके "ऐकतानिक स्वर लिपि" नामसें एक संगीत ग्रंथ प्रणायनकिया अर्थात् निर्माणकिया। सो वंगदेशके अधुनातन ऐकतान-वा

अवके दनसंबंधमेंही ग्रंथ जो आदि और ऐकतान वादक

समका

क्या वजाउणे वाला।

मंडलीका मार्ग दखाउनेवाला, सो कहिला मात्रही है।
प्राय १८ वर्ष इससमयतक बीतगये हैं, पाइकपाड़ाका
सुविख्यात राजा प्रतापचंद्र सिंह बाहादुरके
"बेलगेछिया भिला" नामक उद्यानमें नाट बागमें ४
तमाशामें ककेअभिनयकालमें एहि ऐकतान एक बाग
वादित हुआ। और एकसमेमें बंगदेशके पहिलें
लेफ्टेनेण्ट् गवर्णर हालिडे बाहादुर उक्त नाटकके
अभिनय दर्शनार्थ अर्थात् नाटकका तमाशा देखने
के निमित्त आसिया उल्लिखित ऐकतानके लिपि
का बद्धंगत् वादन श्रवण करिके सविशेष आनंदप्रका उन्होंने
शकियाथा।
हमारेपासेबंगदेशके लोक ऐकतानमें युरोपको
टिम्र, फ्लुट्, भायलिन् सिलो, क्लारिओनेट्, डबल्
बास, पियानो, हार्मणियम् इत्यादि यंत्र एकवारमें
परित्याग करके केवलबंगदेशके यंत्रके द्वारा ऐकतान प्र
स्तुत करनेसें बहोत अच्छाकार्य होसकता है। इउरोप
के देशीयोंने जिसतरह आपने देशके बजेतरोंसेंही
ऐकतान वादन तियार किया हमारे पासेका कोई
यंत्रभी व्यवहार नहिं किया, उसी तरहउन्हके यंत्र
लेकरके हमारे देशीयोंकोंभी ऐकतानवादनकी
अंगपुष्टिकों किछु आवश्यकता नहीहै— इसी
देशके यंत्रसेंही एह देशके सुंदर ऐकतानका
सृष्टि होसकती है। तिसनिमित्त हमलोक आ
पने देशके ऐकतानमें निम्नलिखित यंत्र व्य
वहार कर्त्ते हैं। यथा,—
१। { एकजोड़ा तारस्वरी एसराज्।
{ एकजोड़ा मध्यस्वरी एसराज्।

हिन्दु ऐकतान-वादन।

२। एक तारस्वरा कमर्चा।
एकही मध्यस्वरा कमर्चा।

३। एक तारस्वरा कच्छपी वीणा (कछुवा सेतार)
एक मध्यस्वरा कच्छपी वीणा (एहि)

४। एक तारस्वरा वंशी।
एक मध्यस्वरा वंशी।

५। एक तारस्वरी शारत्।
एक मध्यस्वरी शारत्।

६। एक तारस्वरी रवाव।
एक मध्यस्वरी रवाव।

७। एक तारस्वरा सारङ्गी।
एक मध्यस्वरा सारङ्गी।

८। एक जोडा खादस्वरी नादेश्वर यंत्र।

९। एकही तानपूरा।

१०। एकही मृदङ्ग।

११। एक जोडा खडताला।

१२। एक जोडा मन्दिरा।

१३। एक प्रस्थ सप्तशराव।

१४। एकही मोचङ्ग।

१५। एकही कल्लम।

आसिरीय ऐकतान वादन।

आसिरीय और वाविलीय जातियों के द्वारा देव पूजा और मङ्गल कार्य्य मे विशेषतः से संगीत व्यवहार किया जाता भया। तिस देशीयों की खोदित प्रतिमूर्त्ति और राजा नेबुकाड् नेजर का

और क्रियालेया प्रतिष्ठित सुवर्ण निर्म्मित वेल देवताके निकट संगीतसहित अर्चनादिका अनेकप्रमाण पाया जाताहै, —

"तिसकाल एकजन राजदूत बडेऊचे स्वरसें कहिनेलगा, कि हे मानवगण। जिसकाल तुम लोकोंकी वंशी इत्यादि सुषिरयंत्रका, वीणाप्रभृति ततयंत्रका, ढक्का प्रभृति आनद्धयंत्रका, और घंटा इत्यादि घन यंत्रका वाद्य श्रवण करैंगे। तिसकाल महाराज नेबुकाड्नेजारका प्रतिष्ठित सुवर्णमूर्ति नामक वेल देवताके निकट सभही तुंसीषण्णत होगे।"

इसके उपरिउक्त देश दोनोके राजयोंके निमित्त राजसभामें भी संगीतचर्चा करने लगे। जिसकाल तिसकाल गीतवाद्यादि

प्रतिदिन दिनरात्र किम्बा और किसी निर्द्धारित समयमें तिन्हु सभलोकोंका संगीतालाप होने लगा। इसमें कारण जाणगया कि जो, मिद देशके राजा दरायुस् जिसकालमें भविष्यद्वक्ता दानियेलको सिंहगह्वरमें निक्षेपकर्के राजप्रासादमें अर्थात् राजगृहमें गमन करनेलगे, तिसकाल और अनाहारमें और ऐकतान वाद्यनादि के सुनने बिनाही रात्रियापन अर्थात् रात्रि व्यतीत करदियाथा इससें स्पष्ट प्रतीति होतीहै, कि संध्याके समयमेंही तिन्हुके निकट ऐकतानिक यंत्र सकल वादितहोतेथे। अर्थात् बजाई देथे।

यिहूद देशके राजयोंका इकट्ठा बजाउना।

यिहूदीय ऐकतान-वादन।

आसिरीय और बाबिलीय ऐकतान वादन कीन्याई जेरूसालम की राज सभामे भी ऐकतानिक संगीत होताथा। सो और और राजयोंकी अपेक्षाकरिके दायूद औ सलमन भूपाल इन्ह दोनोके समयमे एहि विशेषकरि प्रचलितथा। तिन्ह दोनोंकेहि मन्दिरस्थ धर्मसंबंधीय बहु संख्यक वादक और गायक के विना राजकीय गुप्त ऐकतान था।

दायूदका पुत्र सलमन् नामक राजा पृथिवीके भोगविलासिता की असारता और अस्थायिता संबंधसें जिसका गुप्त ऐकतानका उल्लेख कियागयाहै, सो मुक्तकंठसें उसने कहि दियाथा जो, "हमने नाना प्रकार संगीत यंत्रकीन्याई पुरुष गायक, स्त्री गायिका और उत्कृष्ट यंत्र व्यवसायीयोंके द्वारा नाना प्रकारका आनन्द पाया है।" अर्थात् इसी संगीत विषयका आनन्द

पारस्य ऐकतान-वादन।

अधुना क्या अबइ स वर्तमान समयमो पारस्य देशमे हार्प यंत्र कहीं देखाजाताथा सो अभवथा, किन्तु प्राचीन कालसें एह ऐकतानिक यंत्र समूहके मध्यमे एक उत्तम दरका यंत्रथा। स्यार रबार्ट कार पोर्टार् कार् मानुशा नगरी के निकटस्थ ताकिबोस्तां नामक पर्वतमे इसके संबंधकी कितनीक प्राचीन खोदितमूर्ति प्राप्त हुआ। इसी तरह किनाहे, खेशत खुशाद

पारस्य ऐकतान वादन।

नामक पादशाह २

के शेषमे पारस्य देशके राजा खसरु पुरवि
ज ओर मूर्ति स्थापन कियागयाथा। उल्लिखित
मूर्त्तिके मध्यमे केतीक मूर्त्ति दोई उन्नत शिला
नेमे साजितथी। आसिरिया देशिकोंकी खोदि
त प्रतिमूर्त्तिकी न्याईं और कितनेक स्त्रीलोक
नौकारोहणमे हार्पयंत्र बजाउतीथी। बार्डि
साहिब भी पारस्य देशके बीचमे ऐकतान वादन
संबंधमे अनेक ही बोलेथे।

अर्थात् छोडके अपर खोदी हुई थी जैसे हमारे मंदिरोंमे गणेशजी की मूर्त्ति लिखी होई होती है २

सो अपरसे विदित हुआ है, क्या खृष्टकी
शेषशताब्दीसे पारस्य देशमे ऐकतान प्रचलित
था। अपिच और एक खोदित मूर्त्ति व्यागपाइपनामक यंत्र और एक सन्तउपरमे कही हुई
प्रतिमूर्त्तिके मध्यमे पायागया है। कि भारत
वर्षके प्राचीन संगीत शास्त्रमे व्यागपाइप
को नागबद्ध यंत्र बोलकरके उल्लेख भया है सोई
आसिरिया देशीयोंको, हिब्रु, रोमक और
ग्रीक जातियोंकाभी एहियंत्र अवगतथा, अनुमावितथा
किन्तु प्राचीन मिसरदेशके मध्यमे एहथा कि
नहींथा, सो आज पर्य्यन्त जाना नहिं गया।

मिसरदेशका ऐकतान वादन।

हिरोदतस् ष्ट्रेबो दायोदरस् सिक्युलास्
और स्त्राबो इत्यादि सभ्यपंडितोंने मिसरदेशका द
र्शन किया और उसदेशके ऐकतान संबंधमे
आपना आपना मत प्रकाश किया था। हिरो(द्या
दतस् नामक और स्त्राबोको मिसरदेश प्राचीन

मिसर एक तान वादन।

62

क्रिष्ट्रुए प्राय ५०० शत वत्सर के मध्यमे
तिसदेशका धर्म संगीत और विलास संगीत
प्रचलित था।

हिरोदतस का जन्म वर्ष ४८४ स्त्रृष्टके
पूर्वाब्द) बोलते हैं कि जो, मिसर देशके देवो
द्देशमे वर्षदिनो के पर्व समूहमे अर्थात्
मेलेयो के मध्यमे ववस्तिस् नामक नगरमे
दायाना नामका देवीके पूजा निमित्त मेला होता
था। उसमेलेमे पुरुष और स्त्रीलोक वेडियो
के ऊपर चढके रजलमार्गसे भ्रमण कर्तेथे
और उसी समयमे कितनेक पुरुष वंशी और कि
तनीयो, स्त्रियां ढुड ढक्का एकसमयमो अर्थात्
इकट्ठे ही वजाउतेथे। अवशिष्ट पुरुष और
स्त्रीलोक सभ करताल देकरके आनन्द सूचक
भावभङ्गि प्रकाश कर्त्तेथे।

क. अपिकंतु अर्थात् इस्के विना प्राचीन मिसर
देशके यंत्र हार्प, तम्बूरा, फ्लुट् इत्यादि यंत्र संयो
गसें एक तान वादन अवगत था अर्थात् जाना गया
होयगाथा इसी संबंधका एक खोदित दृश्य
वार्लिन और लिडेन नगरकी चित्रशालामे था। मूर्त्ती
लेपसियस नामक साहेव कहिते हैं, प्राचीन
केवल मिसर देशके शुद्ध कितनेक लोक वंशी द्वाराभी
एक तान वादन कर्त्तेथे। वंशी एक तानका एक
खोदित दृश्य अर्थात् खोदी होई मूर्त्ति गिलजा
घरके पिरामिडके तलस्थित समाधिके मध्यमे पाया
गियाथा लेपसियसके मतमे और स्वृष्टाब्दके २०००
वत्सरसेभी पाहिलेंकी होवेगी। समाप्तमिति शुभम्

परिशिष्ट ।

भारतवर्षके जो सकल तत, सुषिर, आनद्ध और घन यंत्रोंका प्रचलन देखाहै, सो सभ यंत्र कोषके मूल मध्यमे विशेषकर्के विवरण हो याहै। इसग्रन्थमे भारतवर्षके लुप्त प्राचीन और कितनेक प्रचालित यंत्रका और पृथिवी मेस्थित अपरापर देशके वाद्य यंत्र समूह का संक्षिप्त कर्के विवरण न जितने पर्यंत इतर ग्रन्थ संधान अर्थात् पूर्वापर विचा रद्वारा जो प्राप्त भयाहै, सोई परिशिष्ट मे सन्निवेशित किया जाता है।

अर्थात् अब अकारादि वर्णीक्रमके अनुसार लिखा जाता है।
(आभिधानिक वर्णानुसारसे लिखित)

अ

अंक्लुङ् (अर्थात् फूककर्के बजनेवाला।

एह एक प्रकारका ग्राम्य सुषिर यंत्र है और एही कितनेक वंश नलसें निर्म्मित है। सो यावा द्वीपके पश्चिमस्थ पर्वतके रहिलेवाले जाती अर्थात् पहाडी लोक एही यंत्रको व्यवहार कर्तेहैं। सो यावा द्वीपके वासि गणके जितनेक वाद्ययंत्रके मध्यमे एहि यंत्र अधिक पुरातन है। ...

एह= अर्थात आठ सुरोंकी अवाजवाला
अष्टोकर्डू वा अक्टाकर्ड (अष्ट स्वरसमन्वित वाद्य यंत्रविशेष है।

63

अक्टाकर्डम् (पिथागोरस नामक पंडितका निर्मित वीणा यंत्र है।

अकटेभ फ्लुट (यह एक प्रकारका क्षुद्र शुषिर यंत्र है। इसके मध्य सप्तकको नाबजाउ लेकर उच्च सप्तकमें वादित होताहै। इसीकों फ्लुट स्मा वेक् भी कहितेहैं।

अकस्तिफियर्ल० यह एक प्रकारका ततयंत्र है। इसका अवयव पेंडोरकी न्याई होताहै किन्तु तिसकी अपेक्षा करके यह दुगुन है सा होताहै।

अगद० यह मिसरदेश और आबिसिनिया देश के रहिनेवाल्यों का वंशीजातिका शुषिर यंत्रविशेष है।

अगाधपल० यह हिन्दूलोकका प्राचीन आनद्ध यंत्रविशेष है।

अजकाकस्तलि० यह मेक्सिको देशके प्राचीन नर्तक इसी यंत्रको व्यवहार कर्ते थे। इसका आकार इत्यादि प्राय ... शिशुओं केझोंजरों की न्याई है।

अञ्जिलिक० यह एक प्रकारका ततयंत्र है। कच् साहेबके मतसें प्राचीन कालसें इंग्लंड देशमें एहियंत्र सभलोकोनें देखाहै।

जातीका अपल्लन० यह न्युट वंशीको ततयंत्रविशेष है और इसी यंत्रमें बीस तार योजित होतीहैं। १६७८ खृष्टाब्दमें एन् प्रम्पूट साहेबने इसी यंत्रको प्रघट किया था।

अपल्लनियन्० जो, एन् भलार साहिबके मतमें एक प्रसिद्ध वाद्ययंत्र है।

अफेनक्रोट० यह एक शुषिरयंत्र है।

अमाति ० यह एक प्रकारका ततयंत्र है। सो अमाति नामक एक जन बाइलीन यंत्रका निर्मा ता था। उनके नामसे यह यंत्र स्थापित किया था। इसका अवयव व भायोलिन नामक यंत्रकी न्याई वा भायोलिन् सेलोकी न्याई है।

अम्वत ० यह हिन्दुस्थानका एक जाति प्राचीन वाद्य यंत्र है (स्वरुप)

अर्ग्यान् ० यह एक सुषिर यान और अत्यन्त उमा दत वाद्य यंत्र विशेष है। इसीको सामान्यधर्म मंदिरोंमें व्यवहृत करते हैं।

अर्ग्यानेटो } यह छोटे अर्ग्यानको कहिते हैं।
अर्ग्यानो

आर्केष्ट्रियन् ० ड्रेसडेन नगरवासी एफ् एफ् काफ मान् साहेब का निर्मित एक प्रकारका वाद्ययंत्र। इसी यंत्रमें उग्र और मृदु स्वर यह दोनों ही उद्भूत होते हैं अर्थात निकसते हैं विशेषकरके इस यंत्रका गुण और एक यह है जो पूर्ण ऐकतानकी ध्वनि समष्टि इसीके द्वारा व्यक्त होसकती है।

आर्कि अप्रियन् ० यह धातुनिर्मित अष्टतार विशिष्ट ततयंत्र विशेष है।

आर्फिका ० यह जर्जिकायुक्त एक छोटा प्राचीन ततयंत्र है। बालकोंके क्रीडाकालमें यह यंत्र व्यवहार करते हैं।

आर्फियन् ० यह एक प्रकारका ततयंत्र है।

अलस् ० यह एक प्रकारका शुषिर यंत्र है।

अल्टजीज ० यह मध्यस्वरी बाइलीन यंत्र है।

अल्टफ्लुट ० यह मध्यस्वरी शुषिर यंत्र है।

64

अलटम्बर ० एह स्पानियार्ड जाति के ढक्का की
न्याईं आनद्ध यंत्र विशेष है।
असत्र ० एह तत यंत्र विशेष है।
असकरम ० ओयाल पाल्ली साहेब के मत मे एह
दीर्घ चतुष्कोण विशिष्ट तत यंत्र
विशेष है।
अस्कारस ० एह तत यंत्र विशेष है वा असकरम
असकरस न्यायेल ० एह प्राचीन ग्रीक देशियों
का आनद्ध यंत्र विशेष है।
अस्कोलस ० एह प्राचीन ग्रीक देश का शुषिर
यंत्र विशेष है।
आ
अकार्डियन ० एह एक कुंजीकर्कयुक्त यंत्र
और देखने में कितना क छोटा अ
र्यान यंत्र की न्याईं एह यंत्र इस्पात
निर्मित स्प्रिं सकल वायुद्वारा स्पृष्ट हो
कर कंपित होने से सुमधुर शब्द उत्प
न होता है सो प्राय चालीस वर्ष काल
व्यतीत होने से एह यंत्र प्रचार हो गया है।
आजालिक केमान ० एह तुरस्क देशियों का यंत्र
व्यवहृत वाकुलीन जातियों का
तत यंत्र विशेष है।
आडियाफोनन ० एह बहु अकट भयुक्त एक
प्रकार का पियानो फोर्ट यंत्र है।
इसका सुर कभी विकृत नहि होता।
भियेना नगर के रहनेवाला घडि
का यंत्र का निर्माता स स्टर नामक
का किया हुआ एह यंत्र १८२० ख्
ष्टके अब्द में एह निर्माण किया गया है।
आघेना ० एह ग्रीक देशियों का शुषिर यंत्र वि
शेष है। इसका आकि रहा है जो मिनार्भा
देवी के निकट पिवान निको फेलास का
किन तीन एहि नाम से व्यवहृत हुआ है।

आडुफ॰ यह आनद्ध श्रेणीके अन्तर्गत एक
आरब देशका यंत्र है। इसका आ
कार चतुष्कोण है बार्बरि राज्यमें
इस तालमें इसका बहुत व्यवहार है।
इजिप्त पिरामिडोंके ऊपर यंत्रका और
प्राचीन मिसर देशवासियोंके चित्रको
ए आनद्ध यंत्रके सदृश है।

आनाकारा॰ वा अनिकर्डिया॰ यह आनद्ध यंत्र
विशेष है। (आनिनोकर्डि वा आ
निनोकर्डि॰ यह तत यंत्र विशेष है।
सो इसी यंत्रके तन्तुके ऊपर वायु संचाल
न करनेसे शब्द निकलता है १७८९
खृः वर्षमें पारिस नगरमें जन् जेकब्
निर्माण म्हेअर साहिबको किताबमें उसी सम
यसे ए हि यंत्र साधारण विशेष करके
आदृत होआया।

आपलो-निकन॰ यह आर्म्यानिकी न्याँई एक
बहुत यंत्र है। [illegible] इसी एक
तान वाद्यकी ध्वनि अनुकरण कान्त्रीनुसार
करते हैं। यह बालिशता आपही
वादित होता है। १८२९ खृः
लण्डन नगरमें क्लाइट और स्वसन्
साहेब इसकों निर्माण किया था।

आपलो-साहरा॰ यह घोरा हार्प वा हायारकी
न्याँई एक प्रकारका प्राचीन तत यंत्र है।
वर्त्तमानमें इसका प्रचलन नहीं है।
यह उच्चाईमें एक फुट विस्तारमें आधा
फुट और बारह तंत्रियों कर युक्त होता है।
इस यंत्रका ओतब विन्तत निमिति और
एकभी प्रसंगकी न्याँई वादित होता है।
समर्पित नजाई दा है।
यंत्र।

65

आवद्ध वा आनद्ध ० एह हिंदु लोकोंका वाद्य यंत्र है।
सो ओल्ड टेस्टामेण्ट मे इसका विषय
लिखित है।

आमेना ० एह प्राचीन ग्रीक देशियोंका
शुषिर यंत्र विशेष है। एह ओट्
वृक्षके नलसे निर्मित होता है।

आम्विरा ० एह एक सुषिर यंत्र विशेष है।
आफ्रिका देशमे इसका प्रचलन है।
एहि आफ्रिका देशमे भिन्न भिन्न स्थ
लमे ऊंजि मारिम्बा, इवेका, विताण्डदी
इत्यादि भिन्न भिन्न नामसें प्रसिद्ध है।
विशेषतः सेनि गाम्बिया और उत्तर दक्षीण दरील
नामक देश १ जिनिंवासी लोकोंको एहि अधिक प्रिय है।
संदूख ८ इसी यंत्रमे एक काष्ठ निर्मित बाक्सके मध्य
मे कितनेक स्वरका होने वाला काष्ठ
वा वेंतका खंड अथवा लोह जिह्वा
इसी तरहसें संबंध होताहै जो, बडे अं
गूठेसें कोई दंड द्वारा दवाउनेसे भी
तिससें स्वर कम्पन उत्पन्न होताहै।
किन्तु तिसकी बंधन प्रणाली अनेक
इच्छामत कर होती है।

आर्गल ० एह आधुनिक क्या इसी समयका व
लाया होया मिसर देशीयोंका एक, दूसरे नल
छिनल यन्त्र विशेष है। इसका एक नलकी
अपेक्षा कर्के दीर्घ और निम्न स्वर उत्पाद
नके निमित्त होताहै और दूसरा नल बहुत
छोटा होताहै सो सुंदर स्वरका अनुक्रमिक
आपर्यावृत्तके अनुसार गान और गत बजाउ
नेके निमित्त व्यवहृत होताहै। इसी तरह से
यंत्र पृथिवीके और और देशमे भी प्रचलित है।

यंत्रकोष।

आर्चूलुट॰ एह तत यंत्र विशेष है (थिओर्बो)

आर्चलुथ॰ एह भी एक प्रकार का तत यंत्र है। (थिओर्बो) यंत्र मे इसका विवरण विशेष लिखा है

आर्जियान॰ एह सुषिर यंत्र विशेष है।

आर्पा॰ इंगरेजी हार्प यंत्र का स्पेनिश नाम है।

आर्पाडपूपिया॰ एह डबल हार्प यंत्र है।

आर्पनेटा॰ एह इताली देश का तत यंत्र विशेष है। आइरिश हार्प यंत्र की न्यांई निर्मित है। और इसमे लोह और पित्तल निर्मित तार समूह योजित होता है।

आर्मोनिका॰ एह काच निर्मित वाद्य यंत्र है।

आर्चिलिउटो॰ एह तत यंत्र विशेष है। कोई कोई कहते हैं कि एह यंत्र और थिओर्बो यंत्र एक ही है।

आर्सिसिम्बेलो॰ एह कुंजीयुक्त वाद्य यंत्र विशेष है।

आलगोजा॰ एह भारतवर्ष इत्यादि देशों मे व्यवहृत सुषिर यंत्र विशेष है। देशीयों का

आलरस॰ एह वाफुली न जानी का तत यंत्र विशेष है।

आलतेवासो॰ एह मिनिसियों का तत यंत्र विशेष है किन्तु अबतो एह प्रचलित भया है। एक प्रकार पुरुषी द्वारा एह बजाई जाती है।

आलतो भायोला॰ वा भायोला (एह यरुद जाती का ततयंत्र विशेष है अर्थात् बड़ा बेहाला है। साधारण बेहाला मे ५ खाद स्वर अर्थात् खर्ज स्वर उत्पन्न होते हैं।

66

आल्पेन ० एह गोश्रृंग यंत्र है।

आलापिनी वीणा ० एह हिन्दुलोकों का एक प्राचीन ततयंत्र है।

आलफनरग ० एह मुरुष जर्लरख देशमें प्रचलित एक सुषिर यंत्र है। जो कितनेक काष्ठनल के खंड एकत्र दृढतर संबंध होकर आपसमें इकठ्ठे जोडकर एहयंत्र प्रस्तुत होता है।

आसियास ० एह एक प्रकारका ततयंत्र है। बुलंजर साहिबके मतमे तर्पन्दर का शिष्य सिपियन नामकका किया होया एहि यंत्र पहिलेसे प्रचलित आहै।

आसोर ० एह यिहूदियोंका एक ततयंत्र विशेष है। इसीमे दशतारां संयुक्त होतियां हैं, और एहि अंगुलि द्वारा वादित होताहै। एहि यिहूदियों का वेनेल नामक तानपूरा यंत्रके सदृशहै। इउरोपदेश के संगीतवेत्ता पंडित गण एक आसिरियादेशके यंत्र कोभी "आसोर" एहिनाम देकर वर्तते हैं।

चीनदेशका

इरुकिन ० एह एक चैन ततयंत्र है। चीनदेशीयोंके इयार किन नामक यंत्रके साथ साथ एह बजाई जाती है। इउरोप देशके पंडितलोक इसीको मूर्ख प्रापीवीणा कहते हैं।

अर्थात् बराबर जोड़े हुए होते हैं। ५

मृडफन् ० यह एक प्रकार का वाद्ययंत्र है। सिरवना पायकी न्याईं अर्थात् मुसाज्जली के सदृश इसका आकार है। इसीमें कितनेक काच निर्मित नल समभूत्र पातसे संयोजित हैं। कांचयंत्र की न्याईं इसकाभी बजाउने क्रियासंपादित होती है।

ईलिया भायोलेट ० (भायोल् अमोर यंत्रके आकार गत एक अतिपुरातन तंत्रयंत्र है।

ईतिशहाप ० यह ओवय जातीका वृहत् शुषिर यंत्र विशेष है। यह पित्तल इत्यादि धातुके पदार्थसे निर्मित होता है और इसका आकार सरल नहीं होता टेढ़ा होता है।

इसौघस ० यह एक प्रकारका ग्रीक देशियों का शुषिर यंत्र है।

इन्नूफाल् टिलिया ० यह एक प्रकारका शुषिर यंत्र है।

इन्स्ट्रुमेण्टो एके प्यानेल ० यह पियानो फोर्टिके न्याईं कुंजी युक्त यंत्र विशेष है। इसीमें १, २ वा दूहूसें अधिक उच्च स्वर प्रकाश करने वाला पोटाशेर घंटा जोड़या रहिता है। तोईं प्रकृत स्वर ग्राममें बद्ध होता है।

इवेका ० यह आम्बिरा यंत्रकी न्याईं एक शुषिर यंत्र है। निग्रोजाति के लोक रहि व्यवहार करते हैं।

यंत्रकोषम

इयान्‌किन्‌० एह एक चीन देशका विचित्र तार
संबद्ध ततयंत्र है। इउरोप देशीयोंको डल
सिमार यंत्रकी न्याई एह दोनो छोटे मुगर
द्वारा वजाइजाते हैं एहि जापान देशाके कोटो
यंत्रकी न्याई है। इसयंत्रका स्वर अतिशय
करके सुरुने योग्य है।

इयाम्‌वाइस्‌० एह एक ततयंत्र विशेष है।
पोलकस्‌ साहेबके मतमें एह
यंत्र त्रिकोण विशिष्ट लायार यंत्रकी
न्याई है।

इयार्पि० एह हार्प यंत्रका एक अंग्लो साकसन
नाम है। अपि च अर्थात्‌ सो इसी
भाषामें इसको हियार्पि भी कहिते हैं।

इयो० एह एक सुषिर यंत्र है।

इयोलाइन्‌० एह एक कुंजी युक्त यंत्र है।
इसका स्वर अमोनिका यंत्रकी न्याँ
ई है। पतला होकर इसीमें
लोहे इस्पातका स्प्रिं होता है और भस्त्रा
क्या खल लगाई बाली जैसी हला
उलेसे ओर कंपित होता है तब उस
से शब्द उत्पन्न होता है।

इयोलियन्‌ पियानो० एह इयोलोडिकन्‌ यंत्र
की न्याँई है। इसका स्प्रिं धातुका
नहिं होता काष्ठ निर्मित होता है।

बाजे इयोलियन्‌ हार्प० एह एक ततयंत्र विशेष है।
सो किसी बजाउने वालेके द्वारा करके
एह यंत्र नहीं बजता, किन्तु प्रकृत
संचालित अर्थात्‌ आपसे आप वायु

करके हि बजाया रहता है; इसी निमित्त इस
का ऐसा नाम हुआ है । यह यंत्र विख्यात है
और इसकी ध्वनि चमत्कार और माधुर्य
विशिष्ट है । इसी निमित्त संगीतके जानने
वाले पंडितगण इसीको स्वर्गकी वीणा
कहते हैं । सुप्रसिद्ध [illegible] इंगरेजी
अभिधानकार डाक्तर औये वेब्स्टर
साहेब मुर साहेबके मतमें कहते हैं
जो, ग्रीक देशके वायुका अधिष्ठात्री
देवता इयोलस से इस यंत्रका नाम
करण भया है । यह एक लंबे चारको
णवाले बाक्सके मध्यमें वा ऊपरके बीच
भागमें नौ ८ वा तिहूसें अधिक चर्म
की तन्त्र उच्च नीच अनुसारसें बाँध
करके यह यंत्र निर्मित होता है ।
और वायुका प्रवाह जिस स्थानमें होवे ऐसे
खुले अनावृत मकानमें यह यंत्र लट
काय करके रखनेसे उच्च नीच स्वर
सम मिश्रित होकर सुंदर मधुर सुनाने
में आउता है । सो वायुका किया होया आ
बधक्या नोपि यों होया जो तंत्र है सो सम अभ्या
घातित होवें सो कहते हैं कि इसका तन्त्र
स्थापनभाग और तलभाग अनावृत
रखनेसें ही मधुर ध्वनि होता है । यूरोप
देशके पंडितगण इसी यंत्रको बहुत पुरा
तन कहते हैं, किन्तु इसके प्रसिद्ध होने
के पहिले भारतवर्षमें इसी तरह वायुसे
बजनेवाली वीणा यंत्रकी सृष्टि होई थी ।

68

जोकर इसके साथ तिसका अवयवगत विभिन्नता स्वीकार कियाजावे, किन्तु गुणमें इसकी अपेक्षाकरके उत्कृष्ट वो सभी होवेगा। देवर्षि नारद देवगण करके प्रेरित होकर बलदेव गरुडवाली श्रीकृष्णजीके पास शिशुपालवधके अर्थ प्रेरणाकरणेके निमित्त जिस समयमें देवलोकसे आगमन कियाथा, तिस कालमें तिसकी वीणा जिसप्रकार गान कियाथा, सो माघकवि नयतिसका वर्णन उसी प्रकारसे किया है,

रणद्भिराघट्टनयानभस्वतः
पृथग्विभिन्नश्रुतिमंडलैः स्वरैः।
स्फुटीभवद्ग्रामविशेषमूर्छना
मवेक्षमाणं महतीं मुहुर्मुहुः॥

नारदजीकी वीणाका नाम महती है, सो उस वीणामें वायुका आघात लगकरके षड्जादि स्वरग्राम आरोह अवरोह क्रमसे इसीतरह स्पष्टभावसे गुणनेमें आते थे जो, स्वरका अवयवभूत जो श्रुतियां हैं उनके पर्यन्त एक एक करके गणियां जाति थीं। सो इसप्रकार नारदजी श्रवणकरके विस्मयपरवश होकर वारंवार उसी वीणाको देखने लगेथे।

वीणा का स्वर

सो माघकवि १५१८ शतवर्षके समयमें भयेथे तिनके समयमें संगीत

शास्त्रकी वडी उन्नती होईथी जो, यंत्रबांधने
के कौशलमे स्वरजो है सो यंत्रसें आपसे
आपही बजिते होताथा, (= बज ताथा) तिस सम तिसके
बहुत काल पहिलेंसें जो उसकी चर्चा आरंभ
हुआथा, सो उसका सहजसेंहि अनुमान होता
है।" अधुना क्या अब भारतवर्षमें जिस तरह
महती वीणाका प्रचलन दृष्ट होयाहै, और प्रा
चीन कालकी महती वीणासें कितना क बदलया
गया होवेगा। क्योंकि पहिले समेकी महती वीणा
हाथ और वायु इन दोनोंके द्वारा, वजती होती
थी, अब इस दालकी महती नामा वीणा हाथ
के विना नही बाजती। मिलान नामक नगर के नामकने
आविशारदने और एक प्रकारका वृहत् क्या बडा
इयोलियन् हार्प नामक यंत्र निर्माण कियाथा।
इस यंत्रका नाम मिटियर लाजिकाल हार्पणिका नाम
रखाथा सो तिसने कोई एक गिर्जा घरकी चोटी
के अर्थात् उसके शिखर सें और एक दूसरे शिखर
पर्यंत १५ ही लोहे कियां तारों द्वारोंज़े ही विन्य
पायकर्के वांधकरके पूर्वोक्त यंत्र निर्माण किया
था। सोई तारों स्वाभाविक अर्थात् आपसें आपही
सातोंही स्वरों के अनुसारसें सर्वदाही बांसियां
रहितियां थियां और वायुके झुलनेसे कंपित हो
कर अर्गन् पाइप यंत्रकी न्याईं बाजतियां
रहितियां थियां।
इयोलोडिकन् वा इयोलोडियन॰ एक कुंजीयुक्त यंत्र
विशेष है इयोलाइन के सदृश है।

69

इयोलोपाएटालन्० एह एकप्रकारका पियानोफोर्टियंत्रहै। सो इयोलोडिकनकेसाथ इसका आकार और अवयवगत संबंधहै

इयोलोमेलोडिकन्० एह इयोलोडिकन्जातियोंके बजाउनेवाला यंत्रविशेषहै। इसी यंत्रका औरभी एकनाम कोरोलियन् है।

इतियालि० एह एकप्रकारका ततयंत्र है। इसमे दोही इस्पात लोहेकी बनाईहुई तार संयुक्त होतीहै और तुरुष्क जातीकेलोक एह यंत्र व्यवहार कर्त्तेहैं।

उ

उगाव० (एह यिहूदियोंका एक सुषिरयंत्रहै सोकिहहै। जुबाल नामक इसयंत्रके बनाउनेवालाहै। अंगरेज लोक इसको सिरिंस अथवा पाण्डियान् पाइप कहितेहैं।

मया

उद० (एह अरबदेशका ततयंत्रविशेषहै। इसका आकार हिन्दुलोकके तानपूराकी न्यांई और उक्त यंत्रकी न्यांई इसमे और सारिका विन्यासनहीहै।

उदकी० एह एक ढोल आनद्ध अर्थात् मढा हुआ यंत्रहै। काहार जातिके हुडुका यंत्रकी न्यांई इसका आकारहै। सिंहल देशके लोक एहि यंत्र व्यवहारकर्त्तेहैं।

उ

उरहीन्० यह एक चीन देशियोंका वाहुली
न यंत्र है। इसीकों हमारे हिंदुस्थानके लोक
सारिन्दा वा सारङ्गीके तुल्य, जापान देशके
कोकिउ यंत्र के और अरब और पारस्यदेश
के रबाब और केमानगे नामक यंत्रकी
न्यांई हैं।

ऊ

ऊम्सूचुवा० यह एक प्रकारका ततयंत्र है।
इसका आकार बालकका संदूखकी न्यांई है
किन्तु एक पासे खोला है। आफ्रिका
देशके लोक यहि यंत्र व्यवहार करते हैं।

ए

एकसाकर्ड वा हेकसा कर्ड० यह एक षट्
यंत्र विशिष्ट वाद्य यंत्र है। इससें छः ही स्व
र उत्पन्न होते हैं।

एम्वाम्वी० यह आफ्रिका का आशाएटा
९९ और फाएटी जाती लोकोंका एक प्र
कारका ततयंत्र है। इसमें ताल वृक्षके
मूलसें उत्पन्न हुए हुए पांच सूत्र योजित
होकर इसके शिरमें स्थित वांसके निर्माण
किये हुए पांच ही कीलकके साथ बांधे र
हिते हैं। यह यंत्र दोनो हाथोंसें बाजता है
और जेकर और इसका स्वर भिन्न भिन्न प्र
कारका प्रतीत नहिं होवे तबभी विशेषक

के मधुर होताहै। इसी निमित्त पूर्वोक्त दोनो जातियों के सब यंत्रों की अपेक्षाकरके एह श्रेष्ठ करिकरगिणा गया है।

एपिगोनियम (एह ग्रीक देशियों का प्राची न एक प्रकारका ततयंत्र है। इसमें सब शुद्ध चालीस तन्त्र संयुक्त रहितीहैं सो एपिगोनस् नामकने आपने नामसें इस यंत्रकी सृष्टि कियाथा।

एपिनेट (एह स्पिनेट यंत्रहै।

एएटाकर्ड (एह एकही सात तन्त्र विशिष्ट तत यंत्रहै।

एरबेद (एह रबाब यंत्रका मरक्को देशी का नामहै।

एलिफेण्टाइन्० (एह एक सुषिर यंत्रहै। सो प्रतीत होताहै कि एह हाथीके दांतका बनायाहुआहै। सो फिनसीय जाती इसी यंत्रकी सृष्टि करीथी।

एलिमस्० (एह फ्रिकीयकुटू का नामांतरहै। यह भी काष्ठनिर्मित सुषिर यंत्रविशेषहै।

ओ

ओफिकिड्० (एह युद्ध संबंधी सुषिर यंत्रविशेषहै।

ओबय० (एह एक हि सुषिर यंत्रहै।

ओबोघिडामोर० (वा ओबोघिलयकेरि (एह एक प्रकारका सुषिर यंत्र है।

परिशिष्ट।

ओम्बाइ०(एह आफ्रिका देशका सेनिगाम्बिया ओर गिनि देशियों का सर्पजातिका यंत्रविशेष है। सो लोक लता ओर वृक्षके मूलकियें तन्तु निर्माण करके वजाते हैं। इसका ओर एकनाम वोलो है। मिसर देशके सर्प यंत्रके साथ ही इस यंत्रका अनेकतरहका साद्दृश्य है। वेली

ओपाल्कुइ दर्ग०(एह एक स्वंगयंत्र है। साधारण सें इसीको फरासी स्वंग कहितेहैं।

ओसीटिविया०(एह प्राचीन ग्रीक देशियों का एक प्रथम गिलनेयोग्य शुषिरयंत्र है।

औ

औ (चीन देशके पास्सेका पुनर्षाकर्के धनुर्गराबजाने वाला ततयंत्र विशेष है।

क

कःहरल०(एह एक सुरङिरा वा आलपाइन स्वंगु यंत्र है।

कच्छपीवीणा०(एह हिन्दुलोकोंका ततयंत्र विशेष है।

कन्च०(एह शंखयंत्रका इंगरेजी संज्ञा है।

कडुली०(एह हिन्दुलोकोंका प्राचीन आनद्ध यंत्र विशेष है।

कड्डापयागंटा०(एह एक वडा शुषिरयंत्र है।

सो साधारण बासून नामक यंत्रकी अपे
क्षाकर्के इसमै औरभी निम्न स्वर ग्राम
वादित होता है अर्थात् बजता है। सो
इस समयमो एह प्रचालित नहीं है।

कण्ट्राबासो० (एह बाकुलीन जातिके यंत्रस
मूह के मध्यमे एही सभकी अपेक्षा
कर्के बडा और खाद स्वर विशिष्ट है
एह यंत्र दो प्रकारका है। एक प्रकार (अ) षड्ज ५
तीन तन्तु विशिष्ट और दूसरा प्रकार चार
तन्तुका है। इंलण्डमै तीन तन्तु विशिष्ट
कण्ट्राबासो नामक यंत्र प्रचलित है। किन्तु
जेर्म्मण देशके विना और किसी देश मै प्राय:
देखा नहिं जाता। शेषोक्त प्रकार यंत्रकी
अपेक्षाकर्के चारही निम्न स्वर विशिष्ट है।

कण्ट्रावासि० (
कण्ट्राभायोलन (
} एह डबल बासका अन्यतर संज्ञा अर्थात् भिन्न संज्ञा है

कन्सार्टिना० (एह छे कोणवाला एकही वा
द्य यंत्र है। सो इस्को हाथसे पकडकर
बजाउते हैं। इस यंत्रके दोनो पास्यो मे
कितनीक कुंजिका होती है, एह यंत्र अंग
लि द्वारा दबानेसे यंत्रके मध्यमे स्थित
धातव जिह्वाके समूह से शब्द बहिर्गत
क्या बाहर निकलता है। सो इस्की ध्वनि
अविच्छिन्नतासे श्रवण करनेके निमि
त्तैं इस्की [illegible] खैंचनेसे संचालन कर्के
वायुका संग्रह कर्ते हैं।

अनवच्छिन्न २

परिशिष्ट।

कपलडोन ०।(एह एक प्रकारका प्राचीन सुषिर यंत्रहै।

कपलफ्लीट ०।(एह एक सुषिर यंत्रहै इसका और एकनाम जेमसहर्ली है।

कम्पनम्०।(एह प्राचीन ग्रीकदेशका घएटाजातिका सुषिर यंत्र विशेष है।

कम्पल०।(एह यावा नामक द्वीपवासी सम्प्रदायका एक प्रकारका आनद्ध यंत्रहै।

कम्बोन०।(एह सिंहल द्वीपवासियोंका सुषिर यंत्रविशेषहै।

कयार अरग्यान०।(एह एक मदुस्वरवाला अरग्यानहै। एहि सलो डुयेट इत्यादि गीतके संग व्यवहृत होताहै। विशिष्ट

कर०।(एह मृदंग यंत्र विशेषहै।

करु०।(एह स्पिनेट की न्यांई एकप्रकारका ततयंत्रहै।

कर अन्लिटोनिक ०।(एह एक सुषिरयंत्रहै किन्तु इसका सुर विकृतहै। इस यंत्रसें कंजी द्वारा प्रकृत खोला सुरकी न्यांई विकृतसुर परिष्कारस्वरूपसे प्रकाशपाताहै।

कर आंग्लाइस०।(एह एक सुषिर यंत्र है। इसका स्वर मिष्ट, भावव्यंजक और शोक सूचक होताहै। ओबय के सदृशहै। मधुर

भावकों प्रग टकरनेवाला

कर्नू(टि)सिग्नाल०(एह एकप्रकारका शुषिर यंत्र है। ब्युगल यंत्रके सदृश है।

करना वा कार्ना०(एह एकप्रकार बृहज्जाती का शुषिर यंत्र है। भारतवर्ष और पारस्य देशमें इसका प्रचलन देखा है। इसकी लंबाई १५ फुट है और ध्वनि इसकी अत्यंत तेज होती है।

करताल वा करताली०(एह भारतवर्षमें प्रचलित घन यंत्र विशेष है।

करनिक०(एह एकप्रकारका शुषिर यंत्र है।

कर्डमिटार०(एह स्वर संबंधी मात्रा मिलनेवाला मापक यंत्र विशेष है।

कर्डमेलोडियन०(वा
कर्डलोडियन० } बड़ा ब्यारेल अर्गन यंत्रका नाम है। एह आपसे आप बजे है।

कर्डिचाबी०(और
कार्डिमाली०(} एह दोनो शिकारी और मेषपालक का शृंगयंत्र है

बकरे भेड़ू पालने वालेका

कर्ल०(एह करनाटदेशका शृंगयंत्र है।

कर्लइंलिस०(एह इंगरेजी शृंगयंत्र है।

कर्लडिकासिया० एह शिकारी पुरुषका शृंगयंत्र है।

कर्लडिबासेटो०(एहएक शुषिर यंत्र है। बास क्लारिनेट यंत्रमें जितने स्वर सा

निर्गत होते हैं, सो इसमें भी उतने ही होते हैं।
अंत्येष्टिक्रियोपलक्षमें मोजार्ट इसी यंत्र
को व्यवहार करते थे (बासेट हर्न)

करनमूसा० (१६ एक शुषिर यंत्र है। यह यंत्र
केवल स्काटलेण्डमें व्यवहृत नहीं, इटाली
देशमें भी इसका व्यवहार देखा जाता है।

कर्णो० (१६ श्रृंग यंत्रका इटालीका बहुवचनां
त नाम है।

कर्णेउ० (१६ रोमीयोंका श्रृंगयंत्र है (कैरेलमें देखो

कर्णेट०(पोष्टहर्न अर्थात् पत्रवाहकका शृंगयंत्र है।

अश्वका कर्णेट ग्रा पिष्टन्स ०(१६ सामरिक शुषिर यंत्र विशेष है।

कर्णेट ग्रा बोकु इन्० (१६ एक प्रकारका शुषिर
यंत्र है।

कर्णेटिनो० (१६ शुषिर यंत्र विशेष है।

कर्णेटो० (१६ ट्रम्पेट नामक यंत्रकी न्याईं पित्त
लनिर्मित शुषिर यंत्र विशेष है, किन्तु तिसकी
अपेक्षा करके किंचित् छोटा है। सो पुनः
इसकी ध्वनिभी तिसकी अपेक्षा करके मृदु है।
इसीसे कौशल करके अर्धस्वर पर्यन्त प्रका
श कर सकते हैं।

कर्णेटोटर्णो० (१६ बकाका व्यवहार पतित टेंटे कर्णेट
यंत्रका अपर नाम है।

कर्णेत्सोमूटो० (१६ एक प्रकारका अतिप्राचीन
कोमल स्वर वाला कर्णेट यंत्र है।

कलन्डोन्० (१६ इटालीदेशके कृषकोंका
एक प्रकारका शुषिर यंत्र है।

रू.सा.गलोकोंका र

73

कलमस्० (
कलमस् पाश्टोरालिस्० (
कलमोत्तस्० (एक प्रकार का बहुत प्राचीन शुषिर
यंत्र है और मेष पाल लोक अर्थात भेड़ बकरे
पालने वाले लोक इसी यंत्र का व्यवहार करते हैं।
कलिनेट० (यह यंत्र का व्यवहार फ्लूट मिलेट शब्द
में देखना चाहिये।
कल्लिनिकस्० (यह एक देश का प्राचीन यंत्र है।
काउहर्न० (यह एक गो शृंगाकार शुषिर यंत्र है
हुसियों के देश के निकट अति प्रसिद्ध है।
इसका अवयव कर्नेट यंत्र की न्याई और
इसकी लंबाई एक फुट से लेकर चार फुट
पर्यन्त होती है। काष्ठ किम्वा वृक्ष की
त्वचा से यह निर्माण किया जाता है
कानून० (एक एक भारत वर्ष का सुप्रसिद्ध
तत यंत्र है।
कान्तेलि० (यह एक सर्व देश का हार्प यंत्र है।
फिन्लण्ड देश में भी इसी नाम से प्रसिद्ध
है। कहते हैं कि, यह फिन्लण्ड देश के रहने
वाले लोकों का ओयेनेन् मोइनेन् नामक ने
देवता को अतिशय करके प्यारा यंत्र है।
तिसने ग्रीस देश के आर्फियस् देव की न्याँई सोलेक
इसकी वादन क्रिया द्वारा तद्रूप चमत्कारि
ता के साध्य संपादन करते हैं। ये मनुष्यों का
क्या इतर जन्तुओं का यह सबका ही मन हरण
कर सकते हैं। ऊनविंश अर्थात उन्नीस

शताब्दीके आरंभमेंभी एस्थोनियां देशमें
रहिनेवाले लोक एहि यंत्र व्यवहार करतेथे।
उस देशके परिब्राजक अर्थात् संन्यासी लोक
इसी यंत्रको हाथमें लेकर गान करिके घूमते रहितेहैं"
उसी देशका जो प्रसिद्ध परिब्राजक १८१२
ख्रिस्ताब्दमें मृत भयाथा, सो तिनोके सङ्-
संग उक्त यंत्रका व्यवहार भी लुप्त होगयाहै।
किन्तु इससें भिन्न फिन्लद देशका उक्त नामसें
और एक जातीका यंत्र है। उस यंत्रमें काष्ठनिर्मित
बाक्सके मध्यमे पांच ही तार संबद्ध रहितेहैं।
इसी तरह यंत्र फिन्लण्ड देशमें इस काल भी
प्रचलित है। डाक्टर क्लार्क साहेबने लापलं
ड वासी उग्री वंशधरके [illegible] हाथमें इसी तरह
का यंत्र देखयाथा। सो हर्वकिय यंत्रके साथ
इस तरहके यंत्रका कोई सादृश्य नही, सो अर्थात्
देखनेसें डलसिमर यंत्रकी न्याई है।

काबा-जरना०(एह तुरुष्क देशका सामरिक
वहेत सुषिर यंत्र विशेषहै।

काबारो०(एह एक चर्म और डक्काहै। एह मिसर देश
और आबिसिनिया देशमें व्यवहृत और
हाथकरके बजताहै।

कारनिक्स०(एह प्राचीन ग्रीसदेशियोंका
एक प्रकारका सुषिर यंत्र है। इसकी ध्वनि
उच्च और तीब्र होतीहै। हर्वमें प्रान्स देशमें
भी एहि यंत्र व्यवहृत होताथा।

दुइके समेकाबड़ा एक छेद [illegible] यंत्र [illegible]

७४

कारिलन्स० (घंटास्तवक। एह इउरोपदेश का घन यंत्र विशेष है। हमारे हिंदुस्थान देशमेभी इसीतरहका यंत्र ब्राह्मण और बौद्ध लोकोंके धर्ममंदिरमे व्यवहृत होता है।

कारनाइ० (एह एक पारस्य देशका रङ्गयंत्र है। यिहूदी देशका केरेण, ग्रीक देशका केराम, रोम देशका कार्णु, फरासीस देशका कर, जर्मण और इंगरेज देशका हर्ण, ओयेल्स वासी देशका कर्ण, हंगेरी वासियों का कुर्त और हिन्दु लोकका रङ्ग जिसतरह है उसीतरह यंत्र है।

ग्रीक

कालासिओन० (एह एक इतालीदेशका ततयंत्र है। एह देखनेमे हमारे देशके तानपूरायंत्रकी न्याई है, किन्तु इसमे पर्दाकी संख्या बेशी है। इसयंत्रमे दोई तन्तुकी तार जोडी होई रहती है। और एह ताडनी द्वारा बजाई जाती है। असीरिया और मिसर देशमेभी अविकल इसीतरहका यंत्र था। इसकारणसे इतालीदेशके कृषिजीवी लोक एहि व्यवहार करते हैं।

वंदकी

धुनकी

यथार्थ

कालिचन्० (एह तम्बूर यंत्रकी न्याई एक प्राचीनतम ततयंत्र है। इसमे पांचही तन्तु योजित रहती है

कालिसनसिनि० (एह एक दीर्घग्रीवा विशिष्ट तत यंत्र विशेष है

काष्ठानेट० (एह काष्ठनिर्मित मांगल्यंत्र विशेष है। सो पूर्वतन किसी किसी जाति द्वारा एह व्यवहृत होता था। वर्तमान समयमेभी रुष्टधर्मावलंबी लोकोंके धर्ममंदिरमे इसीका प्रचलन देखा जाता है।

कासं०। यह एक प्रकार का आनद्ध यन्त्र है। यह आफ्रिका के अन्तर्गत आङ्गोला देशियों का एक मध्य वाद्य यन्त्र है।

कासा०। यह एक वृहत ढक्का है। इसका और एक नाम ग्रालटाम्बुरो है।

कासा ग्राण्डो०। यह भी एक वृहत ढक्का है।

काम्पेटो०। यह वङ्ग देशियों का एक प्रकार का वाद्य यन्त्र है।

किङ्०। यह एक चीन देश का संगीत यन्त्र है। सो भिन्न भिन्न काल को और आकार के अनेक प्रस्तर गुटिका द्वारा यह निर्मित होता है। सोई सब पत्थरों के पर स्पर आघात से अथवा लाठी के आघात से अर्थात् चोट लगाउने से इसके बजाउने की क्रिया संपादन होता है।

किट्०। यह एक प्रकार का अति क्षुद्र व्यावलनवेला ततयन्त्र है। जो, एकदा निलि साहिब के मत में यह इतना छोटा है कि इसको अंग रक्षक संलग्न मुद्राधार में अर्थात् जामे की बगली में रखाकर के आपनी इच्छा क्रम से यहां तहां लेजाते हैं, किन्तु इस विषय में हामिल्टन साहेब का स्वतंत्र मत है। सो कहिते हैं कि, यह एक छोटा वाऊलीन और नृत्य के पढ़ाने वाले लोकों द्वारा व्यवहृत है।

कितारा०। यह एक ग्रीस देश का ततयन्त्र विशेष है। कितारा, जर्मनि देश के पर्वत के रहिने वाले लोक "जितार" पारस्य, हिन्दु और आसिया के लोक और रुश देश के लोक "सितार" वा "त्रितंत्री" तिउबी देश के "किसार" यह सब एक ही यंत्र है। खिताराभी इसीको कहिते हैं इसी यंत्र के विशेष नाम हैं

किन्नर० (यह एक चीन देशका प्रसिद्ध तत यंत्र है। नील, लाल, हरित, श्वेत और कृष्ण इन पांच वर्णकी पांच ही कमिके सम समेत इनका पच्चीस ही सुर है। मताला कन्फिउ सम इत्यादि चीन देशके पूर्वतन ऋषि गण एहि यंत्र व्यवहार करते थे; इसी निमित्त चीन देशमें इस तरहके यंत्रका अच्छी तरह बडा आदर था। इसकी सब तन्त्र पट्टकी हैं। पहिले

किन्नर० (यह जिहूदियोंका एक प्राचीन तत यंत्र है। सो यह बहुत छोटा है, सहज लें वहनीय और बत्तीस तंत्र इसमें योजित होतियां हैं। लेजाने योग्य १०

यह बाइबेलोक्त दायद राजाको बहुत प्यारा यंत्र है। सो प्रति रात्रिमें इसको आपनी शय्याके समीप ही रखते थे। यह यंत्र देखनेमें अनेक ही इंगरेजी लायार यंत्रकी न्याई है। सो ओल्ड टेस्टामेण्टमें लिखित है जो, जुवाल नामक इसके बनाने वाला है। ग्रीक देशियोंको "कितारा" और निउबीय देशियोंके "किसार" यंत्रके साथ इसका अनेक तरहका सादृश्य है। कितारा इसी तरह कि जो दायुद राजा साल नामक राजाके सन्मुखमें एहि यंत्र बजाते थे। कालमेएटके मतमें यह यंत्र अधिक अर्थात यथार्थ प्राचीन देशियोंके लायर यंत्रके सदृश है। किन्तु और और संगीतशास्त्रके जानने वाले लोक इसीको भिन्न प्रकारका कहते हैं। सो जेकर ओहलोक उसीके मध्यमें कोइक इसीमें तीस ३० और कोईक दो सौ २०० तन्त्रें योजनाके विषयमें मतभेदका प्रकाश करते हैं।

भाति ९ दायूद देशके १२ कताबमें (तरतरहका

किन्तु सभमैं ही एक वाक्यमे इसकों एहि रूप त्रिकोणाकार वाला कहिते हैं। इतिहास लेखक जोजेफस् नामक कहितेहैं एही यंत्र दश तंत्र संयुक्त और अंगुलिव द्वारा बजायाजाताहे। मुजराव

सो ओल्ड टेष्टामेण्टके अन्तर्गत जे सिस् नामक पुस्तकके चतुर्विंश अध्यायके एक विंश २१ श्लोकमे इस्का विषय उल्लिखितहैं।

किन्नरी वीणा० (एह हिन्दु लोकोंका एक ततयंत्रहे।

कियस्० (एह तुरुष्क देशियोंका सामरिक प्रकारयंत्र आनद्ध यंत्र विशेषहे। इस्का खोल तामेका वलयका होया होताहे।

किसार० (एह निउविया देशका एक वीणाजाती का प्रसिद्ध ततयंत्रहे। इंगरेज लोक इसको निउवी देशकी वीणा कहितेहैं। एह चर्म और काष्ठ निर्मित होतीहे। एकस्थान उदराकार शून्यगर्भ (उदरके सदृश) काष्ठखंड मेषवया बकरेके चर्मकर्के आच्छादन कर, उसी चर्माच्छादनीमे तीनही और कहीक ही तिहू से अधिक समान्तराल स्वरोज मन (स्व हनिकलेनेका) छिद्रकरिके एह यंत्र निर्माण करतेहैं। (बराबर छे दसे) इसमै ऊठ की आंतसे बनाइहुइ पांच तंदीकी तार संयुक्त होतीहे। सो उक्त काष्ठ खंडके साथ तिहूका कोई संलग्न नहिं होता सो कहितेहैं कि यंत्रके एकप्रान्तमे आबद्ध एक काष्ठके खंडसें सोसभ बांधी होतीहैं। दहिने हाथमे कठिन चर्म अथवा शृंगका बनाया होया अंगुलित्रका मजराव अंगुलिमे लगायकर इसको बजाउते हैं। इस यंत्रके काष्ठ अवयवका गठन चतुष्को ण और तिसमे ५ अथवा तिहू सें अधिक तार आबद्ध होतीहे। आविसिनिया देशमै बांधीहुई

इसका अवा है, याव अथवा हार्मिल कर्डान
का किया होया मिसर देशसे इथियोपिया
देशमें यह यंत्र समानीत हुय। और तिसी देशसे आलयको होयाहै
निउविया देशमें प्रचालित भया है। आधुनि
क मिसर देशके लोक इस तरहके यंत्रको
"गीतारा वार वारिया" कहिते हैं। किथारा,
सितारा प्रभृति यंत्रभी प्राय इसीकी न्याई हैं।

कीटक०। (यह यावा द्वीपका एक आनद्ध यन्त्र है। (प्रकारका
सो एक जगा काष्ठके आधारमें स्थापन करके
इस यंत्रको बजाउते हैं।

=युद्धका
कीडुब्युगल०। (यह एक प्रकारका सामरिक सुषिर
यंत्र है।

कुइएट०। (यह एक मध्यस्वरी वाइलीन यंत्र है।

कुइएट फयागट०। (यह एक डबल बासून वा
कएट्रा फयागटो नामक यंत्र है। अधवर्त
मान समयमें इसका व्यवहार देखा नहीं प्रायः
जाता। इसीको साधारण बासून नामक यंत्रकी
अपेक्षाकरके एकसप्तक निम्नमें बांधते हैं। नीचे
फयागटनोवा छोटा बासूनको कहीं कहीं
इसी नामसे अभिहित किया जाता है। कथनकिया

कुइएटबास०। (यह एक ततयंत्र विशेष है।

कुइएटाल्ल०। (यह एक अप्रचलित इताली देशका
ततयंत्र विशेष है। यह देखनेमें ल्युट यंत्रकी
न्याई है।

कुना०। (यह एक प्रकारका भारतवर्षका सुषिर
यंत्र है।

कुयेटज वा अगद०। (यह मिसर और आबिसिनि
या देशका वंशी जातीका सुषिर यंत्र विशेष है।

कुर्त०। (यह एक हंगेरी देशका शृंग यंत्र है। देखनेमें
इंगरेजी हर्ल और हिन्दुस्तानके शृंग यंत्रकी न्याई है।

परिशिष्ट।

कुसिम० (एह एक तुरुष्क देशका ततयंत्र विशेष है। एक गर्भ काष्ठ निर्मित खोलमें चर्माच्छादन पूर्वक, तिसके ऊपर पाँचही तन्त्रें संलग्न करिके एह यंत्र निर्माण किया जाता है।

केटेलड्रुम० (एह एक प्रसिद्ध ढक्का जातीका आनद्ध यंत्र है। पित्तल किम्वा ताम्र निर्मित खोलके दोनो मुखोंमें बकरा इत्यादियोंके चर्म्मसें अच्छी तरह आच्छादन करिके एह यंत्र निर्माण कर्त्ते हैं। १८३६ खृष्टाब्दमें जर्म्मन देशके अन्तर्गत फ्राङ्क फोर्ट निवासी इयेंजार नामक एक जन तिस ने आपने हाथसें निर्माण किया केटेलड्रुम वादन विषयमें नवीन विप्लव लीमें दखायागया था। इसी निमित्त अनेक प्रसिद्ध संगीतके जाननेवालेलोक इसी को विशेषकर्के प्रशंसा कर्त्ते थे। सो पहिले इउरोप देशके एकतान वाद्यमें इसीतरह दोई मात्र यंत्र व्यवहृत हुएथे - इसकालमैं भी उक्त ऐकतानमें केटेलड्रुमका व्यवहार देखा जाताहै। एह यंत्र बजाउनेके समयमें निम्न लिखित कितनेक प्रकारका आघात कर्त्ते हैं। यथा - सरलाघात, द्विगुण घात (मृदङ्ग घात) कर्त्ते हैं भग्नाघात इत्यादि कर्त्ते हैं।

केनेट० (एह मिसर देशका और आविसिनिया देशका एक प्रकारका शुषिरयंत्र है। इसीका और एक नाम मिलिकेट भी है।

केम्कैम० (एह एक मिसर देशका संगीत संबंधी कालके मिलने वाला यंत्र है।

केमान० (एह एक तुरुष्क देशका तीन तन्त्र वाला ततयंत्र है।

केमानगे ० (आरवीय और पारस्य देशका एक तत
यंत्र विशेष है। एहि चीन देशका "उरहीन"
जापान देशका "कोकिउ" और हिन्दु देशका
"सारङ्ग" यंत्रके सदृश होता है।

केमानगे आगुज ० (एह अरब देशके पाससे व्यवहृत
एक ततयंत्र है। मिष्टार फिटिस कहते हैं
जो, हिन्दु लोकोंका अमृत यंत्र है एहि यंत्र
इसीका मूल है। (अमृतके मानगे एहि है।

केमानकेफार्क ० (एह एक अरब देशका ततयंत्र है।

केमानगे रोमी ० (एह एक मिसर देशका प्राचीन
यंत्र है। किन्तु ग्रीस देशमें भी उक्त यंत्र इसी
नामसे प्रचलित था। एहि यंत्र पहिले
मिसर देशका था, पीछे ग्रीस देशमें इसी
को ले आये।

प्रचलित

केमानगे सोघाइर ० (एह एक ततयंत्र विशेष है।

केरेल ० (एह यिहुदियोंका एक शृंग यंत्र है।
सो उक्त देशीयोंके तीन ही शृंगयंत्र हैं,
"केरेल" "शोफार", "काटजोजेरा"।
तिन्हके मध्यमें पहिले दोनो वृष वा मेष
शृंगनिर्मित हैं और अधिक बडे टेढे हैं। और शे
षोक्त सरल और डेढ हाथ लंबा होता है
केरेल यंत्र कोई कोई रौप्य इत्यादि धातु
से भी निर्मित होता है। एह यंत्र जेरको
ध्वंसके समय व्यवहृत होया था, एह वृत्तांत
बाइबेलके अंतर्गत जसुया ग्रंथके ६ठे अ
ध्यायमें लिखित है। इसी निमित्त संगीतशा
स्त्रके जानने वाले इसीको अतिप्राचीन कालसे
प्रचलित बोलकर के निर्देश करते हैं।

केलटिक० (एह एक शृंग यंत्र है। कारनिड्कल भी एहि है

केरास्० (एह एक स्रंग यंत्र ग्रीस देशका है इसीको कालेभी कहते हैं।

कोकिउ० (एह एक जापान देशका तत यंत्र है। सो अंगुलिमें मजराब पहिरके इसको बजाउते हैं एह देखलेमें कैतकटा "डुल्सिमार" और चीनदेशके "किन्" यंत्रकी न्याई होता है।

क्याट्० (एह ब्रह्म देशका एक ततयंत्र विशेष है। एह यंत्र विडाल (बिल्ली) की न्याई आकार विशिष्ट है। संकोचित पद होकर जैसे विडाल किसी किसी समय बैठा होता है, एह यंत्रभी उसी तरासे गठित है और विडालकी पृष्ठ जैसे धनुषके आकारसे सम्मुखके पासे हटाउता है इसमेंभी उसी तरा एक लांगूल है। एह लांगूलके ऊर्द्ध्व पृष्ठके ऊपर द्वादश १२ तार संलग्न होती हैं और रस्सी तरा वाँधते हैं क्या बजाई जाती है।

क्याराडेल० (एह फिन्लाएडमें प्रचलित एक तत यंत्र है।

क्याम्पानेटा० (एह एक प्रस्थ क्षुद्र घंटा। प्रकृत सप्त सुरमें बद्ध होता है और कुंजी द्वारा वादित होता है।

ककच० (एह प्राचीन हिन्दु लोकोंका एक युद्ध यंत्र है। महाभारतके अनेक स्थलमें इसका उल्लेख देखा जाता है। किन्तु एह किस जाती का यंत्र है, सो इसका ढूंडना (खोजपाना) बडा दुष्तर है।

क्रमो० (एह यावा द्वीपके रहिले वाल्योंका एक प्रकार का आनद्ध यंत्र है।

क्रमोर्ल० (एह फयागट वा वासन यंत्रका प्राचीन नाम है।

क्रम्म हर्ण० (१९६ एक अतिपुरातन सुषिर यंत्र का नाम है।

क्रावू० (१६९ एक प्रकारका करताली यंत्रविशेष है।

क्रिमोना० (१९६ इतालीके अंतर्गत एकनगरका नाम है। उसमें बड़ा प्रसिद्ध वाकुलीन यंत्र निर्माणकरनेवालेका वासथा अर्थात् उहां रहताथा। तिसका निमित्त वाकुलीन यंत्र कहीं कहीं 'क्रिमोना' संज्ञामें अभिहित क्याकथित है। १६ क्रिमोना नगरमें ही विख्यात नाम वाले झाड्यास्टियस अमति और ष्टीनार रहि तीनजन्ने वाकुलीन यंत्रको निर्माण करनेवाले वास करते थे।

क्रिम्वल० (१९६ एक प्राचीन संगीतयंत्र है।

क्रिम्वलम्० (१९६ यिहूदियोंका वीणा यंत्रविशेषरूप।

क्रिसेएट० (१९६ एक तुरुष्क देशीयोंका सामरिक युद्धकायंत्र यंत्र है। इसमें छोटे छोटे घण्टिका योजित होती हैं।

क्रुञ्ज० (१९६ ओयेलस जातियोंका एकततयंत्र है

क्रुथ् वा क्रोथ्० (१९६ ओयेलस प्रदेशमें प्रचलित वाकुलीन यंत्रकी न्याईं एक प्रकारका ततयंत्र है, किन्तु इसीमें छ ही तन्त्री संयुक्त होतियां हैं। सो प्राचीन कालसे लेकर उक्त प्रदेशमें १९ व्यवहृत होकर वर्तमान है। इसका आकार चतुष्कोण और अंगुलि वा विशिष्ट धनुषद्वारा १९ यंत्र वजाई जाती है। ईंगलण्डमें इसकी आपाततः वाकुलीन जातिके

परिशिष्ट।

यंत्रका आदि वो सकते हैं।
कोटा॰ (एह क्रुप्यू यंत्रके नामका अपभ्रंशहै।
कोड्॰ (एह एक प्रकारका ततयंत्रहै।
कोतालम्॰ (एह एक प्रकारका घनयंत्रहै। सो साइविल देवताके पुरोहित लोकोंके हाथों मे एह यंत्र सर्वदाही देखी जाया। कोतालम्‌को कोतल वा कोतालि से यंत्रभी कहितेहैं।
कोताला॰ (एह ग्रीक देशियोंका घनयंत्र विशेषहै। इंगरेज लोक कास्टानेट और हिंदुस्तानके लोक करताल वा करताली यंत्रके साथ इस यंत्रका कितनाक कार्य्यगत सादृश्य है। कोताला यंत्र दोई खण्डसें विभक्त है। सो बजाउने वाला जन एक एक खंड एक एक हाथमे पकडकर, वाद्य अथवा नृत्य कालमे तालके देनेके निमित्त, एकके ऊपर और दूसरीका आघात करके वजाउते रहितेहैं। इस यंत्रका आकार वर्तुलकी न्याईं और कभी कभी मनुष्यके मस्तकके आकारसें भी गठित होताहै। एह शून्यगर्भ अर्थात् वीचसे पोला धातुका और दोनोंही खंडद्वारा ध्वनत होताहै। किन्तु हिन्दुस्थान देशके करताल यंत्र इसतरहका नहीं है। एह दोनो खंड गोलाकार धातव पत्रसें निर्मित होताहै। करताल वा करताली। मिसर देशके लोक इसतरहके यंत्रको भी कोताला कहितेहैं।
कोतालो॰ (एह कोतालम यंत्रकी न्याईं एक प्रकारका घनयंत्रहै। तुरुष्क, ग्रीस इत्यादि देशमे व्यवहृत है। इस यंत्रमें केवल एकस्वर निकल

निरूपण होती है २

सनेवाला शब्द उत्पन्न होता है, किन्तु इसके द्वा
रा गीत वा वाद्य की मात्रा निरूपित होती है। जे २
इस यंत्र की ध्वनि इतनी ऊंची है जो, चालीस
कड़ा एकट्ठे बजा लेवें भी तिन्हू के मध्य में से
इसका शब्द परिष्कार रूप से अर्थात् अच्छी त
रह से श्रुतिगोचर होता है।

कोलि० (यह एक प्राचीन इंग्रेजी सुषिर यंत्र है।

कालि० (यह एक श्याम देश का सुषिर यंत्र विशे
षहै। इसका आकार फ्लाजिओलेट की न्याई है।

कामिकर्ड० (यह पियानोफोर्टि यंत्र की न्याई है।

कामियार अर्गेनम्० (यह एक कुंजी युक्त यंत्र
विशेष है।

कामियार इलेक्ट्रिक० (यह डिला बोर्दि
नामक एक जर्न का किया होया आविष्का जेसुइट
र एकही कुंजी युक्त यंत्र है।

कामियार गाम्बि० (यह एक प्रकार का सङ्गीत
यंत्र है। १७०९ ख्रिष्टाब्द में हांस हेन नामक
का किया होया यह
आविष्कृत क्या मध्य
[illegible] भया है।

कामिसियेरियन्० (यह स्पिनेट यंत्र है।
इसी को कामियार हार्फि और
कामियार पियानो भी कहिते

कामिसिन० (यह एक प्रकार का फ्रा
न्सदेश का स्पिनेट यंत्र है और इसी को
हार्पसिकर्ड यंत्र भी कहिते हैं सो प्रतीत
होता है कि ख्रिष्ट संवत् १५ शताब्दी के
पहिले यह कामिसिन यंत्र की सृष्टि होई होवेगी।

परिशिष्ट।

यह जर्मनि देशके क्लामि सिम्बेल (इसकाल और तिसका व्यवहार नहीं है) और इटाली देशके सिम्बालो कहते हैं।

क्लाभिसिन् अकोष्टिक और क्लाभिसिन् हार्मनिक यह दोनो ततयंत्र हैं। तिनके मध्यमे पहला १७७१ और दूसरा १७७७ खृष्टाब्दमे आविष्कृत हुआथा।

क्लाभिसिन् ए पिउ डि बफल (यह एक प्रकारका ततयंत्र है। इसमे चार्मिक जिह्वाका निर्मित तांडनी सब होतीहैं। १७६८ खृष्टाब्दमे इस यंत्रका सृष्टि होईहै।

क्लाभिसिन् रयेल० (यह एक प्रकारका ततयंत्र है। इसमे छेही भिन्न भिन्न संगीत यंत्रके सुर अनुकूल होतेहैं। १७७४ खृष्टाब्दमे गट्लबु ओयाग नाका कियाथा निर्माण होयाहै।

क्लाभिसिम्बलम्० (यह एक प्राचीन ततयंत्र है इसमे समानतासे भावसे तीस तन्त्र संयोजित होतियांहैं। बराबरांघिडेकके

क्लाभिसिम्बालो० (यह हार्पसिकर्ड यंत्र है।

क्लाभिसिम्बेल० (यह एक ततयंत्र है। क्लाभिसिन प्राद प्रदेशी

क्लायरल (यह ढंगयंत्र है (क्लारिओ भी कहेहैं। इसीको क्लारिओ ... कहते हैं

क्लारिकर्ड वा मार्निकर्ड० (यह स्पिनेट यंत्रके आकारगत एक संगीत यंत्र है। स्पिनेट

क्लारिओन (,)

क्लारिओनेट (,)

क्लारिओनेटो (,)

क्लारिओनेटो० (

क्लारिनू० (

क्लारिनेट० (

क्लारिनेटो० (

क्लारिनो० (यह सब समुदाय यंत्र प्रायः काष्ठके सुषिर यंत्र हैं, केवल शब्द और गठनके (एकसे एक) तारतम्यानुसार इसे (अधिक) यह सब (स्वरूपर) परस्पर भिन्न भिन्न नाम हुए हैं। यही यंत्र स्ट्रंगजाति के सुषिर यंत्रों में पाये (के) गए हैं। क्लारिओन् अथवा क्लारिन् से लेकर उक्त जाति के साधारण यंत्रों की अपेक्षा करके अधिकतर तीव्र स्वर संभूत (अघट) होता है। क्लारिनेट में एकही होता है। यह तीन प्रकारका है;- सि अथवा षड्ज, ए अथवा धैवत और सिफ्लाट् अथवा कोमल निषाद। अर्थात् यह एक एक ही स्वर देने से ओह सब एक एक का स्वरग्राम आबद्ध होता है इनसे भिन्न और एक प्रकारका क्लारिओनेट होता है, तिसका नाम बास क्लारिओनेट (क्लारिनो और और एकही अर्गानिष्टपू (अर्थात् अर्गान यंत्रका वंपनी विशेष है। तिसकी लंबाई चार फुट और ओले कोस्यके द्वारा निर्मित किया जाता है।

क्लारो० (यह क्लारिनो यंत्रका संक्षिप्त नाम है।

क्लारटो० (यह क्लारिनेटो यंत्रका संक्षिप्त नाम है।

परिशिष्ट।

क्लेप्सिड्रा० (एह एक प्रकारका कालमा
पक यंत्र विशेष है। इसमे कितनेक परि
मित जल डालकर राखलेसे, और जल
क्रम क्रमसे पतित होकर पूर्वकालसे समय
का निरूपण कियाजाता है। कोई कोई क कथन
हितेहैं, कि मिसर देशमे रहिने वाले लोक
इसके आविष्कारक है, अर्थात् उन्होने प्र
घट कियाहै; और किन्नो किन्नोके मतमे
ग्रीकदेशियोंके द्वारा एह आविष्कृत है।
किन्तु हमलोकोंको बोध होता है कि, भारत
वर्षही इसकी सृष्टि भूमी है। इसमे कारण एह
है कि बहुतकालसे पहिलेसे हमारे पासके
देशके लोक इसीतरहका कालमापक "जल
घटिका" वा 'जल घडी' स्पष्ट होईथी। है
इससे भिन्न एक छिद्रवाले निर्दिष्ट पात्रमे
वालुका राखकरके भी इस देशमे कालविभा रेत।
जन क्रिया संपादित होती है। इसतरहका कोई हिंदर
कोई स्थानमे देखाजाता है। क्लेप्सिड्रा
के साथ हमारे लोकोंके पूर्वोक्त यंत्रका जेकर जो
ह आकारगत विभिन्नता अनुमित होतीहै, किन्तु मिस्र मानसे प्रतीत होता है
गुण संबंधसे एक प्रकारही हय।

क्लोचेट० (

क्लोपेन फ्रुजेन हर्म० (एह कुंजीके सहित युगलयंत्र
है। युगल शब्दमे इसका विशेष देखो

खङ्नङ० (एह एकप्रकारका श्याम देशका घनयंत्र
है। एक बांसके बनायहुए फ्रेममे कितनेक

यंत्रकोष ।

लगाय १

घंटिका संलग्न करिके एह यंत्र गठित होता
है और शाल-नाल नामक तिब्बत देशका
और एक यंत्रके साथ एह बजाईताहै ।
खंजनी वा खञ्जरी० एह एक भारतवर्षका जुदे छोटा४
आनद्ध यंत्र विशेष है । एह एक आधुनिक मिलाहोयाय
यंत्र है । एक अखंडित चक्राकार काष्ठ खंड
के एक मुखमें छागादिका चर्म आच्छादन
पूर्वक एह यंत्र निर्मित होताहै । सो देखनेमें
सुंदर होवेगा बोलतेहैं कि इस काष्ठके
आवरणका बहिर्भाग भिन्नभिन्न प्रकार
वर्णसें रंग देतेहैं । सोई खंजनी तीन चार
प्रकारकी होतीहै । सो बजाउनेके समयमें
सुंदर सुनने योग्य है । कहितेहैं किसीमें
झुनझुनाली, किसीमें घुंगरू गुच्छ संयोजित
न होताहै । सो सामान्य भिक्षुक लोक ही एह
यंत्र बजायकर गान करतेहैं । खंजनी के
बजाउनेमें वंगदेशके एक एक जन व्यक्तिका
इसतरहका बुद्धिमान लोक हैं जोउन्हू के बजा
उनेकी चतुराई देखनेसें विशेष प्रशंसा क
रतेहैं । सो नाना प्रकारकी अनेक खंजरी हा
थोंमें पाउंमें ग्रीवामें और मस्तकमें धारन शिर
करिके विविध तालसें युगपत क्या इकट्ठे ही
बजाय सकतेहैं, और कभी अंगुलि के आघा
तसें, कहीं परस्पर का आपसमें खंजनी के आ
घातसें भिन्न प्रकारका बोल बजाउते रहितेहैं ।
और "[illegible] के गोपीनाथ" भेड़की मन्नीको
छोटाकोना" इत्यादि कितनेक चुनेहुए पद
छोटे छोटे

मुखसे उच्चारण कारिके उसी खंजरीसे
परिष्कार रूपसे क्या भली प्रकार उ
च्चारण नहि होता परन्तु अपने कोश मे
निर्गत करणेसे सक्षम क्या कर सके हैं।
इसी तरह खंजरी बजाउणे वाले लोकों का
खंजरी ग्राम सर्वके चर्मसे ही आच्छा
दित देखी जाती है।

खड़ताल वा खड़ताली० (एह भारतवर्षमे
प्रचालित घनयंत्र विशेष है।

खमक० (एह हिंदके पासेका एक आधुनि
क आनद्ध यंत्र है। इसकी ग्राम्य यंत्रकी
श्रेणीमे गणना है।

खरताली० (एह हिंदके पासेका घनयंत्र
विशेष है। एह सभ्य यंत्रके मध्य मे ग
णना करणे योग्य है। लोह इस्पात वा
कांस्य द्वारा एह यंत्र निर्मित होता है।
सो खरताली बजाउणे वाले लोक दोनो हाथों
मे दोनो यंत्रोंको जोडा लेकर इसको बजाउ (दोनो
ते हैं। तिसके मध्यमे हाथोंकी शिरा संचा नाडी
लनसे इससे जो एक प्रकारका अनुरणन
उत्पन्न होता है, सो अतिशय करके मधुर और
बडी चतुराईसे होता है। एह यंत्र अनुगत सिद्ध है
इसी निमित्त ऐकतानादि बजाउणे के समयमे व्यव
हृत होता है। इसका बजाउणा सुणनेसे अनेक इउ
रोप देशके लोक अच्छी तरह आनंदित होते दे
खे जाते हैं।

खिताराः० (एह प्राचीन ग्रीक देशका एक ततयंत्र
है उसीको किताराभी कहते हैं।

खोरदक० (एह भारतवर्षमे प्रचलित आनद्ध
यंत्र विशेष है।

खोल ०। (एह हिन्दुस्थानका एक प्रकारका आनद्ध यंत्र विशेष है। इसका आकार प्राय मृदङ्गकी न्यांई है। किन्तु तिसकी न्यांई इसका खोल काष्ठका नहीं होता और मृत्तिकाका होता है। और इसे मृदंगकी न्यांई स्वर बंधनका उपयोगी गुरुम भी नहीं होता। एह यंत्र मांगल्य यंत्रसमूहके मध्यमे परिगणित है। सो विशेषकर्कै बंगदेशमे वैष्णव संप्रदायके मध्यमें ही इस यंत्रका बडा आदर है।

ग

गङ् ०। (एह भारतवर्षका प्रसिद्ध घन यंत्र विशेष है। इसका आघात लगने बहुत विलंब रहता है और शब्द बहुत दूर सुनी जाता है। (= धी धे से फेर ध्वनि होती) सामान्य लोक इसको घडी कहिते हैं और एही इउरोपदेशमे गङ् बोलकर परिचित है। कारल एञ्जेल साहेब कहिते थे कि प्राचीन मिसर देशके पास्से भी इसी तरहका यंत्र था। और हाथीके दांतके अथवा काष्ठके मुद्गर द्वारा वादित होता है।

गङ् गङ् (एह आफ्रिकाकदेशका घन यंत्र विशेष है। एह लोह निर्मित और लोहके दंड द्वारा वादित होता है। हमारे देशकी घडीके साथ इसका अनेक सादृश्य है। गङ् डॉंजरकोभी कहिते हैं।

गजला ०। (एह घोडेके पृष्ठके एक तन्तु विशेष (ली … की तंतुका) तत यंत्र विशेष है।

गान्धर्व वा गान्धर्व कायू ०। (एह एक प्रकारका स्वतःसिद्ध आनद्ध यंत्र है। मालाइ देशमे और भारतवर्षके द्वीपपुञ्जमे इस यंत्रका विशेष प्रचलन देखते हैं। मालवे

परिशिष्ट।

गान्वेंगस ०। एह यंत्र देखने में अनेक टो
इउरोप देश के हारमोणिया यंत्र की नाई
है। इसमें धातव सारणा वा सारिका आव
द्ध होती थी है। इसमें पांच स्वर में ग्राम
बद्ध होता है।

धातु कि
ये कु. जियें

गाम्बा ०। एह एक प्राचीन तत यंत्र है। इस द
एणमें इसके (=बदले) परि वर्त्तने भायोलिन से लो
कव्यवहृत होता है। सो बजाउने वाले के दोनो
भुजों के मध्य में धरिया होया वादित होता है
बोलते हैं कि इसकी इसी तरफ से नाम है। इसी
यंत्र का और एक नाम भायोलडा गाम्बा है।

कंधका जा
ता है र

२: पांव के
बजाउते हैं।

गालोवेट ०। एह एक त्रिवंधनि विशिष्ट शुषि
र यंत्र है। इस समय में एह प्रचलित नहीं है,
किन्तु कभी कभी फ्रांस देश में लक्षित
होता है।

गिंग्रास ०। एह एक प्रकार का शुषिर यंत्र है।
एह कोरिया और साइप्रास द्वीप में प्रच
लित है। त्रिसतिस देश के आदोनिस नामक
देवता के उद्देश में करुण रसात्मक संगीत
गाउने के निमित्त व्यवहृत होता है।

करुण रस
इस पर रस

गिंग्लारस ०। एह एक मिसर देश का शुषि
र यंत्र है।

गिगा ०। एह एक अप्रचलित तत यंत्र है।

गिट्टिथ् ०। एह यिहूदियों का एक प्रकार का
तत यंत्र है। किन्हे है कि बाइबेल ८ तम गी
तावली के साथ उक्त यंत्र बजता होता था।
किन्तु कोई कोई कहिते हैं कि उक्त नाम से
यिहूदी लोक कोई एक वाद्य का अभिनय को
बुझावे है।

83

गितार वा गितारा ०(यह एक प्रकारका
तत यंत्र है। पूर्वकालमें इसीको सितार पहिले समयमें
कहिते थे। यह यंत्र षड्विंशतिली कृत
अर्थात् चारों तारों करके भलीप्रकारसे
बांधा होता है।

गिनथ्रू ०(यह प्राचीन यिहूदियोंके पासके सभ यंत्रोंका साधारण नाम है।

गुइम्बार्डि ०(यह यिहूदियोंका वीणा यंत्र है।

गुडक ०(यह रूस देशका एक वाकुलीन
जातिका यंत्र है, किन्तु श्रेष्ठ नहीं है।
इसमें तीन ही तन्तु योजित होते थे है।

गुसलि ०(यह रूसदेशवासियोंका अतिप्रा
चीनजातिका तत यंत्र विशेष है।
इसका आकार प्रायः विकलक्या केवल
फिन्लैंड देशवासियोंके कान्तेलि
यंत्रकी न्याईं है। सो कान्तेलि यंत्रका
इस कालमें इसकी उन्नति बहुत साधि
त होई है — सो अभी यासमें हिं दो
तीन सप्तक वादित हो सकती है (बजाउले भी जाती है)
किन्तु पहिले कान्तेलिकी न्याईं इस
में पांच ही मात्र तार जोडी होई होतीथी।

गुसि ०(यह रूस देशीयोंका सर्प जातिका
यंत्र विशेष है। गुसलि भी कहा है।

गोमुख ०(यह हिंद देशका एक अतिप्रा
चीन युद्ध यंत्र है। एक कुटिलाकार
वाद्य भाण्ड विशेष है। मूल रामायण और (बाजेका भांड)
महाभारतके अनेक स्थलमें इसका
उल्लेख है।

गोराः ०(यह हटेण्टट जातियोंका एक
प्रकारका तत यंत्र है। इसको आका

एक प्रकार देखनेसे प्राचीन कालसे प्र
चलित बोध होताहै।

गोश्रृङ्ग ० (यह हिन्दुदेशका एक अति प्राची
न [illegible] सुषिर यंत्रहै। गोश्रृङ्गसे निर्मित्त
होनेके इसकी इसीतरहकी संज्ञाहै। महा
देवजी पिनाकादि यंत्रकी न्याई इसको भी
प्रिय मानतेथे। महाभारतादि प्रसिद्ध
प्राचीन ग्रंथमे इसका अनेक उल्लेखहै।
पहिले समर संघटनकालमे यहि यंत्र व्यव (युद्धके समे
हत होताथा। इससमयमे भारतवर्षमो इस
का प्रचलन देखा जाताहै।

गोदक ० (यह रूसदेशका तत यंत्रविशेषहै।
गुडक भी इसीको कहितेहैं। इसका विशे

ग्रस् टाम्बोर ० (यह एक प्रकार वहत जयढक्का है।

ग्रासि कैसि ० (यह बड़ी ढक्काका अन्यतर नामहै।
बड़ी

ग्राण्कासा ० (यह वहत जयढक्का विशेषहै।

ग्रिलट ० (यह फ्रान्सदेशका एक प्रकारका घनयंत्र फ्रा
और देखनेमे हमलोकोके क्षुद्र घंटिकाकी
न्याईंहै (क्षुद्रघंटा) भीउसीको कहितेहैं।
जर्मनिदेशमे इसको शेलेन कहितेहैं।
सो अश्वकी संज्ञाके साथ निकट वर्तीदुर्घटना +
निवारणके निमित्त यह व्यवहृत होताहै।
उक्तदेशमे इसी तरह यंत्र हमारे देशमे गौके
गलमे और पश्चिम देशमे पशुकी गाडीके अश्व
के सज्जा संग व्यवहृत होताहै। यह यंत्र जापानदेश
के सिउ सिउ नामक यंत्रकी न्याईं मेक्सिको और
मिसर देशवासियोके धर्म मंदिरमे यह व्यवहृ
त होताहै।

व्यवहृत होताहै प्रयोजनमे

ग्रेभ् सिम्बलम्॰ (यह हार्पसिकर्ड यंत्रका प्राचीन नामहै।

ग्लास् कर्ड (यह एक कुंजीयुक्त वाद्य यंत्र है। इसमें तन्तुके वदले काचकी सारिका संयुक्त होताहै १७८५ खृष्टाब्दमें जर्मन देश का एकजन तिसने यह यंत्र निर्माण किया था सोओर्‌िप्रघट होयाहै।

घ

घडि वा घडी॰ (यह कांस्यादि धातु निर्मित चक्राकार यंत्र विशेष है। यह क्षुद्र वृहत् इत्यादि नाना प्रकारका होताहै। गङ्-ग) उमर पश्चिम देशमें इसी यंत्रको थाला कहितेहैं। (थाला) थाला शब्दमें देखो। छोटा और बडा अनेक तरहका

घण्टा॰ (यह भारतखंडका घन यंत्र विशेष है। सो यह यंत्र कांस्य और पित्तल निर्मित होताहै। यह भारतवर्षमें अति प्राचीन कालसे व्यवहृत होकर अबपर्य्यंत वर्त्तमान है। सो घंटा यंत्र दोप्रकारका है — क्षुद्र घंटा वा क्षुद्र करघंटा और वृहत् घंटा वा जय घंटा। सो देवपूजा प्रभृति मांगल्य कार्य्यमें हिन्दुगण करघंटा व्यवहार कर्तेहैं। और भूपाल गणके पुरद्वार और तोरणमें जय घंटा अवलंबित रहिताहै। पहिलें युद्धके समयमें भारतवर्षके वीर राजगण हाथीके उदरके नीचें जय घंटा बांधकर सामरिक वाद्यके आलूसगेन्सन करतेथे। धर्म्मयाजक रूपे वालेलोक देवमंदिरमें भी जयघंटा लंबित कर्के राखतेहैं। इससे भिन्न और कार्य्यमें भी जयघंटे हिंदुलोक शत्रुमें त्रास कराया जाताहै

पहिले सबे

व्यवहृत होताहै। जयघंटा)। भारतवर्षके पूर्वतन
ऋषिगण सामान्यलोक घंटाव्यवहारकी वि
धिनिर्देश करिके गयेहैं। सो घंटा बाजेके
बिना सो सभलोक पूजादि विधानमे आर्य्य
जातिके मांगल्य कार्य्यमे कोई भी पूर्णविध
वसें संपादित नहिं होता। यद देवपूजा
दिके समयमे और बाजे नहिं होवें तद घंटा शब्द
निनाद अवश्य ही करने चाहियें। इसी निमि
त्त स्मृतिके एक स्थानमे स्पष्टाक्षरमें लिखि
तहै जो "सर्ववाद्यमयी घंटा वाद्याभावे नि
योजयेत्"। इस श्लोकार्द्धसें एहि प्रतीति होती
हय जो हिन्दुमात्रके हि गृहमे घंटा राखना यंत्र
और बजाउना हि योग्यहै। पद्मपुराण स्कंद
पुराण इत्यादि आर्य्यजातिके प्राचीन धर्म्म
शास्त्र समूहमे भी घंटामाहात्म्य वर्णन करके विस्तार
लिखितहै। स्कंदपुराणमे श्रीब्रह्मनारद
संवादमे लिखा हुआ है जो,

"स्नानार्चनक्रियाकाले घंटानादं करोति यः।
पुरतो वासुदेवस्य तस्य पुण्यफलं शृणु॥
वर्षकोटिसहस्राणि वर्षकोटिशतानि च।
रमते देवलोकेतु अप्सरोगणसेवितः॥
सर्ववाद्यमयी घंटा केशवस्य सदाप्रिया।
वादनाल्लभते पुण्यं यज्ञकोटिसमुद्भवं॥
वादित्रनिनदैस्तूर्य्यगीतमङ्गलनिःस्वनैः।
यः स्नापयति गोविन्दं जीवन्मुक्तो भवेद्द्विजः॥
वादित्राणामभावेतु पूजाकाले हि सर्वदा।
घंटाशब्दो नरैः कार्य्यः सर्ववाद्यमयी यतः॥
सर्ववाद्यमयी घंटा देवदेवस्य वल्लभा।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन घंटानादन्तु कारयेत्॥

मच्चन्तरस्य हस्ताग्रे मच्चन्तरशतानि च।
घंटानादेन देवेशः प्रीतो भवति सर्वशः॥

इससे क्या बोध होता है कि प्राचीन बहुदर्शी
पंडितगण एकही यंत्रसंबंधसे इस तरहका
वाणीका विन्यास क्या विलक्षणतासे किया
था सो एक कभी नहिं किया जाता। अवश्य
इसके मनोस्थलमें एक बड़ा गूढ अभिप्रा मध्यमें
य रखा हुआ हैं। हम लोकोंको एह बोध हो वेगा
इत्यादि ताहै कि, सर्प प्रभृति [illegible] खल जन्तु सम
हकी भीति जो होती है उन्हूं जीवोंके दूर हटा
उनेके निमित्तही वारंवार घंटेकी ध्वनिकों
करतेहै इसतरहसे इस विषयका उल्लेख है।
घंटायंत्रका शब्द जैसे उच्च और तीव्र होताहै
तिससें ऐसी विवेचना आयो कि कहा किसे
करकें बोध नहीं होता। और इस घंटापर गरुड
है जिसकी मार्गी बालकको घंटा है तिसका वि
षयभी है अर्थात् जैसे गरुडको देखके सर्प
भागजाते हैं तैसें भूतादि विघ्नकारी भूता
दिकभी घंटाशब्दसे चले जातेहैं एह उल्लेख शा
स्त्रादिसें लक्षित होताहै, तिस तरह इस यंत्र
के बजाउनेका इस प्रकार अर्थ बोध अकृतको
लेकर जानना असंगत नहीं है अर्थात् शास्त्र
में प्रतिपादित ही है। मांगल्य कार्यमें शंख
कों सन्तुष्ट करिये, घडी, झांजर इत्यादि यंत्रका
भी आवृत्तरहै इसी तरहके अभिप्रायमें प्रचलि
त हुए हैं। सो हमारे देशमें भी कुंडवाले छोटे
घरकी छोटे घंटे गौके और इतरपशु जोहै उन्हूके
कंठमें भी गृहस्थी लोक बांध देते हैं।